T.T.D. Religious Publications Series No. 1076
Price :

OUR PUBLICATIONS

SRI TIRUMALESH KI SANNIDHI

(Hindi) - Dr. Puttaparthi Nagapadmini

SRI PADMAVATI SANNIDHI

(Hindi) - Prof.I.N. Chandrasekar Reddy

SRI VENKATACHALA MAHATHMYAM (Hindi) - Prof. Yaddanapudi Venkataramana Rao

STRIYOM KE RAMAYAN LOK GEET (Hindi) - Dr. K. Leelavathi

TIRUPPAVAI (Hindi) - Smt. K. Kamala Kumari

LEGENDS OF NAYANMARS (English) - Smt. Sripada Divya

SRIMAD VALMIKI RAMAYANA AT A GLANCE (English) - Prof. A. S. Raja Rao

COW - OUR MOTHER (English) - Dr. T. Viswanatha Rao

THE GLORY OF BRAHMOTSAVAS OF LORD SRI VENKATESWARA - Dr. T. Viswanatha Rao

Published by **Sri M.G. Gopal,** I.A.S., Executive Officer,
T.T.Devasthanams, Tirupati and Printed at T.T.D. Press, Tirupati.

गोमाता - जगन्माता

हिन्दी अनुवाद

प्रो. यद्दनपूडि वेंकटरमणराव

तिरुमल तिरुपति देवस्थानम्
तिरुपति

गोमाता - जगन्माता

हिन्दी अनुवाद

प्रो. यद्दनपूडि वेंकटरमण राव

तिरुमल तिरुपति देवस्थानम्
तिरुपति
2014

GOMATHA - JAGANMATHA

Hindi Translation
Prof. Yaddanapudi Venkataramana Rao

Editor-in-Chief
Prof. Ravva Sri Hari

T.T.D. Religious Publications Series No. 1076
©All Rights Reserved

First Edition - 2014

Copies: 2000

Price:

Published by
M.G. Gopal, I.A.S.,
Executive Officer,
Tirumala Tirupati Devasthanams,
Tirupati.

D.T.P:
Office of the Editor-in-Chief
T.T.D, Tirupati.

Printed at :
Tirumala Tirupati Devasthanams Press
Tirupati

एक पल इधर

एक बार बाल गणपति और उनके छोटे भाई कुमारस्वामी के बीच एक होड़ चली! उसके अनुसार समस्त लोकों में घूमकर माता-पिता के पास सब से पहले पहुँचना है। अपनी समस्त ऊर्जा को बटोरकर कुमार स्वामी पहले दौड पडे। धौडते-धौडते समस्त लोकों को छूकर उस स्थान पर पहुँचे जहाँ से दौड़ आरंभ हुई। आकर देखा, एक अश्चर्य! अपनी माता की गोद में बैठकर मुस्कुराते गणपति दिखे! यह कैसे संभव हुआ! दोनों एक साथ चल पडे थे। गणपति पीछे ही रह गये थे। लेकिन इस विजय के पीछे एक रहस्य छिपा था। उस रहस्य को गणपति ही जानते थे। उनके माता - पिता पार्वती - परमेश्वर हैं। इस समस्त सृष्टि के कारणभूत वे ही हैं। पार्वती - परमेश्वर स्वयं सृष्टि स्वरूप थे। उनकी प्रदक्षिणा समस्त लोकों की प्रदक्षिणा ही है। तीन बार उनकी प्रदक्षिणा कर गणेश सौदा जीत गये!

चाहे यह पौराणिक गाथा क्यों न हो, पर निस्संदेह आज के भारतीयों की स्थिति का प्रतिबिम्ब स्पष्टतः दर्शाता है न! देश को समृद्ध बनाने के लिए कितनी ही योजनाएँ, कितने ही निर्माण, कितना ही भारी व्यय! जो हमारे पास है उसके साथ साथ विदेशों से लाखों करोडों का कर्जा! भगवान ने हमें सृजित करने से पहले ही हमारे लिए, हमारी जीविका के लिए इस पृथ्वी पर अच्छे - अच्छे इंतजाम किये हैं। केवल मानव के लिए ही नहीं, समस्त प्राणि कोटि के लिए भी ये इंतजाम काफ़ी हैं। मानव सृष्टि से पहले ही भगवान ने गो माता को पृथ्वी पर भेजा है। उस माता की करुणा दृष्टियों से संसार, प्रधान तः भरतभूमि, अत्यंत समृद्ध हुई है। समस्त संपत्तियों से सुशोभित हुई हैं। वेद, पुराण, समस्त

शास्त्र आदि ने गो-माता की संस्तुति की है। इस देश ने गोमाता को प्रत्यक्ष देवता के रूप में स्वीकार किया है।

ऐसी समस्त संपत्करी गो-माता को आज समाज ने विस्मृत किया है। अनादर कर रहा है। अपने ही लोगों से तिरस्कृता एवं विस्मृता गोमाता उनके अज्ञान पर और उनकी मूर्खता पर दया दिखा रही है! - - फिर भी अपनी संतान पर गोमाता नाराज नहीं है - - - आज भी - - आज भी!

माँ का दूध बच्चे कुछ समय तक ही पीते हैं, लेकिन गाय का दूध हर प्राणी जीवन भर पीता है।

इतनी भव्य और गैरव प्रदान करने योग्य गोमाता की रक्षा हेतु, हे पाठकों, आइए, हम सब मिलकर इस साधु जीव की पवित्रता अक्षुण्ण रखें।

आशा करते हैं कि 'गोमाता - गजन्माता' पुस्तक का समादर बच्चे, बडे - बूढ़े सभी एक साथ करेंगे।

सदा श्रीहरि की सेवा में

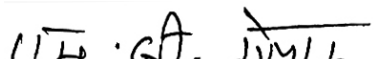

(एम.जी.गोपाल, ऐ.ए.एस)
कार्यनिर्वहणाधिकारी,
तिरुमल तिरुपति देवस्थानम्,
तिरुपति

गोमाता - जगन्माता
विषयानुक्रमणिका

1. हमारी श्रद्धा का केन्द्र और हमारी माता : गाय	1
2. वेदों में गाय	4
3. गो-सेवा	16
4. गो-सेवा का फल	17
5. भारतकी प्रमुख गो-सेवा संस्थाएँ	19
6. भारतीय गौ	19
7. भारतीय गो-संपत्ति की गायों की विशेषताएँ	25
8. भारत में कृषि के लिए प्राण सम गोवंश	29
9. चलता शक्ति-केन्द्र : गाय	36
10. गाय और पर्यावरण	42
11. गो संरक्षणार्थ आन्दोलन	48
12. स्वतंत्रता आन्दोलन और गाय	49
13. स्वतंत्र भारत में गो-संरक्षण आन्दोलन	56
14. गो-संरक्षणार्थ केन्द्र सरकार को करना क्या है?	59
15. गो-संक्षरण के लिए हम क्या कर सकते हैं?	60
16. गोदान का फल	62
17. गो-प्रदक्षिणा का फल	63
18. गो-हत्या के लिए प्रायश्चित्त नहीं	63
19. गो पद्मव्रत	64

20. नर की वेदना का निवारण 65
21. विदेशियों के मंतव्य 66
22. गोमाता के लिए मंदिर 67
23. गोधूलिका लग्न 67
24. बयो ग्यास 68
25. गोमती विद्या 69
26. कुछ कानूनें 71
27. गाय जानवर नहीं है 72
28. कौन किस प्रकार गो-सेवा करें 73
29. पंचग्व्य : विशिष्टताएँ 75
30. पंचगव्य से तैयार किये गये औषध : उनके गुण-धर्म 91
31. गो उत्पत्तियाँ : आयुर्वेद और आर्थिक प्रधानताएँ 109
32. गोमयम् (गोबर) और गोमूत्रम् : अर्थशास्त्र 119
33. गोमयम् और गोमूत्रम् का औषधियों की तैयारी में उपयोग 127
34. गो आधारित दवाएँ 134
35. बीमारियों के निवारण में गो-मूत्र का विनियोग : वैद्य का निवेदन 137
36. गो माता कह रही है। 144

⁂

पहली बात

आज यद्यपि हम अर्थ (धन) प्रधान युग में जी रहे हैं फिर भी देश को शक्ति शाली बनाने में आर्थिक क्षेत्र के समान भौगोलिक, कुल, भाषा, राजनैतिक, सामाजिक अंश भी अत्यंत प्रमुख बनते हैं। इतना ही नहीं धार्मिक और सांस्कृतिक एकता और प्रधानता प्राप्त करती हैं। इस छोटी पुस्तिका में आर्थिक दृष्टि से गाय की प्रधानता का विवरण देते हुए उससे पहले के भारत में गाय के धार्मिक और सांस्कृतिक मूल्यों तथा पक्षों का संक्षेप में सही अनुशीलन करना उपयुक्त ही माना जायेगा। आधुनिक मनुष्य जितना ही अर्थ केन्द्रित जीवन व्यतीत कर रहा हो उसके जीवन की किसी एक दशा में - आरंभ, मध्य या अंतिम दशा में सही - धर्म और संस्कृतियों के प्रभाव से स्पंदित होने की आवश्यकता सहज ही होती है।

⁂

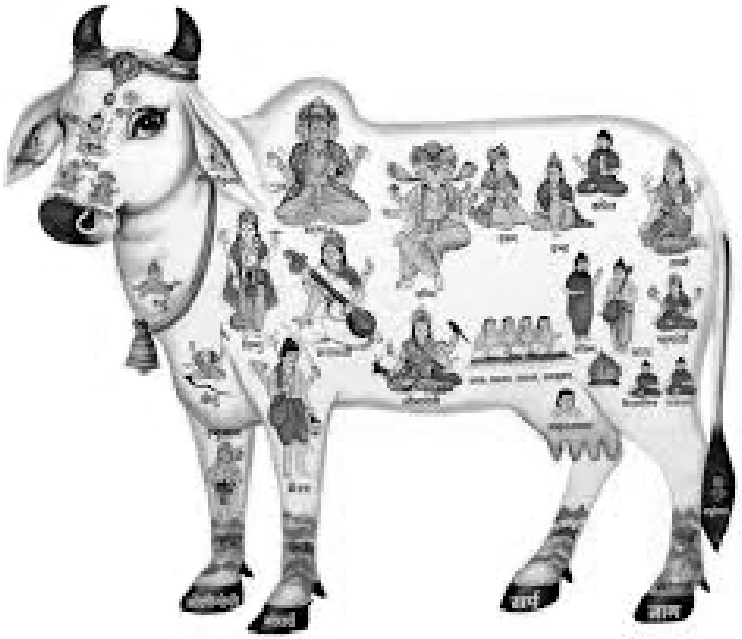

गोमाता - जगन्माता

1. हमारी श्रद्धा का केन्द्र और हमारी माता : गाय

वेद युग में सत्य और ज्ञान - ये दो ही मूल धर्म रहे हैं। इन्हें साधने का मार्ग गो - भक्ति रहा है। ऋग्वेद के गोसूक्त के संबन्ध में महर्षि भरद्वाज कहते हैं - ''गाय ऐश्वर्य है। गाय ही मेरे लिए इन्द्रादि देवता समूह है। गो सोमरस की पहली धूँट है। गायें इन्द्र का प्रतिनिधित्व वहन करती हैं। ऐसी गायों को मैं हृदय से और मन से प्रेम करता हूँ।'' इस मंत्र में गाय के आध्यात्मिक और भौतिक अर्थ समे हुए हैं। साहित्य और पुराण, स्मृतियाँ, धर्मशास्त्र आदि में गो - भक्ति स्पष्टत : निरूपित है। गो - हत्या महापाप घोषित है। अथर्व वेद के गो - सूक्त का प्रथम मंत्र है -

''माता रुद्राणां दुहिता वसूनां स्वसादित्यानाममृतस्य नाभिः । - - - - - - - - मा वधिष्ट।''

अर्थात् ''गाय रुद्रों की माता है। वसुओं की पुत्री है। आदित्यों की बहिन है। अमृत की नाभि है। गाय को मत मारो।'' इसी सूक्त में आगे एक और स्थान पर कहा गया है - ''धेनुः सदनम् रयीणाम्'' - अर्थात् ''गाय समस्त संपत्तियों का निलय है।'' इसी बात को दूसरे शब्दों में इस प्रकार कहा जा सकता है - '' गाय जगत के समस्त पदार्थों की माता है।''

आर्ष साहित्य में और पाणिनि कृत अष्टाध्यायी में कृषि के सहायक के रूप में गोचर भूमि का उल्लेख मिलता है। पाणिनि के समय में (ई.पू. 2800 से सन् 500 तक) प्रायः सभी प्रांतों में सुख और संपदाओं की

गिनती में गो - संपत्ति को प्रमाण के रूप में मानना प्रचलित रहा है। उसे गोधन भी कहा गया। स्मृतियों के समय में पंचगव्य व्याप्ति में था। उसे परम पवित्र प्रसाद के रूप में स्वीकार करते थे। रघुवंश के दिलीप महाराज की गो-भक्ति तो जगत् प्रसिद्ध ही है। वे छाया के समान गायों के पीछे चलते थे। नंदिनी का कहना था - ''अगर मैं प्रसन्न हो जाती हूँ तो केवल दूध ही नहीं समस्त मनोकामनाओं को प्रदान करती हूँ।'' यह एक सत्य कथन ही है। श्रीकृष्ण के जीवन चरित ने तो भारतीय मूल्यों पर अपनी अमिट छाप डाली है। सिक्ख, जैन और बौद्ध ग्रंथों में तो सभी जीव कोटियों पर करुणा और अहिंसा की भावना प्रतिपादित है। आदिनाथ ही ऋषभदेव हैं। सिंधुघाटी और हड़प्पा में प्राप्त सिक्कों पर ऋषभ का चित्र मिलता है। सामवेद का कथन है -

''सदा गावः शुचयो विश्व धायसः''

अर्थात् ''गाय सदा पवित्र और सर्वजन मंगलकारक है।''

अथर्व वेद के गोसूक्त अनुबन्ध के रूप में ही स्कंद पुराण में गाय ''सर्वदेशमयी, सर्व तीर्थमयी'' के रूप में वर्णित है। गोरज को माथे पर थोड़ा ही सही लगाने से समस्त पापों के हरण और मुक्ति की प्राप्ति संभव है। गाय को वत्सला भी कहा गया है। 'वत्सला' का अर्थ अपने बछडे पर अत्यंत प्रेम बरसानेवाली है। 'सर्वैवल आफ् द फिटेस्ट' - शक्तिशाली को ही जीने का अधिकार है - इसी भावना पर विश्वास रखनेवाले यूरोपीय समूहों को 'सर्वे जनाः सुखिनो भवन्तु'' (सभी जनों को सुखी रहना है, आरोग्यवान रहना है, आनंदपूर्ण रहना है) वाला दृष्टिकोण सहज ही उनकी सोच के बाहर की बात है।

गाय भारतीय सभ्यता, संस्कृति और जातीय जीवन से जुडा प्रधान अंश है। गाय से जुड़ी सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनैतिक सभी दृष्टिकोण इस देशवासियों का मुख्य व्यवसाय कृषि से अटूट संबन्ध रखते हैं। भारतीय संस्कृति का मूल आधार विश्वास है। ''एकम् सन् विप्रा बहुधा वदन्ति''- एक ही सत्य को बुद्धिमान अनेक रूपों में कहते हैं।

उक्त ध्येय वाक्य के कारण ही यहाँ के समाज ने अपने सहजीवन के आधार के रूप में 'अहिंसा' को ग्रहण किया है। भारतीयों के लिए गो पूजा अपने आत्मबोध का सहायक एक सनातन मार्ग है। परंपरागत भारतीय समाज के लिए गाय एक प्रतीक है। यह अहिंसा प्रधान और आत्मबोधात्मक ही नहीं, भारतीय संस्कृति के संवर्द्धन के लिए समाज में सामूहिक स्फूर्ति प्रसारित करानेवाली भी रही है। इसीलिए यजुर्वेद कहता है -

''गोस्तु मात्रा न विद्यते''

अर्थात् गाय द्वारा संपन्न होनेवाले उपकार अनंत हैं। गाय हमें असीम लाभ पहुँचाती है।

आर्थिक - सांस्कृतिक दृष्टि से अनुशीलन करने पर विदित होता है कि गाय अनादि काल से हिन्दू समाज का अत्यंत प्रीति पात्र, श्रद्धा केन्द्र और पूजार्ह रही है। अहिंसा प्रधान हमारी संस्कृति के लिए गो - माता केन्द्र बिन्दु रही है। इतना ही नहीं हमारे सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन की रीढ़ भी रही है। गो रक्षा और गो - सेवा को हम ने हमारी सामाजिक आशा - आकांक्षाओं से अलग न होनेवाले अंशों के रूप में माना है।

2. वेदों में गौ

ऋग्वेद :

गाय का दूध, दही, धी, गोमूत्र और गोमय - इन पाँचों को 'पंचगव्य' कहा गया। ये पौष्टिक आधार ही नहीं, अद्भुत दिव्य औषध भी हैं। ये अमृत तुल्य हैं।

''अमृतस्य नाभिः।''

यजुर्वेद :

''गो समाना न विद्यते'' - संसार की सभी प्राणियों में आरंभ से लेकर अन्त तक सब से अधिक मानवों का सहायक गाय ही है। केवल गाय ही!

सामवेद :

गाय से प्राप्त हर पदार्थ पवित्र है। इसी लिए गाय हमारे शरीर, मन और बुद्धि को भी प्रवित्र बनाती है। पर्यावरण के कालुष्य को शुद्ध करती है। -

''सदा गावः शुचयः।''

अथर्ववेद :

''धेनुस्सदनं रयीणाम्'' - धेनु ऐश्वर्यों का सदन है। अष्ट ऐश्वर्यों को गो माता में शरण मिला है। गो लक्ष्मी से किसान धनावान होता है। दूध और फसलें पाता है।

गौरग्निहोत्रमिति प्राणापानाभ्यामेवाग्निगुं
समर्थयति अव्यर्धुकः प्राणापानाभ्यां भवति य एवं वेद''

अग्निहोत्र की सामर्थ्य से गाय की सृष्टि संपन्न हुई है। ब्रह्मदेव ने अग्नि, वायु और आदित्यों की सृष्टि की है। ब्रह्मा ने मानवों की सृष्टि होम के द्वारा की है। अतः हमें भी होम के द्वारा सृष्टि करनी है। इसी विचार से अग्नि, वायु, और आदित्य ने होम किया। ''प्राणानामग्निः तनु वै वायुः चक्षुरादित्य'' मंत्र के साथ उन तीनों ने होम किया तो फल स्वरूप गाय का जन्म हुआ। तब प्रश्न उठा कि इस गाय का दूध किसे मिलना है। उसका अनुभव किसे करना है? इस संबन्ध में तीनों में विवाद चला। सब का वाद एक ही था। ''सिर्फ मेरी सहायता से ही गाय का जन्म संभव हुआ। इसलिए दूध मुझे ही भोगना है।'' समाधान के लिए वे ब्रह्मा के पास मिलकर ही गये। तब ब्रह्मा ने उनसे पूछा कि किसने किस प्रकार होम किया?''

अग्नि का उत्तर था - ''मैं ने प्राण देवता का होम किया।''

वायु का जवाब था - ''मैं ने शरीराभिमानी देवता का होम किया।''

आदित्य ने कहा - ''मैं ने चक्षस् का होम किया।''

सभी की बात सुनकर ब्रह्मा ने कहा -

''प्राणेभ्यः स्वाहा'' कह कर अग्नि ने होम किया है। अतः यह गौ अग्नि को ही प्राप्त होगी।'' - यह ब्रह्मा का परिष्कार था। समाधान था। ''प्राणों के बिना इंद्रियों से शरीर का संबन्ध कैसे बनाता है? प्राण ही सर्वस्व है न!'' - समझकर वायु और आदित्य ने ब्रह्मा के निर्णय का विरोध नहीं किया। अग्नि के द्वारा संपन्न होम से जन्मी गाय को अग्निहोतृत्व मिला। गौ साक्षात् अग्नि स्वरूपा है। अग्नि से ऋग्वेद, वायु से यजुर्वेद और आदित्य से सामवेद उद्भूत हुए। इसलिए अग्नि, वायु

और आदित्यों की शक्तियों से जन्मी गोमाता की पूजा से तीनों वेदों का अध्ययन फल प्राप्त होगा और साथ साथ अग्निहोत्र का भी। गो पोषण से अग्निहोत्र कर्मानुष्ठान फल प्राप्ति मिलने का उल्लेख भी वेदों में किया गया है।

''सूर्यो-तिविद्यया त्रय्या हविषाग्नेय जेतमां
आतिथ्येन तु विप्राग्ने-गोष्वंग यव सादिना''

''गावो विश्वस्य मातरः''

गाय विश्व की माता है। इसी प्रसिद्धि से गो सेवा द्वारा धर्म, अर्थ, काम और मोक्षों को प्राप्त किया है हमारे पूर्वजों ने।

आयुर्वेद ग्रंथ चरक, सुश्रुत, धन्वंतरी, भाव प्रकाश आदि ने गाय से प्राप्त अनगिनत लाभों का उल्लेख किया है।

उपनिषदों को गायों के रूप में, श्रीकृष्ण को गोपालक के रूप में, उपनिषदों का सार गीतामृत (गीता) को क्षीर (दूध) के रूप में, अर्जुन को बछडे के रूप में और ज्ञानी को भक्त के रूप में भारतीय देखते हैं। श्रीकृष्ण को गोविंद, गोपाल, गोपालकृष्ण के नामों से कीर्तित करते हैं. यहाँ ध्यान देने की बात है कि पांडवों में सहदेव ने ''पशु वैद्य शास्त्र'' की रचना की है।

'गो' नाम स्मरण करनेवाला पुण्यात्मा होगा। गो - ब्राह्मण हिंसा होने की संभावना के संदर्भ में असत्य भाषण (वचन) से दोष या पाप नहीं लगेगा - यह व्यास महाभारत का मंतव्य है।

''सूर्योग्निः ब्राह्मणो गावः वैष्णवं खं मरुज्जलं।'' - ''सूर्य, अग्नि, ब्राह्मण, गाय आदि ग्यारह स्थान अधिष्ठान कहलाये गये हैं भागवत पुराण में। सूर्योपासना वेद त्रय से करनी है। अग्नि की उपासना हविस से करनी है। ब्राह्मणों को अतिथि मर्यादाओं से सम्मानित करना है। गायों का संरक्षण करना है। इन कार्यों से ही मैं संतुष्ट होता हूँ।'' - ये श्रीकृष्ण के वचन हैं।

कामधेनु :

अमृत के लिए देवता और राक्षसों द्वारा क्षीर सागर मंथन हुआ था। उस समय अमृत के साथ कल्पवृक्ष, कामधेनु और श्रीमहालक्ष्मी के अवतरण हुए। कामधेनु का अर्थ है कामनाओं (इच्छाओं) को संपन्न करनेवाली धेनु। कामधेनु की संतान ही है गाय। गाय की संतान है धर्म स्वरूप वृषभ (बैल)। वही शिव के वाहन के रूप में नंदी है। समस्त संसार को पशु समूह कामधेनु से ही संप्राप्त है। इसी तथ्य को पुराणों ने उद्घोषित किया है। देवताओं, ऋषियों आदि के लिए आवश्यक दूध देने की महत्तर शक्ति से विभूषित देवता ही है गाय!

पवित्र गोमाता के तीन अभिधान (नाम) और प्रचलित हैं - (1) कामधेनु (2) सुरभि और (3) नंदिनी। यहाँ ध्यान देने की बात है कि ये तीनों तीन प्रकार की गायें नहीं हैं। यह व्यास कृत महाभारत में (अरण्य पर्व, अध्याय 9, 7 - 17 श्लोकों में) कहा गया है। इन में सुरभि और कामधेनु नाम गवों को रखे गये हैं। व्यास भारत में (आदिपर्व, अध्याय 99, छन्द 14) नंदिनी नाम गाय के लिए प्रयुक्त है। पुराणों में सुरभि को दक्ष प्रजापति की पुत्री और कश्यप की पत्नी के रूप में वर्णित किया

गया है। सुरभि की संतान ही रोहिणी और गांधर्वी हैं। समस्त विश्व में रोहिणी द्वारा गायें और गांधर्वी द्वारा अश्व (घोडे) जन्में हैं।

कामधेनु को दैवी शक्तियाँ कैसे प्राप्त हुईं ?

(महाभारत, अनुशासनिक पर्व, अध्याय 99)

पूर्व समय में कश्यप महामुनि की पत्नी अदिति ने महाविष्णु को अपने गर्भ में पाला था। एक पैर पर खडी होकर तपस्या की थी। उस वक्त सुरभि ने कैलास पहुँचकर ब्रह्मा के लिए एक हजार वर्ष की तपस्या की। देवता समूह ने उनकी तपस्या से प्रसन्न होकर ब्रह्मा के साथ सुरभि के सामने प्रत्यक्ष होकर कहा - ''हे सुरभी! हम तपस्या से अत्यंत प्रसन्न हैं। तुम्हें देवता पद प्रदान कर रहे हैं। तुम स्वर्ग, भुवि और नरक तीनों लोकों के ऊपर रहेगी। वह गोलोक नाम से प्रसिद्ध होगा। समस्त जन तुम्हारी आराधाना करेंगे। समस्त गो समूह तुम्हारा ही है।''

पुराणों के अनुसार वशिष्ट महर्षि के आश्रम में एक कामधेनु थी। वरुण देव के पास भी एक और कामधेनु है। एक और कामधेनु का उद्‌भव क्षीरसागर से हुआ है।

व्यास भारत के उद्योग पर्व अध्याय 102 में ब्रह्मा से संबन्धित एक गाया है। उस के अनुसार जब ब्रह्मा ने अमृत पान अधिक किया तो उनके मुँह से निकली फेन में से भी एक कामधेनु का उद्‌भव हुआ जो रसातल लोक में वास कर रही है।

एक बार श्रीकृष्ण और राधा एकांत प्रदेश में विहरण कर रहे थे। उस समय उन्हें दूध पीने की इच्छा हुई। तब श्रीकृष्ण ने अपने दाहिने हाथ

की ओर से अपनी मनःशक्ति से एक गाय का सृजन किया। उसका नाम भी 'सुरभि' था। 'मनोरथ' नामक बछडे की सृष्टि भी उन्होंने की। उस गाय का दूध दुहते समय हाथ से मटकी फिसल कर जमीन पर गिरी। उससे दूध बहकर एक नदी बनी। उसका विस्तार एक सौ योजन पर्यन्त हुआ। उसमें राधा और उनकी सखियों ने स्नान किया। आनंद पाया। वहाँ अनगिनत गायों का उद्‌भव हुआ। उन्हें श्रीकृष्ण ने गोपिकाओं को पुरस्कृत किया। (देवी भागवत, 9 वाँ स्कंध)। ये कामधेनु आश्रमों में रह गयीं। इस तरह के अनेक उदाहरण पुराणों में मिलते हैं।

ब्रह्मदेव की कृपा से कामधेनुओं को दैवी शक्तियाँ मिलीं। कश्यप प्रजापति की पुत्री कामधेनु से भी अनेक कामधेनुओं की उत्पत्ति हुई। श्रीकृष्ण ने गोवर्द्धन पर्वत को छत्री बनाकर व्रज की गायों की रक्षा की। तब कामधेनु ने गोकुल पहुँचकर अपने दूध से श्रीकृष्ण का अभिषेक किया। (देवी भागवत, 10 वाँ स्कंध)

कार्तवीर्यार्जुन का गर्व हरण करनेवाली सुरभि :

सप्त ऋषियों में जमदग्नि एक हैं। उनका विवाह रेणुका से संपन्न हुआ। वे सुरभि को प्राप्त कर उसकी महिमा से सुखी जीवन बिताने लगे। अपकारी का भी उपकार करनेवाले करुणासागर थे जमदग्नि।

कार्तवीर्याजुन एक बार जमदग्नि के आक्षम में पहुँचा। उसके आगमन पर संतोष प्रकट करते हुए (कामधेनु) होमधेनु की सहायता से कार्तवीर्य का अच्छा अतिथि सत्कार किया गया। उस पर संतुष्ट होकर कार्तवीर्यार्जुन ने ऋषि से सुरभि की माँग की। जमदग्नि ने तिरस्कार

किया। इस पर नाराज होकर कार्तवीर्य ने जमदग्नि पर धावा बोल दिया। जमदग्नि ने सुरभि की सहायता से अपनी सेना बनायी। घमासान युद्ध हुआ। सुरभि की सेना के हाथों कार्तवीर्य की सेना परास्त हो गयी। बाद में कार्तवीर्य ने 24 बार युद्ध किया। हर बार वह पराजित ही रहा। अंत में उसने धोखे से जमदग्नि का संहार किया। तब सुरभि के लिए देखा। पर धेनु अदृश्य हो गयी। यह समाचार पाकर भृगु महर्षि ने जमदग्नि को पुनर्जीवित किया। इस प्रकार कार्तवीर्यार्जुन का गर्वभंग हुआ।

एक बार जमदग्नि महर्षि ने अपने तपोबल से गोलोक जाकर कामधेनु की स्तुति की। इस से प्रसन्न होकर कामधेनु ने अपनी बहिन सुशीला से जमदग्नि का विवाह कराया। अग्नि पुराण के 18 वें अध्याय में कामधेनु की संतान की गाथा है। उसके अनुसार अजसा, एकपात, अहिर्बुध्न्य, त्वष्ट, रुद्र, विश्वरूपा उसकी संतान हैं।

सत्यव्रत (त्रिशंकु) द्वारा कामधेनु का चुराना :

सत्यव्रत इक्ष्वाकु वंश का राजा है। अरुणकुमार का पुत्र है। वह कुटिल था। अविनीत था। एक दिन एक ब्राह्मण नव वधू को उसके विवाह के पूर्व ही वश में कर उसके शील का हरण किया। इस पर सत्यव्रत को राजा अरुण कुमार ने राज भवन से बहिष्कृत किया। तब सत्यव्रत के सामने कोई रास्ता नहीं था। वह जंगलों में धूमने लगा। तब से उस राज्य में अकाल आ गया। प्रजा और यहाँ तक कि जानवर भी भूख से तडपने लगे। मरने लगे। उस समय विश्वामित्र अपने सती - पुत्रों को छोडकर घोर तपस्या रत थे। ऐसी स्थिति में परिवार के पोषण के लिए विश्वामित्र की पत्नी अपनी संतान में एक पुत्र को बेचने निकली।

तब सत्यव्रत ने आकार कहा - ''माता, आप अपने पुत्र को मत बेचिएगा। मैं हर दिन कुछ मांस लाकर दूँगा। उस से आप अपने परिवार को बचाइए।'' रोज सत्यव्रत ने ऐसा ही किया। किन्तु एक दिन उसे मांस नहीं मिला। इसलिए वह वसिष्ठ आश्रम गया। वसिष्ठ महर्षि की कामधेनु को चुराया। उसे मारकर स्वयं मांस खाया। बचे मांस को विश्वामित्र के परिवार को दिया।

दूसरे दिन विश्वामित्र ने अपनी दिव्य दृष्टि से बीती घटना को देखा। सत्यव्रत को शाप दिया। सत्यव्रत ने तीन गलतियाँ की। वे हैं - गाय को मारना, परायी स्त्री को पाना और पिता को अपयशी बनाना। इन तीनों पापों के फल के रूप में विश्वामित्र ने उसे त्रिशंकु होने का शाप दिया। कामधेनु को पुनर्जीवित किया। (देवी भागवत, 7 वाँ स्कंध)

कामधेनु से विश्वामित्र का पराभव :

विश्वामित्र अपने राज्य पर शासन कर रहे थे। एक दिन आखेट के लिए जंगल में गये। रास्ते में ही वसिष्ठ महर्षि का आश्रम था। आश्रम दर्शनार्थ गये। वसिष्ठ ने उन्हें आतिथ्य दिया। अपनी कामधेनु को आज्ञा दी कि वह विश्वामित्र और उनके परिवार को प्रीतिभोज का इंतजाम करें। कामधेनु ने अपनी दैवी शक्ति से कम समय में ही भोज दिया। विश्वामित्र संतुष्ट हुए। कामधेनु की प्रशंसा की। पर अंत में वसिष्ठ से कामधेनु को उन्हें देने का आग्रह किया। वसिष्ठ ने विश्वामित्र की इच्छा को तिरस्कृत किया। उस कामधेनु के स्थान पर एक करोड़ गायों को देने की बात कही। विश्वामित्र घमण्डी और क्रोधी थे। कामधेनु को अपनी शक्ति से बाँधकर ले जाने का प्रयास किया।

कामधेनु नाराज हुई। क्रोध से प्रकंपित हुई। अपने रोम-कूप से उसने सैनिकों का सृजन किया। उस सेना ने विश्वामित्र के सैनिकों को भगा दिया। विश्वामित्र के बाणों को वसिष्ठ ने अपने योगदंड से रोका। क्षत्रिय शक्ति से महत्त्वपूर्ण ब्राह्मण शक्ति के सामने विश्वामित्र ठहर नहीं सके। इस बात को विश्वामित्र ने समझकर ऐसी शक्ति को प्राप्त करना चाहा। तदर्थ तपस्या की जरूरत थी। अपने राज्य को पुत्र के अधीन में कर वे तपस्या के लिए निकल पडे। राजर्षि हुए (वाल्मीकि रामायण, बालकांड 52 सर्ग और महाभारत शल्य पर्व, अध्याय 40, तथा महाभारत, आदिपर्व, अध्याय 175)।

महाभारत में वैष्णव धर्म विचार (बृहत् अवांतर पर्व) केवल गो महिमा पर ही चला है। विष्णु धर्मोत्तर पुराण और अग्नि पुराणों में मधुर, आकर्षक तथा भक्ति युक्त वैदिक सूक्तियाँ उपब्राह्मण स्वरूप गो महिमा के विवरण से युक्त हैं।

आसेतु हिमाचल पर्यन्त भारत गो भक्तों से भरा है। प्राचीन साहित्य, वैदिक साहित्य, अरण्यकोपनिषद सब गोरक्षा और गोपालन से संबन्धित विविध मार्गों का विवरण देते हैं। वेदों के 'उप ब्राह्मण भूत चरित' में गो माहात्म्य पर अनेक बातें वर्णित मिलती हैं। गाय से सर्वश्रेष्ठ क्षेम प्राप्त होता है। गाय को व्यथा देना महापाप माना गया है। उससे दुःख ही दुःख संप्राप्त होते हैं।

गायें नित्य सुरभिरूपिणी हैं। पुण्यदायक सुगन्ध को विकीर्ण करनेवाली हैं। गुग्गुल की सुगन्ध उनसे व्याप्त होती है। गायों से प्राणि कोटि बँधी हुई है। गाय धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष प्रदायिनी है। गायें सर्वोत्कृष्ट आहार

की उत्पत्ति करती हैं। एक गाय अपने जीवन काल में चार लाख दस हजार चार सौ चालीस लोगों को एक वक्त का खाना देती है - यह विज्ञों की बात है।

नंदिनी धेनु :

नंदिनी नामक धेनु दिलीप महाराज के पास थी। एक दिन उसने राजा दिलीप से कहा -

''न केवलं? पयसां प्रसूतिम्,
अवेहि मां कामदुघां प्रसन्नाम्।''

''मुझे आप केवल दूध देनेवाली जानवर मात्र मत समझिए। अगर मैं प्रसन्न होती हूँ तो आपकी सारी कामनाएँ और इच्छाएँ संपन्न करती हूँ।''

श्रीमद् भागवत् में कहा गया है कि भूमाता गोमाता के रूप में दर्शन देती है। गोमाता सकल देवता स्वरूपिणी है।

गोपृष्ठ में लक्ष्मी रहती है :

मातादित्यानां दुहिता वसूनां प्राणः प्रजानाममृतस्य नाभिः
हिरण्यवर्णा मधुकशा घृताची महान् भगश्चरति मर्त्येषु
(अथर्व 9-1-4)

''गाय आदित्यों के लिए माता सम है। वसुवों के लिए पुत्री सम है। प्रजा के लिए प्राण सम है। गाय मानवों को अमृत प्रदान करनेवाली नाभी है। हिरण्य वर्ण की मधु वर्षा से घी उत्पन्न करनेवाली है गाय। मानवों के कष्टों को दूर करती फिरती रहती है।'' यही उक्त मंत्र का भावार्थ है।

सप्त मधुओं में दो मधु गो और वृषभ हैं।

एक बार श्रीमहालक्ष्मी सुंदर वस्त्र और आभूषणों से अलंकृता होकर गायों की झुंड में गयी। तब गायों ने उनके वैभव का दर्शन कर उन से प्रार्थना की कि वे अपना परिचय दें। तब महालक्ष्मी ने कहा - '' हे गो समूह! आप का शुभ हो! मैं ने इस लोक में लक्ष्मी के रूप में प्रसिद्धि पायी है। सब मानव मुझे चाहते हैं। मेरा आश्रय पाकर ही समस्त देवता समूह वैभव - संपत्तियाँ भोग रहा है। ऋषि गण सिद्धि पा रहा है। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष मेरे द्वारा ही सिद्ध हो रहे हैं। लेकिन मेरी इच्छा है तुम्हारे बीच में रहने की। इसी लिए मैं स्वयं आप के बीच में आकर प्रार्थना कर रही हूँ। मुझे अनुमति प्रदान कीजिएगा।'' लक्ष्मीदेवी की प्रार्थना सुनकर गायों ने कहा - ''हे महालक्ष्मी! आप चंचला है। एक जगह पर स्थिर होकर नहीं रह सकती हैं। इस लिए आप हमारे बीच मत रहिएगा। और कहीं जाकर आनंद से रहिएगा। हमें तो घास ही पुष्टि देता है। आप से, यानी संपत्ति से, हमारा कया काम निभेगा?'' गायों की बात सुनकर लक्ष्मीदेवी ने कहा -'' अन्यों की भलाई करनेवाली हे गायें! अगर आप मुझे तजेंगी तो लोक में मुझे अपहास ही मिलेगा। मैं उपेक्षिता बन जाऊँगी। मुझ पर दया कीजिए। आप महान ऐश्वर्य प्रदाताएँ हैं। कितनों ही का पोषण करती हैं। मैं आपकी भक्तिन हूँ। मैं आपकी शरण में हूँ। आप के साथ मुझे भी रहने दीजिए। कम से कम आपके शरीर के किसी अंग में, यहाँ तक कि आपके मूत्रांग में, रहने की जगह मिल जाय तो बहुत होगा। यही मेरी इच्छा है। आप में कुछ भी अपवित्रता नहीं है। आपके अंगाग पवित्र हैं। आप के शरीर कें किस अंग में मुझे मिलेगा आप ही बताइए।'' यह लक्ष्मी की प्रार्थना थी।

गायों ने आपस में सलाह - मशविरा किया। सर्व सहमति से कहा - ''हे लक्ष्मी देवी! आप शोभा संपन्न हैं। हमें आपको सम्मानित करना ही है। आप हमारे मल - मूत्रों में वास कीजिए। क्योंकि हमारे मल - मूत्रों को परम पवित्र कहा गया है। शुद्धि प्रक्रिया में इनका उपयोग हो रहा है।'' लक्ष्मी देवी ने स्वीकार किया। कहा जाता है कि लक्ष्मी देवी गो मल - मूत्रों में वास करती हैं। विविध संपत्तियों से गो संपत्ति श्रेष्ठ इसीलिए मानी जाती है। इस भावना को विस्तृति और प्रचार - प्रसार भी मिला है।

गो-विश्वरूप :

गाय के मस्तक और कंठ के बीच गंगा रहती है। गाय के समस्त अंगों में सकल देवता हैं। सप्त ऋषि, नदियाँ, तीर्थ सब गाय में हैं। गो के चारों पैरों में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष हैं। इसी लिए गाय के चरणों को धोकर उस चरणोदक को सिर पर छिडक लेते हैं। विश्वास है कि इस से समस्त पाप धुल जाते हैं। गाय के मुख में चारों वेद हैं। इसी लिए गाय को पहले प्रवेश कराकर नूतन गृह में (नये धर में) यजमान प्रवेश करता है। गो धूलि से नवग्रह दोष समाप्त होते हैं। गाय को नव धान्य, पत्ते - तरकारी, फल आदि खिलायेंगे तो शुभ मिलेगा। ऋणग्रस्तों की व्यथाएँ दूर होंगी। वे अपने ऋणों से मुक्त होंगे। इसीलिए पर्व - त्योंहारों में और शुभ - अशुभों के संदर्भों में गो पूजाएँ करने और गोदान देने की परंपरा है। यह अच्छा फल देता है।

सूर्य, चन्द्र, शिव, कुमारस्वामी, गणेश, ब्रह्मा, विष्णु, सरस्वती, हनुमान, नव ग्रह, पर्वत, कुबेर, अग्नि, वरुण, वायु, नागराज, नारद, लक्ष्मी, यौमादेवी, भैरव आदि 33 करोड देवता गो - माता के शरीर में निवास करते हैं। गो माता को आहार समर्पित करेंगे तो 33 करोड देवता

संतुष्ट होते हैं। यह उन्हें नैवेद्य समर्पण के समान है। गो प्रदक्षिणा भू प्रदक्षिणा सम है। गोपूजा के लिए भक्ति प्रधान है। सूक्ष्म में मोक्ष पाना चाहते हैं तो गो पूजा, गो रक्षा, गोदान हमारा कर्तव्य है। गो वध का निषेध हमारा धर्म है।

3. गो-सेवा

''गाय की सेवा करनेवालों को अतिदुर्लभ वरदान भी फलते हैं। क्रूरता और क्रोध दिखाए बिना हमेशा जागरूकता से संरक्षित करें तो गाय सारी कामनाएँ पूरी करेगी। जितेन्द्रिय होकर प्रसन्न चित्त से नित्य सेवा रत को अतुलित पुण्य प्राप्त होगा।'' (महाभारत, अनुशासन पर्व, 21/33-55 श्लोक)

महर्षि वसिष्ठ ने जिस प्रकार की गो सेवा की है, जिस तरह का गोपालन संपन्न किया है, वे अत्यंत प्रसिद्ध हैं। गो तत्व को जाननेवालों में वे सर्व प्रथम हैं। उनके पास शबला नामक विशिष्ट गाय थी। उस शबला की संतान नंदिनी है। उस नंदिनी का संस्कृत साहित्य में विशेष रूप से उल्लेख है। महाभारत में वसिष्ठ महर्षि ने गो सेवा की महत्ता के बारे में राजा सौदास को विस्तार से बताया है -

''गावः प्रतिष्ठा भूतानां गावः स्वस्त्ययनं महत्।
गावो भूतं च भव्यं च गावः पुष्टः सनातनी।।''

(महाभारत, अनुशासन पर्व, 78/5-6)

'हे राजन! गाय मनुष्यों के साथ समस्त जीवों के लिए आधार भूता है। गो का कल्याण मंगलप्रद और सर्व संपत्तियों का मूल है।'

वेद व्यास का अभिप्राय है कि 'गाय जहाँ रहती है वहाँ पर प्रशान्त वातावरण होगा। गाय का शरीर सर्व देवताओं का वास स्थान है।'

श्रीकृष्ण को गोपाल नाम भी मिला है। वे कितने ही प्रेम से गोसेवा करते थे। कृष्ण भक्त हिन्दी के मुसलमान कवि रसखान ने भी गाय के महत्व का खुला वर्णन किया है। अनेक प्रकार से वर्णित किया है। कठोपनिषद् का कथन है कि सत्यकाम जाबाली ने गोसेवा को अपनाकर दैव-चिन्तन द्वारा मोक्ष की प्राप्ति की है। महाराज दिलीप की गो भक्ति अनन्य सामान्य है। महाकवि कालिदास ने 'रघुवंश' काव्य में राजा दिलीप की गो भक्ति का विस्तृत वर्णन किया है। राजा दिलीप हमेशा गोसेवा में ही दत्तचित्त रहते थे। छाया के समान हमेशा गायों के पीछे लगे रहते थे। गाय को आहार और पानीयों को स्वयं देते थे। गायों को खिलाने के बाद ही वे खाते थे।

'अगर सहूलियत हो तो हर घर में एक गाय को पालना चाहिए। राजा के अनिवार्य कर्तव्यों में गो संरक्षण भी एक है' - महामंत्री कौटिल्य (चाणक्य) ने अपने अर्थशास्त्र में स्पष्ट घोषित किया है (2-6-48)।

4. गो-सेवा का फल (एक बीती कहानी)

एक ब्राह्मण के घर पर एक स्वामी जी एक बार अतिथि के रूप में आये। उस बाह्मण के पास संपत्ति की कोई कमी नहीं थी। पर संतान नहीं। पति-पत्नी इसी चिंता में थे। ब्राह्मण दंपती ने स्वामी जी का अतिथि सत्कार किया। उस गाँव के सब लोग स्वामी जी के दर्शन के लिए ब्राह्मण के घर पर आये। स्वामी जी ने सुबह-सुबह उठकर दूसरी जगह पर जाने

के लिए तैयार हो गये। ब्राह्मण दंपती ने भोजन के बाद जाने की प्रार्थना की। भोजन लेकर जाते समय स्वामी जी ने आशीर्वाद दिया - ''सुपुत्र प्राप्ति रस्तु''। स्वामी जी के इस आशीर्वाद से ब्राह्मण - दंपती खुश हुए। जाते - जाते स्वामी जी ने उनसे गो सेवा की बात कही थी। उसी दिन से ब्राह्मण दंपती ने गो सेवा आरंभ कर दी। गाय के पैर धोकर उस जल को सिर पर छिडक लेते थे। उस जल को तीर्थ के रूप में लेने लगे। गो शाला में दीप जलाये। गाय के लिए अच्छी बिस्तर का इंतजाम भी कर दिया। रोज गो शाला साफ करते थे। कुछ ही दिनों में गाय और बछडा पुष्ट हो गये।

सेवा फल के रूप में ब्राह्मणी गर्भवती हुई। एक पुत्र को जन्म दिया। गाँव के सब लोग भी आनंदित हुए। सब ने स्वीकारा कि यह स्वामी जी का ही आशीर्वाद फल है। इतना ही नहीं सब ने गोसेवा का आरंभ किया। इस घटना का वर्णन कालिदास के रघुवंश में हैं।

महाराजा दिलीप सूर्यवंशी राजा थे। उनकी संतान नहीं थी। वशिष्ठ महर्षि की सलाह से राजा ने गो सेवा और गो रक्षण कार्य आरंभ किया। दिलीप ने अपनी पटराणी सुदक्षणा के साथ भक्ति भाव से वशिष्ठ द्वारा निर्देशित गोव्रत संपन्न किया। नंदिनी की सेवा की। उसकी रक्षा के लिए वन और पर्वतों में विचरण किया। एक दिन एक माया सिंह नंदिनी पर कूद पडा। धावा बोल दिया। राजा दिलीप की परीक्षा लेने के बाद वह सिंह स्वयं गो माता के रूप में दर्शन देकर उस राज दंपति को आशीर्वाद देकर गायब हो गया। परिणामतः दिलीप महाराज को पुत्र हुआ। ये ही रघु महाराज हैं।

मुझे संतान प्राप्ति गो सेवा फल के रूप में हुई। इस के बाद मैं ने अपने शिष्य को गो सेवा की सलाह दी। उसे भी संतान की प्राप्ति हुई। गो सेवा की महिमा आज, कल और हमेशा रहेगी। यह मेरा दृढ़ विश्वास है। मन लगाकर करनेवाली गोसेवा का फल श्रीकृष्ण है। तन मन लगाकर करनेवाली गोसेवा का फल श्रीकृष्ण सान्निध्य ही है।

5. हमारे देश की प्रमुख गो-सेवा संस्थाएँ

1. तिरुमल-तिरुपति देवस्थानम् की गो शालाएँ।
2. आर्य समाज की देखरेख में भारत के विविध प्रान्तों में विस्तरित गो सेवा केन्द्र।
3. जैन समाज के द्वारा स्थापित गो-शालाएँ।
4. विश्व हिन्दू परिषद के अधीन चलाये जानेवाले गो सेवा-केन्द्र।
5. अखिल भारतीय गो सेवा समाज, दिल्ली।
6. श्रीकृष्ण गोपाल संस्थान, गोविन्द गढ़, जयपूर, राजस्थान।
7. कामधेनु विश्वविद्यापीठ, झांसी, उत्तरप्रदेश।
8. भारतीय गोवंश रक्षण, संवर्द्धन परिषद्, संकटमोचन आश्रम, दिल्ली।
9. भारत सेवक समाज, दिल्ली।
10. राष्ट्रीय गोधन महासंघ, दिल्ली।

6. भारतीय गाय

भारत में वेदों के समय से पहले ही से गायों को अत्यंत आदर और प्रामुख्य मिले हैं। वेद, स्मृतियाँ, पुराण, इतिहास, बाद के अनेक ग्रंथ और काव्य आदि में गो की प्रशंसा है।

पीठ पर (मूपुर) ककुद और गले के नीचे गालकंबल से सुंदर शरीर निर्माण से युक्त गाय अत्यंत शोभामय लगती हैं। आज बिना ककुद और गलकंबल की 'जेर्सी' गाय एक प्राणि मात्र है। वास्तव में गाय नहीं है।

पाश्चात्य देशों में ''योरान्'' नामक एक मांसाहारी जानवर जंगलों में रहता था। 7 फुट लंबा भारी शरीर और तीन फुट सींग वाला जानवर था वह। वह दूध देती थी। वहाँ के लोग उसे पालतू बनाकर दूध पाते थे। इस की संतति की ही है ''जेर्सी'' गाय। यह गो संतति की नहीं है। आज अधिक दूध के लिए ही 'जेर्सी' गायों की आयात की जा रही है। जेर्सी गाय के दूध में भारतीय गाय की श्रेष्ठता नहीं है। पाश्चात्य देशों में दूध से अधिक मांस के लिए ही गायों को पालते हैं।

भारतीय गाय का जन्म और इतिहास ही अलग है। देवता और दानवों ने अमृत के लिए समुद्र मंथन करना आरंभ किया। सब से पहले 'हालाहल' नामक विष समुद्र गर्भ से उद्‌भव हुआ। उस के प्रभाव से समस्त लोक आन्दोलित हुए। लोक कल्याणार्थ शिव जी ने हालाहल पान किया। तत्पश्चात् मंथन से लक्ष्मी देवी, ऐरावत, उच्चैःश्रव, चन्द्र समुद्र से उद्‌भूत हुए। इस के बाद कल्पवृक्ष और कामधेनु का उद्‌भव हुआ। अन्त में अमृत कलश के साथ श्रीधन्वंतरी का आविर्भाव हुआ। मोहिनी का अवतार लेकर विष्णु ने अमृत देवताओं को युक्तिपूर्वक बाँटा। समस्त देवता अमर हो गये। लेकिन मानवों को क्या मिलेगा?

करुणासिन्धु परमात्मा ने मानवों के योगक्षेमार्थ
अमृत नाभि कामधेनु को दिया। वही गाय है - मानव
समस्त कामनाओं को संपन्न करनेवाली गाय - - कामधेनु!

देवता अमर हैं। उनके लिए मृत्यु नहीं। मानव के लिए मरण अवश्यंभावी है। लेकिन भगवान ने मानव को सौ वर्ष की आयु पाने का वरदान दिया। भगवान की इच्छा तो यही है। पर यह कैसे संभव होगा? आयुर्वेद में आरोग्य रक्षण विधान हैं। धन्वंतरी ने विधान किया। पर मानव जब उस विधान का अनुपालन करता है तभी उसे सौ वर्ष की आयु मिलेगी। तभी मनुष्य ''शतमानं भवति'' आशीर्वाद के लिए योग्य बनेगा। तंदुरुस्ती और दीर्धायु के लिए आयुर्वेद में अनेक औषध हैं। महर्षियों ने उनका नियमन किया है। परन्तु यहाँ एक विशेषता अवश्य मिलती है। हर औषध की सेवन प्रक्रिया में गाय का संबन्ध किसी न किसी रूप से जुडता है। गो से संप्राप्त होनेवाले क्षीर (दूध), दधि (दही), घृत (धी), गोमूत्र, और गोमय (गोबर) में किसी न किसी एक या उससे अधिक संबद्ध औषधी से हैं। इन पांचों को ''पंचगव्य'' कहते हैं। 'पंच' मानी पाँच हैं और 'गव्य' मानी गाय से मिलनेवाले पदार्थ।

गाय में निहित अद्‌भुत गुण :

1. दूध, दही, घी, मक्खन, मट्ठा - ये प्रधानतः शरीर के लिए आवश्यकअनेक प्रकार के पोषकों को देते हैं। ये शरीर को तंदुरुस्त रखते हैं।
2. गोमूत्र और गोबर मल पदार्थ नहीं हैं। 'गोबर' में अनेक सुगण हैं।'गोबर' को 'गोमय' भी कहते हैं। 'मय' का अर्थ 'अनेक सुगुण' है। अनेक रोग कारक सूक्ष्म जीवों को मारने की शक्ति 'गोबर' में हैं।
3. गाय समस्त देवताओं का आवास है। इसलिए गाय को नमस्कृत करना, उसकी पूजा करना, उसकी प्रदक्षणा करना सब समस्त देवताओं की पूजा, प्रदक्षिणा सम हैं।

4. गोबर (गोमय) में जिस प्रकार लक्ष्मी का वास है उसी प्रकार गोमूत्र में गंगा का निवास है।

5. गाय अपनी उच्छ्वास और निश्श्वासों की प्रक्रिया में 'कार्बनडयाक्सैड' को लेकर अक्सिजन (प्राणवायु) को बाहर छोडती है (वृक्षों के समान)। इस से गायें जहाँ रहती हैं वहाँ का पर्यावरण (परिसर प्रान्त) स्वच्छ रहते हैं। इस से किसी अन्य प्राणी को किसी प्रकार का नुकसान नहीं है।

6. गाय अत्यंत शांत स्वभाववाली है। गाय से प्राप्त 'पंचगव्य' सेवन से मनुष्यों को शान्ति मिलती है। उनका शान्त स्वभाव बढ़ता है। 'जेर्सी' गाय उग्र स्वभाववाली है। वह कृषि कार्य में सहयोगी भी नहीं हो सकती।

7. गाय हरी घास चरकर अमृत सम दूध देती है।

8. माता की दूध से वंचित बच्चों के लिए गाय का दूध माता के दूध के समान है।

9. माता बचपन में ही दूध पिलाती है। लेकिन गाय के दूध का सेवन मानव जीवन भर करता है। अर्थात् गाय मानव को जीवन भर दूध देती है।

10. गाय का दूध देना बंद होने पर भी गोमूत्र और गोमय (गोबर) मिलते ही रहते हैं।

11. गाय अपनी मृत्यु के बाद भी महत् उपकारिणी है। गाय को जमीन में गाढने के बाद कुछ ही समय में अनमोल खाद हो जाती है।

12. गाय की सींग में गोबर भर कर जमीन में गाड देंगे तो छह महीने बाद अद्‌भुत खाद मिलता है। यह एक अनोखा परिणाम है।

13. गाय के 'पंचगव्य' विष का परिहारक है। बाल कृष्ण को पूतना ने विष युक्त दूध पिलाया था। पूतना वध तो हुआ। पर माता - पिता का हृदय व्याकुल हो गया। दुष्ट पूतना ने नन्हें कन्हैया को दूध पिलाया। वह कितना विष भरा है? तब यशोदा ने बाल कृष्ण को गोमूत्र और गोमय से लेपित कर नहलाया। बाद में गाय के खुरों के नीचे की गोधूलि (गो रज) का तिलक लगाया था।

14. श्रीकृष्ण भगवान ने गाय के बारे लोक को सजग करने के लिए अनेक लीलाएँ संपन्न की हैं। श्रीकृष्ण ने नन्हें कन्हैया के रूप में बचपन में दूध, दही और मक्खन खूब खाया है। खाया ही नहीं खिलाया भी। बचपन से जिन बच्चों को पंचगव्य मिले है वे बडे होकर पुष्ट और मेधा संपन्न हुए हैं। आज जो अपनी गो संपत्ति को कबेला भेज रहे हैं वे अपने बच्चों के लिए दूध कहाँ से ला सकते हैं? आज की इस स्थिति से भारत जाति दुर्बल बनती ही जा रही है न?

15. जिस घर में तुलसी और गाय हैं उस घर में वैद्य को आने का मौका ही नहीं मिलता।

16. ''गोस्तु मात्रा न विद्यते'' गाय के बारे में कितना भी कहा जाय उसका अन्त नहीं होगा।

17. आयुर्वेद वैद्यशास्त्र के अनुसार पंचगव्यों से विष को भी अमृत तुल्य बनाया जा सकता है।

18. ''घर घर में गाय - गाँव गाँव में गोशाला'' की स्थिति का वास्तव रूप उभरने पर पंचगव्य सब के लिए प्राप्त होंगे।

19. आयुर्वेद की चिकित्सा कराते समय पंचगव्यों में किसी न किसी एक की जरूरत पडती ही है।

20. पंचगव्यों का रोज नियत उपयोग से शरीर के दोष शमित होते हैं।

21. हमारे भारत में आज 36 हजार पशु वधशालाएँ हैं। इतनी शालाएँ होना हमारे लिए शरम की बात है।

22. गाय की रीढ़ पर 'सूर्यकेतु' नामक विशेष नाडी है। यह सूर्य किरण स्पर्श से क्रियान्वित होती है। इसीलिए गाय धूप में रहना पसंद करती है। नाडी के क्रियान्वित होते ही गाय पीले पदार्थ को स्रवित करती है। उससे गाय का दूध पीले रंग का हो जाता है। दूध का यह पदार्थ सर्व रोग निवारक और सर्वविष नाशक होता है।

23. गाय के शरीर से गुग्गुल की गंध निकलती है। यह वातावरण के कालुष्य का निवारण करती है।

24. पंचगव्यों के औषधीय गुणों की प्रामाणिकता भारत सरकार की विधित अनुसंधान संस्थाओं से निर्धारित है। (IICT, NBRI, CSIR, IIT, NEERI, NBAGR आदि)

25. ''चले चलें गाय की ओर - चले चलें गाँव -
गाँव की ओर - चले चलें प्रकृति की ओर -
चले चलें पर्यावरण की रक्षा के लिए।
''चले चलें ग्रामराज्य द्वारा रामराज्य की ओर।''

गाय की खाद
निम्न मूल्य सामान्य विश्लेषण से औसतन प्राप्त हैं तथा ये सूखे पदार्थ पर आधारित हैं।

1. नत्रजनि	1.0 प्रतिशत/100 ग्राम सूखा पदार्थ
2. भास्वर	0.54 प्रतिशत/100 ग्राम सूखा पदार्थ
3. पोटाशियम्	0.90 प्रतिशत/100 ग्राम सूखा पदार्थ
4. लोहा(आइरन)	2600 मि.ग्रा/किलो या पी.पी. एम. सूखा पदार्थ
5. जिंक	57 मि.ग्रा/किलो या पी.पी. एम. सूखा पदार्थ
6. मैंगनीज	250 मि.ग्रा/किलो या पी.पी.एम. सूखा पदार्थ
7. तांबा	2.5 मि.ग्रा/किलो या पी.पी.एम. सूखा पदार्थ
8. बोरान	2.1 मि.ग्रा/किलो या पी.पी.एम. सूखा पदार्थ
9. बोरान	0.7 मि.ग्रा/किलो या पी.पी.एम. सूखा पदार्थ

डॉ. एच.सी. बेहरा
जोधपुर, राजस्थान

7. भारतीय गो संतति की गायों की विशेषताएँ

अत्यंत प्राचीन काल से भारत में गाय मानवों की सहचरी और घरों की पालतू जानवर है। भारतीय गाय शाकाहारी है। ककुद और गलकंबल भारतीय गो संतति की विशेषता है। भारतीय गो संतति की गायें आफगनिस्थान और आफ्रिका के कुछ प्रान्तों में भी दिखाई देती हैं।

पाश्चात्य देशों में 'योरास' नामक एक मांसारी जंगली जनवर रहता था। वह जंगलों में ही रहता था। 7 कदम लंबा और भारी यह जानवर

तीन फुट लंबे सींगोंवाला था। इस का दूध भी पीने के लिए स्वादिष्ट होता था। इसी लिए उन देशों के लोगों ने इस जंगली जानवर को पालतू बना लिया। लेकिन यह जंतु गो वंश से संबन्धित नहीं है। आज ज्यादा दूध के लिए 'जेर्सी' गायों का आयात कर रहे हैं। भारतीय गाय के दूध की श्रेष्ठता उनके दूध में नहीं है। पाश्चात्य मांस के लिए गाय को पालते हैं।

गो वध निषेध को हमारी सरकारें सही रूप से लागू नहीं कर रही हैं। फलतः आज भारतीय 70 जातियों की गायों में केवल 32 जातियाँ बची हैं। शहरों में पशु ग्रास की कमी है। आज गायों के लिए चलने - फिरने की जगह भी नहीं रह गयी है। आज गाँवों में भी लगभग यही स्थिति है। 6.4% गायें आज मांस के लिए हर वर्ष गोवध - शालाओं में भेजी जा रही है। आजादी मिलने के बाद 1951 तक हर 1000 मनुष्यों के लिए 700 गायें थीं। आज हर 1000 के लिए सिर्फ 400 तक उनकी संख्या घट गयी है।

संकर जाति की गायें अवश्य ज्यादा दूध देती है। लेकिन ये कुछ वर्ष ही जीवित रहती हैं। भारतीय स्वदेशी गो संतति की गायों द्वारा प्राप्त दूध, गोमूत्र और गोबर में ही औषध गुण हैं। रोग निरोधक शक्ति है। गरम प्रान्तों में भी वे श्रम करती है। औषध गुणों से युक्त 'पंचगव्य' मात्र भारतीय गोवंश की विशेषता है। आज स्वदेशी गो संतति की रक्षा के संबन्ध में हमारी सरकारें भी ध्यान नहीं दे रही हैं। इस से स्वदेशी गो जातियों के खतम होने की स्थिति मंडरा रही है।

देशी गायों के लक्षण :

1. पीठ पर ककुद (मूपुर), कंठ के नीचे गलकंबल स्वदेशी गायों की विशेषताएँ हैं।
2. आम तौर पर सींग लंबे होते हैं। शरीर सामान्य रहता है।
3. देशी गो संतान बैल अधिक श्रम कर सकते हैं। कृषि कार्य के लिए अत्यंत उपयोगी हैं।
4. गाय उच्च स्वर में रंभाती है।
5. देशी गाय चुस्त और तेज रहती है।
6. ये गायें यजमान को ही दूध देती हैं। नये लोगों को नहीं देतीं। सैकडों गायों के बीच भी बछडा अपनी माँ को पहचान लेता है। वे कितनी भी दूर चली जायें गायें अपने घर को (निवास स्थन को) याद रखती हैं।

देशी गायों से प्रयोजन :

1. देशी जाति की गायों के दूध से बुद्धि का विकास होता है। बुद्धि सुनिशित होती है। इनका दूध सभी पोषक पदार्थों से युक्त होता है। विषकर पदार्थों का निरोध कर शक्ति दायक होता है गाय का दूध। यह सर्वोत्तम है। माँ के दूध के समान आसानी से पचता है। माँ के दूध के सभी लक्षण गाय के दूध में हैं।
2. दूध ज्यादा परिमाण में नहीं देती। परन्तु 12-13 वर्ष दूध देती हैं।
3. देशी जाति से संबन्धित गाय 'कार्बन्डैयाक्सैड' को सांस के द्वारा स्वीकृत कर 'आक्सिजन' को छोडती है।

4. देशी गाय का घी 'कोलेस्ट्राल' कम करता है। बुद्धि को तेज करता है। पदार्थों में निहित विष से रक्षा कर रोग निरोधक शक्ति को बढाता है। इस दूध में अनेक पोषक तत्त्व हैं।
5. देशी गाय की चमडी को विष के गुणों को हरने की शक्ति है। वह अपनी पूँछ द्वारा अपनी चमडी को हमेशा साफ रखती है। गाय के शरीर पर हाथ से सहलानेवालों की भी तंदुरुस्ती ठीक होती है।
6. देशी गाय से प्राप्त मट्ठा टंडक पहुँचाता है। पित्ताशय और आंतडियों को साफ करता है। बुद्धिबल देता है। फल स्वरूप शरीर में चुस्ती बढ़ी है।
7. स्वादेशी गायों में बी.सी.एम. (बीटा कासो मार्लेन) नामक विषकण नहीं रहता है।
8. गाय के दूध, दही, घी, मूत्र और गोबर वैद्यपरक दृष्टि से अत्यंत मूल्यवान है।
9. गाय की मृत्यु के बाद उसके सींगों को जमीन में गाढकर रखें तो छह महीने के बाद विशिष्ट खाद बनती हैं।

देशी गायों के दूध की विशेषताएँ :

1. देशी गाय के दूध से प्राप्त घी से आक्सिजन मिलता है। एक तोले भर के घी को जलाने पर एक टन भर 'आक्सिजन' निकलता (मिलता) है।
2. गाय के दूध में 'कैरोटिन' नामक पदार्थ है। इससे आँख की बीमारियाँ (नेत्र व्याधियाँ) ठीक होती हैं। यह विटमिन - ए का पर्याय ही है।

3. इस गाय के दूध के समान घी और दही भी औषध गुण युक्त हैं।
4. देशी गाय का दूध पतला होता है। नन्हें बच्चों के लिए अच्छा है। सरल रूप से जीर्ण होता (पचता) है। माता के दूध के सभी लक्षण गाय के दूध में हैं। माता के दूध सम श्रेष्ट है देशी गाय का दूध। इसी कारण देशी गाय को भारतीय माता के रूप में भावित करते हैं।

8. भारतीय कृषि के लिए प्राण सम गो वंश पशु

संपदा-ट्राक्टर्स :

कृषि के लिए बैल सुंदर और सस्ता उत्तम साधन है। डॉ. भूपसिंह कहते हैं कि ये खेत को कालुष्य रहित शक्ति देते हैं। अच्छे दो बैलों की कीमत लगभग रु 20,000/= है। इन दोनों को मिलाकर हर दिन अगर 5 किलो चना आहार के रूप में देंगे तो उसका खर्च रु 70/= होगा। (महीने में 510 रुपये + 20 रु का घास) इस खर्चे के साथ वर्ष की सूद 18% पर रु 300/= जोडें तो एक महीने का खर्च (70×30+300) रु 2,400/= होगा। इस में हर दिन मिलने वाले गोबर का मूल्य रु 20/= एक यही महीने के लिए (30×20) रु 600 होगा।

दूसरी ओर एक ट्राक्टर की कीमत चार लाख होगी। उस रकम पर सूद रु 6000/= ठहरेगा। एक जोडी बैलों से एक दिन में एक एकड़ जमीन जोत सकते हैं। उसी के स्थान पर ट्राक्टर का उपयोग करें तो एक एकड जमीन केलिए आवश्यक डीजल का खरीद रु 320/= हो सकता है। ट्राक्टर का एक दिन का किराया कम से कम रु 700/= होगा। इस सब

के सामने एक बैलों की जोडी का खर्च कम ही पडेगा। छोटे छोटे खोतों को ट्राक्टर से जोतना कुछ कठिन होगा। पर बैलों से सुगम होता है।

राष्ट्रीय स्तर पर देखा जाय तो कृषि योग्य जमीन की एक यूनिट औसतन प्रति किसान 1.56 हेक्टार होगी। हरयाणा में यह 2.11 हेक्टार है। (यह सूचना भारतीय गणांक निवेदिका के आधार पर है)। एक बैलों की जोडी सात हेक्टार जमीन आसानी से जोत सकती है। आम तौर पर एक साधारण किसान एक बैलों की जोडी से इतने क्षेत्र में कृषि कर सकता है। हरियाणा में 7 हेक्टार प्रति यूनिट कृषि योग्य भूमि है। ऐसी यूनिटें कुल कृषि योग्य भूमि में 6% हैं। राष्ट्रीय धरातल पर यह 4% है (स्टाटिस्टिकल रिपोर्ट - हरयाणा 1995-96)। सात हेक्टार से छोटी यूनिटों के लिए ट्राक्टर उपयोगी नहीं हैं। आर्थिक दृष्टि से लाभदायक भी नहीं है। हरियाना में 7 हेक्टार से बडी यूनिटों की संख्या 91,658 हैं तो वहाँ ट्राक्टरों की संख्या 1,62,030 है। इसका मतलब है कि आवश्यकता से दुगुनी संख्या में ट्राक्टर वहाँ हैं। यह यही संकेत देता है कि हमारे देश में 95% किसानों को ट्राक्टर से बैल ही अधिक उपयोगी हैं।

राष्ट्र के धरातल पर बैलों और ऊँटों से चलनेवाला रवाणा कार्य (ट्रांस्पोर्ट वर्क) रेल और ट्रक से होनेवाले रवाणा कार्य से तीन गुना अधिक है। अगर यह सब कार्य डीजिल द्वारा ही होना है तो डीजिल के लिए देश को विदेशों पर अधिक आश्रित होना होगा। ऐसी स्थिति में खर्चा दुर्भर होगा। इस से बढ़कर डीजिल से उत्पन्न कालुष्य अधिक हानिकारक भी सिद्ध है। इस सब को मिलकर आर्थिक दृष्टि से देखेंगे तो हमारे देश के लिए बैल ही अत्यंत लाभकारी और उपयोगी सिद्ध होंगे।

अब तक हमने देशी गायों के बारे में ही थोडी जानकारी प्राप्त की है। गो माता का पुत्र वृषभ (बैल) राजा है। बैल भारत देश में खेती के लिए रीढ़ है। संसार में इतने सुंदर, समर्थ और शक्तिशाली बैल और कहीं नहीं हैं। हमारे बैल को ककुद होता है। उसकी सहायता से हल बाँधना और गाडी खींचना उसके लिए सरल होगा। विदेशी बैलों के साथ यह सुविधा नहीं है। देशी बैलों की क्षमता अधिक है। भैंसा और विदेशी बैल जहाँ हार जाते हैं वहीं देशी बैल कितने ही लाभकारी और सरलता से काम करनेवाले होते हैं।

उत्तर और पश्चिम भारत में ट्राक्टरों की उपयोगिता बहुत बढ़ी है। बैलों का उपयोग कम हो रहा है। इतना ही नहीं बैलों को निरुपयोगी समझकर उन्हें छोटी उम्र में ही बेच रहे हैं। पशु वधशालाओं में भेज रहे हैं। यह बहुत ही घोर कार्य है। हमें समस्त भारत की स्थिति पर विचार करना है। उसकी समीक्षा करनी है। भारत में छोटे छोटे जमीन के हिस्से अधिक हैं। यहाँ ट्राक्टरों से काम सभी जगह सरल नहीं है। यहाँ के 70% किसातों को दो एकड जमीन भी नहीं है। हमारे पूर्व प्रधान मंत्री लालबहादूर शास्त्री जी ने कहा था - ''भारत में एक लाख एकड जमीन से अधिक जमीन ट्राक्टरों से जोती नहीं जा सकती। हमरे गाँव ज्यादा छोटे - छोटे गाँव हैं। बहुत से गाँवों में पहुँचने के लिए अच्छे रास्ते भी नहीं हैं।''

ट्राक्टरों से जमीन को जोतने पर हल आवश्यकता से अधिक गहरायी तक पहुँचता है। परिणामतः जमीन में कृषि मित्र क्रिमियों का नाश होता है। यह फसलों के लिए एक प्रकार से शापवत है। बहुत

गहराई तक जोते जाने के कारण पानी की भी अधिक जरूरत पडती है। हमारे देश में वर्षा के लिए कोई नियम नहीं चलता है। अनेक प्रान्तों में केवल 30% वर्षा ही होती है। ऐसी स्थिति में पानी की कमी किसान की समस्या होगी।

गो संतति के मल-मूत्र कालुष्य का उत्पादन नहीं करते। इतना ही नहीं ये 'एंटि सेप्टिक' भी हैं। कालुष्य का निवारण कर वातावरण को शुद्ध करने की क्षमता से युक्त हैं। सूखा गोबर अथवा उपलों की राख धान्य को कीटकों से रक्षा करती है। धान्य को दीर्घकाल तक रखने के लिए उपलों की राख का उपयोग होता है। हल जोतते समय, पानी को कुओं से बाहर ले आने के समय, गन्ना और तेल के यंत्रों को चलाते समय बैल गोमूत्र और गोमल का विसर्जन करते हैं। ये खाद के रूप में और पर्यावरण की सुरक्षा में उपयोगी ही हैं। यही ट्राक्टर के उपयोग में उनसे निकलने वाली धूम्र और गैस समस्त वायु को कलुषित कर देते हैं। गोवंश से गो संतति बढ़ती है। लेकिन एक ट्राक्टर से दूसरा ट्राक्टर जन्म नहीं लेता है।

वातावरण में कालुष्य फैलाना ही नहीं ट्राक्टर के भाग सामन्यतः टूटते - खराब होते रहते हैं। घिस जाते हैं। ट्राक्टर शीघ्र ही निरुपयोगी हो जाता है। लेकिन गोवंश संतति के मर जाने पर भी उपयोगी होती है। उसका चर्म, सींग आदि सब मानव के उपयोगी हैं। गाय का समस्त शरीर खाद के रूप में परिवर्तित हो सकता है। यहाँ तक कि केवल सींग में गोबर भर कर जमीन में गाड़ दिया जाय तो भी मूल्यवान खाद बन जाता है।

बछड़ों का पोषण भार किसान पर सिर्फ दो - तीन साल तक ही रहता है। उस समय में भी उनके द्वारा प्राप्त गोबर और मूत्र भूमि और मानव के लिए उपयोगी ही रहेंगे। हमें अमेरिका जैसे विकसित देशों से होड़ लगाने की जरूरत नहीं है। क्योंकि अमेरिका को दुनिया की विशालता में केवल 2% मात्र प्राप्त है। उसी प्रकार संसार की आबादी में उसकी आबादी केवल 5% हमरी आबादी संसार की आबादी में 16% हैं। अमेरिका में केवल 2% कृषि पर आधारित हैं। हमारे देश में 70% कृषि पर आधारित हैं।

अमेरिका सांसार में पेट्रोल की उत्पत्ति में 33% का उपयोग कर रहा है। इतनी सामर्थ्य रखता है। हम उसका शतांश (100 का भाग) भी खर्च नहीं कर पा रहे हैं। असली बात यह है कि हमारे देश में संसार में प्राप्त तेल का 0.5% भी उपलब्ध नहीं है। हम हर वर्ष रु 5000 करोड़ रुपये का पेट्रोल और डीजल बाहरी देशों से खरीद रहे हैं।

पेट्रोल आदि से उत्पन्न कालुष्य की तो बात अलग ही है। कालुष्य निवारण और नियंत्रण के संबन्ध में अनेक कानून बने हैं। पेट्रोल और ड़ीजिल से चलनेवाले वाहनों की जाँच की जाती है। कालुष्य परिमाण से संबन्धित परीक्षाएँ होती है। आज सभी नगरों और महानगरों की समक्ष यही है।

भारत में कृषि योग्य भूमि प्रति व्यक्ति केवल आधे एकड़ की है। रु 70% किसान तो ट्राक्टर से काम कर ही नहीं सकते। लगभग 12 करोड एकड़ भूमि ऊसर और बंजर भूमि है। इसे गोवंश से प्राप्त गोबर और मूत्र डालकर उपजाऊ बनाया जा सकता है। इस पर ट्राक्टर का

कोई उपयोग नहीं हो सकता। भारत के एक कृषि मंत्री ने इधर पशुशक्ति सम्मेलन में स्पष्ट कहा था कि हमारे पास 7 करोड़ 40 लाख बैल, 80 लाख भैंसे हैं। इनसे हर वर्ष दस हमार करोड रुपये के मूल्य की चार हजार करोड 'हार्सपावर' की शक्ति प्राप्त होती है। गोवंश से प्राप्त होनेवाली शक्ति कालुष्य का निवारण कर सकती है। दूध का पाउडर, रसायनिक खाद, हानिकारक सूक्ष्म जीवों की दवाएँ आदि पर होनेवाले खर्चे से हम बच सकते हैं, अगर हम गोवंश से सहायता प्राप्त करने की योजना बनाएँगे तो।

भारत में बैलों और बैल गाडियों द्वारा 7 हजार लाख टनों (मानी 70%) की उत्पत्तियों, कृषि तथा अन्य, का रवाणा चल रहा है। इस से यह सिद्ध होता है कि अन्य रवाणा साधनों से बैलों द्वारा रवाणा प्रधान अंश है। ट्राक्टरों से 30% से अधिक कृषि कार्य संपन्न नहीं हो रहा है। विदेशी विधान के अनुसार ट्राक्टरों से कृषि भारतीय किसान के लिए लाभदायक नहीं है।

गाय के बछडों की चुस्ती के सामने भैसों के बछडों की निष्क्रियता स्पष्ट है। इससे बैलों की विशेषता स्पष्ट रेखांकित होती है। एक बूढ़ी गाय के गोबर से चार - पाँच लोगों के परिवार के लिए इंधन शक्ति मिलती है। चूल्हें जल सकते हैं। अगर 'किरोसिन' से भी दो व्यक्तियों के लिए खाना बनाना है तो कम से कम आधे लीटर 'किरोसिन' चाहिए। गोबर पर तो विदेशी पैसों का खर्चा नहीं होता।

भारत में अगर पूरी तरह ट्राक्टरों का उपयोग करना चाहें तो लगभग दो करोड ट्राक्टर चाहिए। इतनी संख्या में ट्राक्टरों को खरीदने

के लिए आठ हमार करोड रुपये चाहिए। यह हमारी शक्ति से बाहर है। इस पर इन्हें चलाने के लिए सैकडों करोड़ों की डीजिल चाहए। इसे भी हमें बाहरी देशों से लेना है। गो संतति द्वारा प्राप्त खाद रसायनिक खाद से पाँच गुनी फसल दे सकती है। वैसे रसायनिक खाद से जमीन बंजर भूमि (ऊसर क्षेत्र) बनने की पूरी संभावनाएँ हैं। देशी सेन्द्रिय खादों से भूमि को पूरी रक्षा मिलती है।

भारत की आर्थिक व्यवस्था में पशु शक्ति के लिए अधिक प्रधानता है। हमारे देश में पशु शक्ति से लग भग 4 करोड हल चलते हैं। 1.1/2 करोड़ बैल गाडियों को चलानेवाली शक्ति पशु शक्ति ही है। ऐसी पशु शक्ति को और बढाने की जरूरत आज है। उसे बढाने के लिए हमें वैज्ञानिक पद्धतियों का अनुसरण करना है। इससे कृषि उत्पत्तियों और रवाणा की सुविधाओं में बढोत्तरी संभव है। बैल गाडियों को रब्बर चक्र लगाने से उनकी क्षमता बढ़ती है। सुविधा भी बढ़ती है। गुजरात के एक समय के गवर्नर श्रीमन्नारायण जी ने जापान से लौटकर यही बात कही है। उन्होंने कहा था कि ''आज जापान का किसान भी छोटे और बडे ट्राक्टरों के बदले बैल और गायों का उपयोग कर रहे हैं। एक किसान ने पूछने पर बताया कि 'हम आज तक मशीन और रसायनिक खादों का उपयोग करते रहे हैं। तत्परिणाम स्वरूप हमारे खेत नाश हो रहे हैं। इसे हमने जान लिया है। इसीलिए अब गाय और बैलों का उपयोग करना आरंभ किया है। ये यंत्र न तो दूध देते हैं और न ही गोबर।''

आधुनिक विश्वविख्यात वैज्ञानिक ऐनस्टीन ने भारत को एक संदेश भेजा था। उसका सार था -'' ''भारतीयों को रसायनिक खाद और

ट्राक्टर से अनुबद्ध कृषि के जाल में फँसना नहीं चाहिए। क्योंकि इन पद्धतियों का पालन करनेवाले अमेरिका में भूमि की उत्पादक शक्ति 400 वर्षों में लगभग समाप्त प्राय है। भारत में हजारों वर्षों से गोवंश पर आधारित कृषि है। फिर भी भूमि की उत्पादिंकता में कमी नहीं आयी है।'' 1951 में ऐनस्तीन ने एक और बात भी कही है - ''ट्राक्टर से जुती भूमि में एक हजार वर्ष बाद घास भी उपजेगी नहीं।'' भोपाल में और मीरट में बैलों से खींची जानेवाली ट्राक्टर बनी है। यह किसानों के लिए अत्यंत उपयोगी है। आज की भारतीय कृषि व्यवस्था के लिए आवश्यक विशेष औजारों की तैयारी के लिए विशिष्ट अनुसंधानों की जरूरत है। इस क्षेत्र में हम बहुत पीछे हैं।

हमारे देश के लिए सर्वोत्तम ट्राक्टर बैल ही है। बैलों द्वारा कृषि के लिए प्रोत्साहन मिलना है। विदेशों का अंधा अनुकरण भारत की आर्थिक व्यवस्था के लिए ठीक नहीं है। भारतीय पशु संपत्ति को वधशालाओं की ओर नहीं भारतीय आर्थिक व्यवस्था की उन्नति की ओर ले जाना आज की आवश्यकता है।

9. चलती शक्ति का केन्द्र है गाय

भारत में आज इंधन वायु (गैस) और बिजली की कमी अधिक है। हमारे पास उपलब्ध सस्ते साधानों और अधिक कीमती तथा व्यय साध्य साधनों दोनों से गैस की उत्पत्ति हम कर रहे हैं। आज 19 किलो गैस सिलिंडर मार्केट में रु 1000 से अधिक कीमत पर मिल रही है। यह और बढ़ सकती है। बडे बडे बाँधों का निर्माण कर जल विद्युत का उत्पादन कर रहे हैं। डीजिल और कोयले से ''थर्मल'' विद्युत (बिजली) की

उत्पत्ति कर रहे हैं। इतना करने पर भी वह हमारी जरूरतों के लिए काफी नहीं है। इतना ही नहीं इन प्रक्रियाओं में कुछ विपत्तियाँ भी छिपी रहती हैं। जल विद्युत केंन्दों के पास बांधों के टूटने का डर हमेशा रहता है। बान्धों के पीछे मिट्टी जम कर हमारे लिए समस्या उत्पन्न करती है। 'थर्मल' विद्युत के लिए हमारे लिए आवश्यक सुविधाएँ और सामग्री की भी कमी है।

विदेशी भाव - दास्य में डूबे हम अपनी गो संपत्ति से मिलनेवाले गोबर और गो मूत्र की अद्‌भुत शक्ति का अवमूल्यन कर रहे हैं। गोबर से अत्यंत भारी पैमाने पर उत्पत्ति संभव है। गोबर प्लांट से गैस उत्तप्ति के बाद बचनेवाला व्यर्थ अत्यंत मूल्यवान सेन्द्रिय खाद है। फसलों के लिए उपयोगी है। हमारी आर्थिक व्यवस्था के अनुरूप हमारी गो - संपत्ति का उपयोग आज हम नहीं कर रहे हैं। इस के विपरीत उनको मार कर मांस का निर्यात कर रहे हैं। यह एक व्यापार बन गया है। गोबर और गो - मूत्र से गैस की उत्पत्ति का बडे पैमाने पर विकास हो तो हम आर्थिक दृष्टि से विकास पायेंगे। अनुसंधान से गैस की उत्पत्ति करेंगे तो गैस को सिलिंडरों में भर कर देश भर में विनियोग कर सकते हैं।

गोबर गैस प्लांट से 'किर्लोस्कर इंजन' को जोडकर बिजली की उत्पत्ति (अहम्मदाबाद के पास ईडर में) की जा रही है। ऐसे छोटे छोटे यूनिट गाँव गाँव में इस प्रकार हों तो हमारी बिजली की आवश्यकताओं की संपूर्ति संभव हो सकती है। इस के लिए गाँवों में गोशालाओं और गोसदनों की जरूरत भी है। भारी यंत्र - सामग्री से हैड्रो यूनिट और थर्मल स्टेषनों के स्थान पर छोटी ऐसी यूनिटों से उत्पत्ति को बढाना आज की

आवश्यकता है। आसानी से और कम खर्चे में यह कार्य साधा जा करता है। इतना ही नहीं ऐसी यूनिटों में विपत्तियाँ भी नहीं होगीं। सरकार पर आधारित हुए बिना भी इन यूनिटों की स्थापना से स्वयं संवृद्धि संभव है।

एक गैस प्लांट में 10 किलो गोबर से 12 क्यूबिक फुट गैस प्राप्त हो सकती है। इस प्रकार प्राप्त गैस में आधी से एक व्यक्ति के लिए खना तैयार हो सकता है। हमारी पशुसंपत्ति से प्राप्त होनेवाले गोबर से अगर गैस उत्पन्न किया जाय तो साठ करोड़ की आवश्यकताओं की पूर्ति हो सकती है। आज तो गैस क्रूडाइल से ही मिल रही है। दूसरी ओर आइल की कीमतें भी बढ़ रही हैं। इसी तरह गैस के लिए डिमांड भी बढ़ रही है। पशु तो घास - पत्ते खाकर गोबर देते हैं। गोबर से गैस प्लांट और उससे बिजली प्राप्त हो सकती है। इस दृष्टि सेभी पशुओं की सुरक्षा आवश्यक है। पेडों को काटना बंध करना हैं। तो पर्यावरण कालुष्य कम हो जाता है। इससे जनता की सेहत बन जाती है।

गैस प्लांट में जिस प्रकार गोबर सडता है उसी प्रकार खाद के साथ पत्ते आदि भी सड कर सेन्द्रिय खाद बनते हैं। रवाद के गड्ढों में गोबर और घास - पत्ते 'आक्सिजन' के साथ सडते हैं। उसमें से 'कार्बन डयाक्सैड' निकलता है। गैस यंत्रों में 'आक्सिजन' के बिना ही खाद के गड्ढों की खाद दुगुना नैट्रोजन युक्त होती है। फसल को बढ़ाने में नैट्रोजन का योगदान होता है। नैट्रोजन से अधिक 'ह्यूमस' का योगदान रहता है। क्योंकि वह जमीन में जीवाणुओं को समृद्ध करता है। गैस प्लांट से मिलनेवाली खाद में 'ह्यूमस' के अधिक होने के कारण वह खाद अत्यंत उपयोगकारी और लाभदायक है।

हर पशु औसतन 10 किलो गोबर देता है। इसमें से कुछ ही खाद बनता है। एक तिहाई तो उपलों को बनाने में खर्च होता है। उस रूप में गोबर खाद के स्थान पर राख बन जाता है। उपलों की आग में से केवल 13% आग ही उपयोग में आती है। बाकी व्यर्थ हो जाती है। गैस के चूल्हे के द्वारा उत्पन्न उष्णता का 60% उपयोग होता है। खाद के टीले में 1% नैट्रोजन होता है तो गैस प्लांट की खाद में 2% होता है।

देश में प्राप्त गोमूत्र और गोबर का अगर उपयोग कर सकें तो बहुत बडी मात्रा में सेन्द्रिय खाद और गोबर गैस की उत्पत्ति की जा सकती है। इससे देश की आवश्यकताओं को बहुत सीमा तक पूरा कर सकते हैं। 24 करोड पशु - संपदा द्वारा प्रति दिन 26 लाख टन गोबर मिलता है। 25 किलो गोबर से एक घन मीटर गैस उत्पन्न होती है। इस प्रकार हर दिन 10 करोड घन मीटर गैस प्राप्त होती है। यह 20 करोड लोगों की जरूरतों के लिए काफी है। इससे अन्य देशों से आइल और किरोजिन की आयात कम होती है।

हर वर्ष 90 टन गोबर से 2% के अनुसार भी देखा जाय तो हमरी खेतों के लिए आवश्यक नैट्रोजन भी मिल जाता है। पशुओं के आहार में अनेक पोषक तत्व होते है। परिणामतः उनसे प्राप्त होनेवाली सेन्द्रिय खाद से भी भूमि की उत्पादकता बढती है। इतना ही नहीं ऐसी खाद से उत्पन्न धान में स्वाद और ताजगी आते हैं। इससे बढ़कर सामान्य रोगों से एक प्रकार की रक्षा मिलती है। सन् 1981 में नैरोबी में संपन्न एक शक्ति महासभा में उस समय की हमारी प्रधन मंत्री श्रीमती इंदिरागाँधी ने कहा है कि भारत की पशु शक्ति देश में स्थापित विद्युत केन्द्रों से

ज्यादा शक्ति प्रदान कर सकती है। उस समय की कीमतों के अनुसार पशु शक्ति से 6 हजार करोड रुपयों का दूध, 5 हजार करोड़ रुपयों की ढकेल - शक्ति (रवाणा शक्ति), 3 हजार करोड रुपयों की सेन्द्रिय खादें, 2 हाजार करोड की गैस उपलब्ध होते हैं। इस प्रकार 6 हजार करोड रुपयों के आर्थिक लाभ का अंदाजा था।

आज आनेक प्रान्तों में गोमूत्र से दीवार की घडियाँ चल रही हैं। गोमूत्र से संप्राप्त बिजली से क्यालुक्युलेटर (गणक यंत्र), ट्रान्सिस्टर रेडियो, छोटे टेलीविजन सेट, ट्यूब लाइट आदि चलाये जा रहे हैं।

सन् 1998 जनवरी में प्रयाग के माघ मेले में उक्त सब का प्रदर्शन एक विशेष आकर्षण का केन्द्र था। सब की प्रशंसा उसे मिली है। गो रक्षा संस्याओं द्वरा गोमूत्र से बनी दवाएँ, गोबर गैस प्लांट, सेन्द्रिय खाद, कीटक नाशनी पद्धतियाँ, बिजली की उत्पत्ति आदि से संबन्धित प्रदर्शनशाला का भी निर्वाह किया गया। आज के बिजली - उत्पत्ति - केन्द्रों से अधिक बिजली की उत्पत्ति पशु धन से संभव है। 40 हजार मेगावाट (लगभग 27 हजार रुपयों के मूल्य का) पशु संपत्ति द्वारा उत्पन्न हो सकते हैं। इससे पर्यावरण - कालुष्य की समस्या का भी हल हो सकता है।

आज भारत में 90% कृषि शक्ति गो - संतति द्वारा ही प्राप्त है। हल जोतना, गन्ने आदि के कोलहू चलाना, पानी की सिंचाई, वजन ढोना और रवाणा करना आदि काम बैलों द्वारा हो रहे हैं। यह सब पेट्राल और डीजिल द्वारा हो तो आज के खर्चे से सौ गुना खर्चा अधिक बढेगा। इस से विदेशी धन का खर्चा भी बढेगा।

देश की पशु संपत्ति का सही उपयोग सही ढ़ंग से हो तो बिजली की उत्पत्ति भी दुगुनी हो सकती है। अन्यथा बिजली का खर्च ही 30 हजार करोड तक निकलेगा। यह बहुत अधिक भारी पडेगा।

हर बडे गाँव में गोशाला या गो सदन की स्थापना आज की आवश्यकता है। सारे गोबर को इकट्ठा कर गोबर प्लांट का निर्माण भी करना है। स्थानीय आवश्यकताओं के लिए गोबर गैस से बिजली की उत्पत्ति करनी है। जहाँ तक हो सके उन को पूर्ण करना है। इससे सामान्य की अवश्यकता की पूर्ति होगी। सामान्य को सरकार पर निर्भर होना नहीं होगा। अगर 100 पशु हों तो उनसे एक मेगावाट बिजली की उत्पत्ति की जा सकती है। ग्रामीणों को खाना पकाने के लिए गैस भी मिल सकती है। पंजाब और तमिलनाडु जैसे राज्यों की जनता को राजनैतिक पार्टियों के आकर्षक वरदानों की ओर झुकने की जरूरत आज नहीं हो रही है। क्योंकि आज उक्त सहूलितें अधिक मात्रा में वहाँ हैं। स्थानीय आवश्यकताओं की पूर्ति सरलता हो सकती हैं तो सरकार पर आधारित होने की क्या जरूरत है?

ईडर (गुजरात) में प्रयोगशील डॉ. कुवरजी भाई जादव के अनुसार एक गाय के दस किलो गोबर से हर दिन 0.34 घन मीटर बयोग्यास उत्पन्न हो रही है। देश के कुल 19 करोड पशुओं से 6.46 करोड बिजली तैयार होगी। इस की उत्पत्ति के लिए प्रति यूनिट पर 50 पैसे के खर्चे के हिसाब से 4.94 करोड रुपये होंगे। यह बिजली मार्केट के 2 रुपये प्रति यूनिट के अनुसार 19.76 करोड मूल्य की होगी। इस प्रकार उत्पन्न विद्युत ग्रामीण बिजली - आवश्यकताओं को पूरा करने में प्रधान साधक होगा।

10. गाय और पर्यावरण

देशीय पशु से प्राप्त होनेवाले गोमूत्र और गोबर किसी भी तरह मलिन नहीं है। ये मलिनता को शुद्ध करनेवाले साधन हैं। ये पर्यावरण को नुकसान पहुँचानेवाले नहीं है। ये पर्यावरण में व्याप्त कालुष्य का निवारण करते हैं। ये पर्यावरण के मित्र हैं। कूडा, व्यर्थ पदार्थ, पत्ते सब्जियों के छिलके आदि पर गोमूत्र को छिडकने से मच्छर आदि की उत्पत्ति रुक जाती है। वे सब सड कर सेन्द्रिय खाद बनते हैं। इस प्रकार की खाद में 1% और गैस प्लांट की खाद में 2% नैट्रोजन रहता है।

प्राचीन काल के वैभव शिखरों पर अधिष्ठित सभ्यता और संस्कृति के वारिस हैं हम। ऐसे हम विदेशी सरकारों के समय में मात्र शारीक रूप से ही नहीं मानसिक धरातल पर भी उनके दास बन गये हैं। वास्तव में यह हमरा दुर्भाग्य ही है। विदेशों में जो विदेशियों के अनुकूल है वही हमारे लिए भी अच्छा है समझ बैठे हैं हम। यह एक भ्रम ही है। इसी भ्रम के जाल में फँसे हैं। स्वतंत्रता के बाद भी यह जाल और सुदृढ हुआ है। हमारी गो संपत्ति से संबन्धित विचारों में तो यह भ्रम निरूपित हो गया है।

दिल्ली जैसे महानगरों में कांक्रीट, सिमेन्ट, मार्बल जैसी मूल्यवान सामग्री से साफ - सुतरी कॉलनियाँ बन गयी हैं। उनमें हर परिवार के पास किसी न किसी प्रकार का मोटार वाहन अवश्य है। उसे रखने के लिए गैटेज भी बहुत से घरो के साथ हैं। पश्चिमी देशों के अनुसरण में अवश्य कुत्ते पालते हैं। लेकिन गो - माता को पालने की व्यवस्था कहीं नहीं है। आश्चर्य की बात है कि कालुष्य को व्याप्त करनेवाले वाहन तो

सब को चाहिए। कितनी भी गंदगी फैलाये, कुत्ता अवश्य चाहिए। ये ही आधुनिक जीवन के प्रतिमान बन गये हैं। लेकिन गोमाता का आदर करना कोई नहीं चाहता। हमें अपनी सोच बदलनी है। पर्यावरण की रक्षा में समर्थ गायों की सुरक्षा का भार अपनाना चाहिए। उन्नत वर्गों के वास प्रान्तों में गो संरक्षण की व्यवस्था होती है तो पर्यावरण का कालुष्य अवश्य कम होता है। काबू में रहता है। गोबर पर पडी किरणों के प्रवेश से दुष्प्रभाव दूर होता है। इस का निरूपण भी हो चुका है। इसी लिए हमारे घरों के पास ऐसी व्यवस्था का आयोजन होना जरूरी है। गोमय से लीपा - पोती की व्यवस्था, खास कर के घर के प्रांगण में, अधिक लाभकारी सिद्ध होगी।

आजकल एक और वाद प्रतिध्वनित हो रहा है। क्या हर व्यक्ति को और हर परिवार के लिए गो - पोषण करना संभव है? आज परिवार अलग अलग हैं। एकल परिवार अधिक हैं। संयुक्त परिवार नहीं के बराबर हैं। सब अपने आपने कामों में व्यस्त हैं। खास कर यह शहरों में ज्यादा है। सामूहिक सामाजिक जीवन को आज लगभग भूल गये हैं। आधुनिक जीवन अर्थ प्रधान है। पैसा ही परमात्मा है। अगर एक परिवार नहीं तो चार परिवार मिलकर दस गायों की पोषण व्यवस्था कर सकते हैं। उससे अच्छा दूध मिल सकता है। दूध के साथ घी, दही आदि प्राप्त होते हैं। इन से अपने अपने परिवारवालों की तंदुरुस्ती ठीक रख सकते हैं। आनंद पा सकते हैं। इस के साथ साथ अपने आसपास के पर्यावरण को कालुष्य रहित भी बना सकते हैं। आजकल पश्चिमी देशों में भी सामूहिक जीवन के प्रति आकर्षण बढ़ रहा है। लेकिन यहाँ पर तो हम पडोसियों से भी मिलने का प्रयास नहीं करते हैं। इस कारण चोरियाँ बढ़

रही हैं। हत्याएँ और धावा बोलना जैसी घटनाएँ आज हर दिन की घटनाएँ हो रही हैं।

गायों को पालनेवाली जगहों को खासकर कॉलनियों से दूर रखना आत्महत्या सदृश है। गोबर और गोमूत्र को गो मल समझने के कारण यह सब हो रहा है। प्रधानतः उजले कपडे पहननेवालों की यह भावना है। इसीलिए गायों को जनावासों से दूर रखा जा रहा है। इस का एक कारण पाश्चात्य प्रभाव हो सकता है। शहरी लोगों को अपनी समर्पित भावना से मुक्त होना है। गोबर और गोमूत्र से गैस प्लांट और विद्युत की व्यवस्था हो सकती हैं। यह अत्यंत लाभप्रद है। इस दिशा में सोचना आज आवश्यक है।

गोमय और गोमूत्र को सेन्द्रिय खाद के रूप में कीटक नाशिनी के रूप में देखने में विज्ञता है। इस ओर हमें बढ़ना है। समझना है कि इस से प्रजा को विषरहित और सुरुचिपूर्ण धान्य और उससे आहार मिलेगा। गाँवों में कुछ परिमाण में उपलों का विनियोग होने पर भी अधिक खाद के रूप में उपयोग में है। वैसे तो उपलों के उपयोग से पेडों का काटना कम होता है। इन से वृक्षों की रक्षा और वनों का विस्तार होता है। अधिक संख्या में पेड पर्यावरण की दृष्टि से अत्यंत आवश्यक हैं। हमारे देश में चिरपुंजी प्रांत में वर्षा अधिक होती है। वहाँ पर भी पेडों को काटने से वहाँ के क्षेत्र भी ऊसर क्षेत्र बनते जा रहे हैं। चिरपुंजी प्रान्त का सम्मान आज घटता जा रहा है।

देश में गोशालाओं और गोसदनों की स्थापना के साथ साथ वृक्षा-रोपण (पेडों को लगाना) का कार्य भी आवश्यक है। देशी गायों की

संतति को बढाना है। गोबर के लिए गोचर विस्तार करना है। पेडों के विस्तार से ''ओजोन'' में रंध्र नहीं होंगे। 'ओजोन' पृथ्वी की रक्षा करता है। 'ओजोन' में पडनेवाले छेदों से आज दुनिया भयभीत है।

'ग्लोबलैजेशन' और स्वेच्छा व्यापर से संबन्धित सन् 1991 का एक नया विधान हमारे देश में 100% मांस निर्यात को लक्ष्य में रख कर पशुवध यंत्रों और पशुवध शालाओं को प्रोत्साहित करने की दिशा में है। हम आगे बढ़ रहे हैं? इस से विश्व - व्यापार - संस्था को कम दामों में मांस मिलता है और वहाँ के उद्योगों द्वारा उससे अधिक लाभ वे पाते हैं। दूसरे शब्दों में कहें तो यूरोपीय उद्योग व्यवस्था को यह अधिक बल देनेवाला ही होता है। यही हमारी भारतीय संस्कृति के अभिन्न अंश जीने और काम करने की हक को और ऐसी भावना को ठेस पहुँचाता है। हमारा वाद 'जिओ और जीने दो' वाला वाद है। वाणिज्य और रवाना के शुलक वसूल करने के संबन्ध में एक समझौता (GATT) हुआ है। उसके नियमों में 11 वाँ अधिनियम कहता है कि आयात - निर्यातों पर किसी प्रकार की पाबंदियाँ रखना न्यायोचित नहीं है। सांस्कृतिक, आर्थिक तथा पर्यावरण के संबन्ध में आवश्यक होने पर भी किसी प्रकार की पाबंदी इस के आधीन कोई भी देश कर नहीं रख सकता। यही उस नियम की परिभाषा है।

केन्द्र और प्रांतीय सरकारों की सरकारी शाखाएँ पशुवध शालाओं की स्थापना के लिए सरकारी ग्रांट और अनेक प्रकार की सुविधाएँ (आर्थिक भी) प्रदान कर सकती हैं। केन्द्र पर्यावरण शाखा के सन् 1996 वर्ष के एक प्रतिवेदन के अनुसार पिछले पाँच वर्षों में कम से कम

32,000 पशु वध शालाएँ अधिकार - अनधिकार स्रोतों से निर्मित हुई हैं। उससे पहले अधिकार पूर्वक, कानूनन, बनी पशुवध शालाएँ केवल 3,600 थीं। ये भी अनुमान के अनुसार वास्तव से कम भी हो सकती हैं। सन् 1975 के कुल मांस निर्यात 6,195 टन था। लेकिन सन् 1995 तक मानी 20 वर्षों में निर्यात 1,37,334 टन तक पहुँच गया। अर्थात् 20 गुना बढ़ गया है। गायों और भौंसों के मांस का निर्यात् 1975 में 3412 टन तो 1995 में 1,25,282 मानी 33.7 गुना बढ़ गया। इन सब निर्यातों का मूल्य सन् 1975 में 85,17,000 डालर था तो सन् 1995 में 14,45,50,000 डालर का हो गया।

हर वर्ष बढनेवाली पशु संख्या से अधिक पैमाने में मांस का निर्यात किसकी सूचना देती है? पशु संपत्ति की कम होने की गति को ही सूचित करती है न! सन् 1951 में हर 1000 व्यक्तिों के लिए 700 पशु थे तो वही संख्या सन् 2001 तक 400 तक घट गयी। ऐसे ही चलेगा तो सन् 2011 तक 200 तक घटेगी। उपयोगी जनवरों को निरुपयोगी घोषित कर उन्हें वधशालाओं में भेजना दु:खदायक नहीं तो और क्या? हर वर्ष बंग्लादेश और पाकिस्तान को 20,000 पशु संतति लुकी - चुपी रवाणा होती है।

हमारी देशी पशु जाति को वहाँ के वातावरण को सहने की क्षमता है। उनमें रोग निरोधक शक्ति के साथ विशेष प्रयोजन, सामाजिक, सांस्कृतिक मूल्य हैं। इसीलिए उनके रक्षण की अत्यंत आवश्यकता है। ये पशु भारत में कृषि के लिए आधारभूत सजीव दोस्त हैं। सेन्द्रिय खाद और शक्ति की स्रोतस्विनियाँ हैं। मांस और चर्म के निर्यात के द्वारा चलनेवाला व्यापार संबन्धी वृद्धि अभिवृद्धि नहीं है। वह विनाश के लिए

बनाया गया एक मार्ग मात्र है। एक पशुवधशाला से 20 करोड रुपये के पशु निर्यात हो रहे हैं तो वहाँ मारे जानेवाले पशुओं की सहायता से यहाँ उत्पन्न होनेवाली खाद और शक्ति का मूल्य 910 करोड रुपये हम खो रहे हैं। इस रीति से हम आर्थिक नाश मोल रहे हैं। इस कारण भारत में कृषि व्यवस्था का नुकसान होगा और गरीबी बढेगी।

भारत की कृषि व्यवस्था में औद्योगिक विकास से संपन्न देशों से अधिक पशुओं की आवश्यकता है। पशुओं के प्रति दृष्टिकोण में अंतर है। विदेशों में कृषि उत्पत्तियों से 'डयरी' उत्पत्तियों के लिए और मांस के लिए पशु पोषण होता है। भारत में 'डयरी' और कृषि के लिए उनका पोषण किया जाता है। इन के लिए संकर जाति के पशुओं की सृष्टि देशी पशुओं के लिए एक थपेड ही है। सन् 1996 में विश्व की आहार - कृषि संबन्धी संस्था से एक प्रतिवेदन निकला था। उसके अनुसार भारत में देशीय पशु जातियाँ अति शीघ्र गति से ओझल हो रही हैं। आन्ध्र प्रदेश के पुंगनूरु से संबन्धित विशिष्ट जाति की संतति लगभग अदृश्यप्राय है। विश्व विख्यात 'ओंगोलु' जाति की संतति की स्थिति कुछ इसी प्रकार की है। स्वादेशी जाति की गायें आज 32 प्रकार की ही हैं। कृषि कार्य को स्थिरता मिलनी है तो पशुओं और फसल के प्रकारों में पुनर्विकास होना है।

पर्यावरण कालुष्य निवारण के लिए पशुओं की रक्षा और उनका पोषण चाहिए। पशु रक्षण पर ध्यान न दिये जाने के कारण आज नदियाँ पानी के कालुष्य की चुंगुल में आगयी हैं। शास्त्रज्ञों का कथन है कि आज पशुवध के कारण भूकंप आ रहे हैं और उनसे जनों का विनाश भी हो रहा है।

गो संतति की रक्षा से आज भारत की आर्थिक व्यवस्था का विकास जुडा हुआ है। मांस और खाल के निर्यात के बदले गोपालन और संरक्षण को संस्थाएँ स्वीकार करती हैं तो कितने ही गुनों की आमदनी हो सकती है। उससे पर्यावरण की शुद्धि और सुख - समृद्धि संभव है। उसका परिणाम ही जनता के लिए आनंदमय जीवन की प्राप्ति। हमारा दृष्टिकोण हमारी आर्थिक व्यवस्था और संस्कृति के अनुकूल और संपूरक होना चाहिए।

11. गो-संरक्षण के लिए आन्दोलन

स्वामी दयानंद सरस्वती ने सन् 1881 से 1892 तक गो संरक्षण के लिए आन्दोलन किये हैं। उन्होंने ''गो करुणानिधि'' शीर्षक पुस्तक भी लिखी है। अंग्रेजी पालकों को समझाने के प्रयास किये हैं। उनके प्रभाव से बाद में कुछ अंगेजी अधिकारी तो गो मांस भक्षण छोड ही दिया था। भारतीयों में गोसंरक्षण पर अभिप्राय जुडाने के प्रयत्न किये हैं।

भारत कृषि प्रधान देश है। आज भी इस देश में 70% जनता कृषि पर आधारित होकर जीवन बिता रही है। देश की राष्ट्रीय आमदनी में 26% कृषि से मिल रही है। कृषि का आधार गोसंतति ही है। गाय और कृषि कार्य अन्योन्याक्षित हैं। इसी लिए आज इस संबन्ध को ''खेत क्रांति'' नाम दिया गया है। ऋषि दयानंद ने इसी दृष्टि से ''गो कृष्यादि रक्षिणी सभा'' यानी गाय और कृषि की रक्षा के लिए एक संघ की स्थापना की सोच का प्रचार किया है। उनकी पुस्तक ''गो करुणानिधि'' सन् 1937 में पहली बार प्रकाशित हुई। यह दो भागों में है। प्रथम भाग में गो जाति के पशुओं को मार कर खाने के स्थान पर उनसे प्राप्त

होनेवाले दूध, घी, दही आदि के सेवन से ही अधिक प्रयोजन मिलने की बातें वर्णित हैं। इसी प्रकार मांसाहार से हानियाँ और शाकाहार की महत्ता उद्घोषित हैं। दूसरे भाग में गो आदि पशुओं के रक्षण के लक्ष्य से स्थापित ''गो रक्षिणी सभा'' की नियमावली स्पष्ट की गयी है। सभा के नामकरण पर व्याख्या करते हुए ऋषि दयानंद ने कहा है - ''यह सभा 'गोकृष्यादि रक्षिणी सभा' है। इस प्रकार का नामकरण मैने क्यों किया? इसलिए कि इस के द्वारा गो आदि पशुओं की रक्षा और कृष्यादि कर्मों से मनुष्यादि जातियों को उत्तम सुख - सुविधाएँ प्राप्त हो सकती हैं। यही मेरा उद्देश्य है।'' भारतीय संविधान के 48 वें सूत्र में लगभग इसी प्रकार के शब्दों से अभिव्यक्ति की गयी है। कृषि और पशुपालन संस्था राज्य में कृषि और पशुपालन को अधुनिक एवं वैज्ञानिक पद्धतियों में समुन्नत बनाने के प्रयत्न करेगी। गायें, बछडे और दूध देनेवाली पशु, वजन ढोनेवाले जानवर आदि की जातियों को ठीक रखने की आवश्यकता है। उनकी हत्या को निरोधित करने के प्रयत्न करती है - यही संस्था का कार्यक्रम भी होगा।

12. स्वतंत्रता का आन्दोलन और गाय

भारत के स्वतंत्रता - आन्दोलन में गाय प्रधान अंश है। गाय और उसके संरक्षण को आन्दोलन से संबद्ध नेताओं ने प्रमुख अंश स्वीकार किये हैं। स्वतंत्र भारत में गो संरक्षण के लिए अनेक कार्यक्रम करने के संबन्ध में वादे किये हैं।

स्वतंत्रता - आन्दोलन में हमारे राष्ट्रीय नेताओं ने कहा क्या है? उन्हीं के शब्दों में लीजिए -

• ''स्वतंत्रता मिलने के बाद पाँच मिनिटों में एक लेखिनी के प्रयोग से (एक शासन से) गोहत्या रोकी जायेगी।''

- लोकमान्य बालगंगाधर तिलक।

• ''भारत के संविधान में गोहत्या निषेध ही प्रथम अंश होगा।''

- पंडित मदनमोहन मालवीय।

• ''मेरी सोच यह है कि जनता की मृदु भावनाओं की अवहेलना नहीं की जा सकती। यह किसी प्रकार का सभ्याचार नहीं है। भारतीयों के मन और मस्तिष्कों में गाय के प्रति पूज्य भाव है। गोहत्या का निषेध ही वैज्ञानिक और हेतुबद्ध कार्य है। गोवध निषेध के लिए बडे पैमाने पर लोकमत को समीकृत करने की जरूरत है। गोरक्षा ही हमारा जीवन आदर्श है। इस से दूर भटकना हमारी बलहीनता होगी। चुनावों में जो गोरक्षा की प्रतिज्ञ करते हैं उन्हीं को मत देना है। आज जैसा है वैसा चलने पर सरकार टिक नहीं पायेगी।''

- राजर्षि पुरुषोत्तमदास टांडन्।

• ''मैं गाय को सौभाग्य और आर्थिक समृद्धि प्रदान करनेवाली माता के रूप में भावित करता हूँ। गाय से प्राप्त होनेवाली उत्पत्तियों (दूध, दही, घी, गोमूत्र और गोमय) का महत्व हमें समझना है। दूसरों को समझाना है। मेरी दृष्टि में गोरक्षण स्वराज्य निर्माण से किसी भी मात्रा में कम नहीं है।''

- महात्मा गांधी।

• ''हमारी संस्कृति का आधार कृषि है। कृषि संस्कृति का आधार गो संतति है। श्रम से उसकी रक्षा करनी है। गो समृद्धि के प्रयत्नों को

जारी रखना है। गो संतति का नुकसान कृषि और आर्थिक व्यवस्था का नुकसान ही है।''

- सरदार वल्लभ भाई पटेल।

• ''संपूर्ण गोवध निरोध ही जनता की आज्ञा है। इसे प्रधान मंत्री को स्वीकार करना ही पडेगा। अगर हम गायों की रक्षा नहीं कर पायेंगे तो हमारी आजादी के फल का सार खोना ही होगा।''

- आचार्य विनोबा भावे।

स्वतंत्र भारत में गो रक्षण के बारे में हमारी कल्पना, हमारी कार्य दिशा कुछ हद तक महात्मा गांधीजी के विचारों से स्पष्ट होती हैं। गांधीजी कहा करते थे कि 'गो रक्षा में विश्वास नहीं रखनेवाले व्यक्ति को हम हिन्दू के रूप में भावित नहीं कर सकते।' गो रक्षा को वे आजादी साधना से अधिक प्रमुखता देते थे। भारतीय संविधान में गोरक्षण के बारे में आदेश सूत्रों में प्रस्तावित तो किया गया है, फिर भी हमारे प्रथम प्रधान मंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू जी के कारण गोरक्षा सिर्फ एक आर्थिक

इस जगत में गायों और बैलों की सृष्टि भगवान ने मानव के लिए की है। उसे समृद्ध रूप से दूध मिले और उसे कृषि में अच्छी सहायता मिले-यही सृष्टि का लक्ष्य था। उनकी हत्या करना अपने पैरों पर आप कुल्हाडी मारना है। गो वंश की समस्या प्रधानतः आर्थिक समस्या नहीं है। यह प्रमुख रूप से सामाजिक समस्या है। समस्या कोई भी हो वह सांस्कृतिक, सामाजिक और राजनैतिक समस्या के रूप में ही रहती है। वह आर्थिक समस्या नहीं होती। आज हमारी सरकार पशु संवर्द्धन विधान को औद्योगिक विधान के अंतर्गत एक स्वाभिविक अंश के रूप में

भावित कर रही है। आज अमल में अर्थशास्त्र शिक्षण परक गाय से संबन्धित दो प्रकार के विचार हैं। एक विचार के प्रतिनिधि डॉ. यम. वी. दांडेकर जी हैं। उनकी दृष्टि में सारी समस्या पशुओं की संख्या के बारे में ही है। पशु संख्या उपयुक्त मात्रा में हो तो मिलनेवाला पशुओं का आहार (पशु ग्रास) अर्थशास्त्रज्ञों और शासनकर्ताओं को मान्य होता है। उनके द्वारा सूचित होकर पशु समुदाय काफी होकर काफी दूध का उत्पादन कर सकते हैं। इतना ही नहीं आवश्यक मांस भी मिल सकता है। यह उनकी भावना है।

अब दूसरे वर्ग की बात देखें। उनके प्रतिनिधि हैं अर्थशास्त्रज्ञ डॉ. सी. हेच. हनुमंत राव और डॉ. के. यस. राज। इनके अनुसार ''आज गोसंतति की संख्या बहुत कम है। इसे और कम करें तो सामान्य किसान को अपने बैल खोने पडेंगे। अधिक संख्या में हो तो छोटे छोटे किसानों को खेती के लिए आधार भूत बैल दुबले - पतले रहेंगे। परिणामतः उनका कृषि क्षेत्र भी सीमित ही होगा। कृषि को भी लुप्त होने की संभावनाएँ बढेंगी। केबल भारी यंत्रों से चलनेवाली कृषि ही रह पायेगी। वह आधुनिक भारी उद्योग क्षेत्र का एक और भारी कृषि विभाग में ही रह जयेगा। गोवंश की संख्या अगर कम होती है तो छोटे किसानों का जीवनाधार लुप्त होगा। वे सडकों पर ही होंगे। ''सरकारी वर्गों के द्वारा रूपायित होनेवाले कार्यक्रम कृतज्ञतापूर्वक श्रद्धा से मानना और उन वर्गों के प्रति प्रशंसा स्तुति को अमल में रखना ही सरकार के नियंत्रण को स्वीकार करना है। यही प्रजा द्वारा सरकार को दी जानेवाली सहकारिता है।'' - यही श्री दांडेकर का कहना है। लेकिन श्रीराज और हनुमंत राव तो औद्योगीकरण को केवल आधुनिक अमेरिकी औद्योगीकरण के

समकक्ष होने की भावना रखते हैं। भारी यंत्रों और भारी निवेशों से भारत में प्राप्त मानव शक्ति को निरुपयोगी बनाकर आगे बढना चाहते हैं। इससे मानव शक्ति से चलनेवाले उद्योग बेकार माने जायेंगे। परिणामतः बेकारी बढेगी। ''आपरेशन प्लड़'' जैसी भारी राष्ट्रीय दूध वृद्धि योजनाएँ और संकर - जाति पशुओं की वृद्धि पर चलनेवाली पशु संवर्द्धन एवं पशु रक्षा योजनाएँ भारतीय पशु संपति की हत्या के विधान को प्रोत्साहित करनेवाली ही होंगी। छोटे छोटे किसानों के लिए आवश्यक बैलों और गायों की प्राप्ति को नुकसान ही होगा। यहाँ तक गाँवों में उपलें तक अप्राप्य होंगी। ऐसी स्थिति की कारक योजनाएँ सामने होंगीं। ऐसे अर्थशास्त्रज्ञ जब तक रहेंगे तब तक यहीं प्रचार होगा कि छोटे छोटे किसान के लिए ही गोवध निरोध की आवश्यकता है। वह उतनी ही सीमा तक रहे। यही उनका विचार है।

आज की सरकार के आर्थिक विधान को समर्थन देनेवाले भी असमंजस में हैं। आहार के विषय में स्वयं समृद्धि साधना ही प्रधान राष्ट्रीय लक्ष्य है तो जरूर छोटे और मध्य वर्ग के किसानों को प्रोत्साहन देना ही होगा। 1970-1971 वर्ष में 16,02,24,000 हेक्टार की भूमि में कृषि की गयी है। उस में 5 हेक्टार से कम खेतवाले किसान 6,24,79,000 हैं। उनके द्वारा 5,42,12,000 हेक्टार भूमि में खेती हुई है। इन छोटे किसानों की दुबली-पतली पशु संपत्ति (गाय और बैल) को संरक्षित करने का कर्तव्य सरकार का ही है। किसान का खेत में जो श्रम है उसे उसकी लागत के रूप में स्वीकारना है। उनकी कृषि सुरक्षा देनेवाली की मतों का विधान रूपायित करना भी सरकार का काम है। उत्पादक शक्ति के नाम पर उसकी आड में ज्यादा संख्या की गो संतति का नाश

चाहनेवाली पद्धति को छोडना है। संपूर्ण रूप से गोजाति के संरक्षण को अधिक प्रधानता देनी है। यह राष्ट्रीय आवश्यकता है। इसे मानकर चलना है। हमारे बीच उपस्थित भोगलालसी, निरंकुश, विलासी जीवन यापन करनेवालों को थोड़ा संयम रखना होगा। अन्यथा उनके प्रति समाज में तिरस्कार और प्रतीकार की भावना जग सकती है। यह अनर्थदायक ही होगा।

ई. वी. बाफर की पुस्तक ''दि लिविंग साइल'' में वृद्ध और बलहीन पशुओं के गोबर से खेतों में फसलों की वृद्धि के बारे में स्पष्ट किया गया है। ईष्ट जर्मनी के डॉ. एलार्टबाश्य की पुस्तक ''रोमांस आफ केटेल'' तथा हरबंस सिंह एवं वै. एम. पटनेकर की पुस्तक ''बेसिक फाक्ट्स अबउट वेल्थ एण्ड अलैड माटर्स'' में भी गोबर की खाद का वैशिष्ट्य चर्चित है। इसी संदर्भ में महाभारत का एक प्रसिद्ध श्लोक स्मरणीय है -

''अष्टैश्वर्यमयी लक्ष्मीः वसते गोमये सदा।''

अर्थात् आठ प्रकार के ऐश्वर्यों की लक्ष्मी देवी हमेशा गोमय और गोमूत्र में निवास करती है।

अगर समाज सामूहिक रूप से गोहत्या का हर किसी रूप में विरोध करता है तो सरकार का विधान भी सही दिशा में होगा। धर्म बद्ध विचार, कर्तव्य शक्ति पर आधारित अहिंसा की आराधना ही समाज का लक्ष्य होना है। ऐसा समाज ही अक्षरशः अहिंसा पर विश्वास रखता है। ऐसा ही समाज अपनी शासन व्यवस्था का निर्माण सही ढंग से कर सकता है। ऐसी शासन व्यवस्था से युक्त सरकार अपनी प्रशासन व्यवस्था को ठीक

निर्मित कर सकती है। ऐसी सरकार ही सर्व सम्मति से गोवंश संरक्षण विधान पर सही कार्यवाही का निर्वाह कर पायेगी। गोवंश की हत्या का संपूर्ण निरोध अवश्य सांस्कृतिक - सामाजिक - राजनैतिक समस्या ही है। यह आर्थिक दृष्टि से अधिक भावनात्मक समस्या है। दया और सहानुभूति के स्थान पर न्यायिक समस्या के रूप में इसे देखना है। गो जाति संरक्षण के स्थान पर गो जाति के साथ सहजीवन का जीवन की समस्या के रूप में स्वीकारना है।

वास्तविक दृष्टि से देखा जाय तो भारत में गो संतति आवश्यकता से अधिक नहीं है। बनिस्बत बहुत कम है। 2003-2004 वर्ष में हमारे देश में कृषि के लिए उपयुक्त भूमि 14 करोड हेक्टार की है। पशुओं के चरने और अन्य उपयोगों के लिए निर्णित भूमि को मिलाकर देखें तो वह 19 करोड़ हेक्टार की होगी। तब कुल गो संतति 18.52 करोड़ की थी। ब्रिटेन से भारत तीन गुना विशाल है। ब्रिटन में नगरों की आबादी 91% है तो भारत में वह केवल 22% है। ब्रिटेन औद्योगिक दृष्टि से विकसित है तो भारत कृषि क्षेत्र में विकसित है। विस्तृत है। 1965 से 1975 के बीच आस्ट्रेलिया में 78.64%, अमेरिका में 27.89%, ब्रिटेन में 24.51%, ब्रिटेन में 54.6%, कोलंबिया में 46.72%, अर्जेंटाइना में 38.30%, मेक्सिको में 34.88%, पाकिस्तान में 28.67%, और बर्मा में 25.84%, पशु संतति की वृद्धि हुई है तो भारत में इसी समय में केवल 2.59%, वृद्धि है। 1975 में हमारे देश में 18 करोड़ 2 लाख पशु थे। लेकिन देश की आबादी की तुलना में देखे तो यह अति अल्प ही माना जायेगा। क्योंकि 5 करोड 60 लाख की आबादी के औद्योगिक देश ब्रिटेन में पशु संख्या एक करोड 47 लाख है। उसी प्रकार 5 करोड 60 लाख की

आबादी के औद्योगिक संयुक्त राष्ट्र अमेरिका में पशु संख्या 13 करोड 18 लाख है। ऐसी स्थिति में 90 करोड आबादी के हमारे देश में कम से कम 40 करोड की गो संतति की जरूरत है। पिछले वर्षों में हमारे देश में भारी संख्या में पशु हत्याएँ हुई हैं। यह देश के लिए भारी नुकसान दायक ही है।

ऊपर उल्लिखित वास्तवों के आधार पर स्पष्ट होता है कि भारतीय आर्थिक व्यवस्था के लिए आधार भूत गोवंश ही है। भारतीय गो - संसति की रक्षा हमारा सांस्कृतिक, सामाजिक कर्तव्य ही नहीं बलिक राजनैतिक और आर्थिक आवश्यकता भी है। यह स्पष्ट है। भारतीय अर्थ नीति पर देश को समृद्ध बनाना चाहते हैं तो भारतीय गो संसति की रक्षा और वृद्धि आवश्यक है। पश्चमी देशो का अंधानुकरण हमारी प्रगति की दिशा में अधोगति और आत्म नाश का कारक ही होगा। समय के सरक जाने से पहले ही जागना चाहिए। चैतन्यशील और क्रियाशील होना है। ऐसे मार्ग पर चलेंगे तो हमारा भविष्य सांस्कृतिक, समाजिक और राजनैतिक दृष्टियों से ही आर्थिक दिशा में भी उज्वल होकर प्रगातिशील होगा। देश के हितैशी बडों को इस पर पूर्ण विश्वास रखने की भी जरूरत है।

13. स्वतंत्र भारत में गो-संरक्षण के आन्दोलन

साधु - संतों को नेतृत्व मे 1966 में एक आन्दोलन चला था। आचार्य विनोभा भावे ने आमरण अनशन दीक्षा ली थी। फिर भी हमारी सरकारों में कोई परिर्वन नहीं। गोवधशालाओं की संख्या और बढी। हमारे संविधान के आदेश सूत्रों मे गो संरक्षण का प्रावधान होने पर भी केन्द्र सरकार ने अपने कर्तव्यों में अपने को मुक्तकर उस कर्तव्य को प्रांतीय सरकारों पर डाला। विविध राज्यों में भी गोवध निषेध से संबन्धित

कानून तो हैं सिर्फ नाम के लिए। उनके अमल में अलसता ही है। आँखों के सामने हर दिन हजारों गोमाताएँ भीडों में गोवधशालों की ओर धकेली जा रही हैं।

इस संदर्भ में ही हिन्दु धार्मिक संस्थाओं के नेतृत्व में 2009 में गोरक्षा 'विश्वमंगल गो-ग्राम यात्रा' का निर्वाह किया। उसके द्वारा गोमाता की महानता का बोध कराते हुए गो-आधारित उत्पत्तियों पर एक अवगाहन जनता में व्याप्त करने का प्रयास किया गया जिससे हर व्यक्ति में रक्षा का भाव उत्पन्न हो।

गो संरक्षणः

गो संरक्षण समुन्नत ध्येय और लक्ष्य है। इसी कारण भारत स्वातंत्र संग्राम के लिए उससे स्फूर्ति मिली थी। 1857 के स्वातंत्र संग्राम के आरंभ में सैनिकों ने गाय की चर्बी पोते बुलेटों को मुँह से खोलने का विरोध किया था। हमारे राष्ट्रीय नेता लोकमान्य बालगंगाधर तिलक, महात्मा गांधी, लाला लजपति राय, मदनमोहन मालवीय, पुरुषोत्तम दास टांडन जैसों ने स्वतंत्रता संग्राम के बाद, मानी आजाट की प्राप्ति के तुरंत, 'गोवध निषेध' और 'गोसंरक्षण' के लिए कार्य रत होने की बात कही थी। उसे ही अपना प्रथम लक्ष्य रखा था ।

संविधान के आर्टिकल 48 ए के अनुसार पर्यावरण की रक्षा को हर नागरिक का कर्तव्य बताया गया है। सिर्फ मानवता के लिए ही नहीं समस्त संसार की भलाई गाय से होती है। इसलिए उसे प्रेम से पालना हमारा कर्तव्य है। हर नागरिक का कर्तव्य है। ''गो - संपित्त - राष्ट्र संपत्ति है, गोरक्षण लोक रक्षण है'' -- यही चारों वेदों, शास्त्रों में कहा

गया है। देवता और ऋषियों ने घोषित किया है। राष्ट्रपिता गांधीजी ने कहा कि ''मुझे आजादी से गो-रक्षण अत्यंत प्रधान हैं।'' तिलक जी ने भी गो रक्षण को लोक कल्याणकारी बताया है।

श्लोक : उष्णे वर्षति शीते वा मारुते वाति वा भृशम्।
प्रकृती त्वात्मनः प्राणं गोरक्षित्वा तु शक्तितः।।

धूप के कारण, गरम हवाओं के कारण, लू के कारण, ठंडी हवाओं के चलते, वर्षा के समय अपने आप की रक्षा करना नहीं गायों की भी रक्षा करो।

श्लोक : वानस्पत्यं मूलफलं होमद्रव्यं तथैव च।
तृणं च गोभ्यो ग्रासार्थ मस्तेयं मनुरब्रवीत्।।

गोपोषण के लिए दूसरों के यहाँ से घास को चुरा कर गाय को देना चोरी नहीं है। मनु ने मनुस्मृति में स्पष्ट कहा है कि अरक्षित फलो, कंद-मूलों को, होम के लिए समिधाओं को, गाय के लिए घास को चुराना चोरी नहीं है।

''स्तोता मे गोसखा स्यात्''

अथर्ववेद में परमात्मा का कहना है कि मेरी स्मृति करनेवाले मेरे भक्त को गो मित्र होना हैं। गो हत्याएँ हो रही हैं। उन्हें रोकिए। बंद कराइए। गोमाता की रक्षा करते समय फल से अधिक अपने प्रयत्न पर भी आपका ध्यान रहना है। गो माता रक्षिता होने पर मानव जाति की रक्षा करती है। इस सृष्टि में और अनेक विषयों को पैसे से खरीद सकते हैं। लेकिन दैवस्वरूपिणी गाय को खरीद नहीं सकते। गाय से संप्राप्त होनेवाने लाभ कितने ही हो! -- कितने ही है!

गणतंत्र राज्यों के बीच गायों के लिए युध्द चले हैं। इस की एक सूचना महाभारत की 'उत्तरगोग्रहण' गाथा स्पष्ट करती है। अनाथ प्रेत संस्कार को पवित्र कार्य माननेवाली पुण्य भूमि हमारी मातृभूमि है। मानव के मरने पर उसके शव के खनन या दहन संस्कार पर अत्यंत सम्मान और गौरव दिखाते हैं। यह हमारे समाज का लक्ष्य है। गो माता के विषय मे भी इसी प्रकार का गौरव भाव दिखाना हमारा लक्ष्य होना चाहिए।

14. गो-संरक्षण के लिए सरकारो को क्या करना है ?

1. गाय को जातीय पशु घोषित करना है।
2. गो संतति की रक्षा के लिए केन्द्र सरकार की ओर मे कानून होना चाहिए।
3. राज्यों में अब जो गो रक्षा संबधी कानूनों में कमियाँ है उनको दूर करना है। इतना ही नहीं कानून को सही ढंग से लागू करना हे।
4. देशी गो संतति की उत्पत्ति की प्रक्रिया में विदेशी जातियों के प्रभाव को दूर करना है।
5. गाँवों में पशु संपत्ति के विकास के लिए गोचर भूमि (गायों के चरने के लिए आवश्यक भूमि) को सुरक्षित रखने के लिए आवश्यक कदम उठाने हैं।
6. गो रक्षा के लिए केन्द्र और प्रांतीय सरकारों को विशेष मंत्रालय शाखाओं की व्यवस्था करती है।

उपयुक्त कार्यों को साधने के लिए जनता के मँतव्यों का विश्लेषण कर निर्णय लेने हैं। इस दिशा में कार्य के लिए सरकारों पर दबाव डालना

है। इसलिए 'विश्वमंगल गो ग्राम यात्राएँ' करनी हैं। इसी संदर्भ में 15 वर्ष से ऊपर की उम्रवालों के हस्ताक्षर लेकर गौरवनीय राष्ट्रपति के पास प्रार्थना पत्र भेजना है। सरकार को सभी सूचनाएँ स्वीकार करनी हैं। तब तक दबाब जारी रखना हमारा कर्तव्य है।

15. गो-संरक्षण के लिए हम क्या कर सकते हैं ?

1. गाय के मूल्य और उसकी विशेषताएँ स्पष्ट करनेवाले साहित्य को हमें पढना हैं। प्रधानतः घर की युवा पीढी से पढवाना है। गो माता के प्रति बच्चों में भक्ति भावना को विकसित करना है।

2. रोजमर्रे के जीवन में गो-उत्पत्तियों का (दूध, घी, साबुन, दंत मंजन, अगरवत्ती आदि) विनियोग बढाना है। उनके उपयोग को प्रोत्साहित करना है।

3. गोमूत्र से उत्पन्न होनेवाली दवाओं का उपयोग घरो में करना हैं।

4. मंदिर, धर्मकर्ता और भक्तों को हर मंदिर में कम से कम दो गायों के पालन की व्यवस्था को सुदृढ़ करते की ओर काम करना है।

5. गोशालोओं का संदर्शन परिवार सहित करना है। अपनी अपनी शक्ति के अनुसार गो संरक्षण के लिए आर्थिक सहायता करनी है। गोशाला के निर्वाह के लिए अपना समय देकर कार्यकर्ता के रूप में काम करना है।

6. वर्ष में एक बार कृष्णाष्टमी या किसी अन्य त्योंहार के संदर्भ में पाठशाला या मंदिर को केन्द्र बनाकर सामूहिक गोपूजा का निर्वाह करना

है। उस समय गोरक्षा की आवश्यकता पर सब को समझाने का प्रयत्न करना है।

7. ग्रामीण प्रांतों में गायों के पालन में प्रेम और उत्साह दिखानेवाले परिवारों की संख्या को प्रोत्साहित करना है। वैयक्तिक स्तर पर गोपालन को संबल देना है।

8. 60% और उसके ऊपर के गो परिवारों से युक्त गाँव को ''अभय गाँव'' कहना है। ऐसे ''अभय गाँवों'' की संख्या बढाने के प्रयत्न करने हैं।

9. हर गाँव में पशु पालन के लिए आवश्यक गोचर भूमि (गायों के चरने के लिए उपयुक्त भूमि) की व्यवस्था करनी है ।

10. रसायनिक खादों के उपयोग को छोडकर सेन्द्रिय कृषि विधानों को अमल में लाना है। गो आधारित कृषि विधानों को किसानों में व्याप्त करना है। प्रोत्साहित करना है।

11. हर गाँव में गायों का संपोषण करनेवाले किसानों से गो मूत्र और गोबर को संचित कर उनके द्वारा सेन्द्रिय खाद और अन्य गो उत्पन्तियों को बढाना है। इस के लिए युवकों और बडों को तैयार करना और प्रक्षिशण देना चाहिए। इससे उन्हें उपाधि मिलेगी। किसान को आमदनी मिलेगी। गो उत्पत्तियोँ सभी को आसानी से मिलेंगी।

12. कानून के विरोध में चलनेवाली घटनाएँ उत्पन्न होने पर कानूनन उनपर कार्य चलने हैं। उदाहरण के लिए गायों को अक्रम पद्धतियों में गोवध शालाओं पर ले जानेवालों पर पुलिस को फरियाद लेने और कानूनन कार्य करने की जरूरत है।

13. गो मांस भक्षण से होनेवाले नुकसानों को समझाकर गो मांस भक्षण को रुकवाने के प्रयत्न होने चाहिए।

14. गो संरक्षण के संदर्भ में होनेवाले विविध कार्यक्रमों और आन्दोलनों में भाग लेना है।

15. लाखों गायों की मृत्यु के लिए कारण भूत और पर्यावरण के लिए हानिकारक प्लास्टिक वस्तुओं का विनियोग नहीं करना है।

16. गोदान-फल

दाताऽस्याः स्वर्गमाप्नोति वत्सरान् लोमसम्मतान्
कपिला चेत्तारयति भूयाश्च सप्तमाकुलम् ।।

एक गो के दान से सहस्र गायों के दान का फल मिलता है । कपिला गाय के दान से सात पीढियों को मुक्ति मिलती हैं। वे सारी पीढियाँ तरती हैं।

गोदान से पितृदेवता घोर वैतरणी नदी को पारकर स्वर्ग में पहुँचेंगे। यह शास्त्रोक्त प्रमाण हैं।

गोभूतिलहिरण्याज्य वासो, धान्य, गुड़ानि च।
रौप्यं लवणमित्याहुः दशदानाः प्रकीर्तिताः।।

गाय के साथ पछडे को भी दान में देना है। दान देते समय गाय का मुख एक ओर और दूध पीनेवाले बछडे का मुह एक ओर होना चाहिए। कहने का तात्पर्य है कि गोदान कर्ता और गोदान प्रतिग्रहीता दोनों को सुख प्राप्ति होगी। गोदान कर्ता को पुण्य प्राप्ति और उनके पितरों को पुण्य लोक प्राप्ति होगी। सब दानों में गोदान सर्वश्रेष्ठ है।

17. गो-प्रदक्षिणा फल

ब्रह्मा ने सकल लोकों को आश्चर्यचकित करनेवाले सौंदर्य से प्रकाशित होनेवाली अहल्या को अपनी मानस पुत्री के रूप में सृष्टि की। उससे विवाह करने की इच्छा अनेकों में जगी। बढती संख्या को देखकर ब्रह्मदेव ने एक प्रतिस्पर्धा रखी। उस स्पर्धा में देवता समूह के साथ परमपुरुषार्थ मोक्ष को संसार वासियों को समझानेवाले योगीश्वर तथा सप्त ऋषियों में एक गौतम ने भी भाग लिया। स्पर्धा थी समस्त लोकों का भ्रमण कर शीघ्र ब्रह्मलोक पहुँचना। जीतनेवाले के साथ अहल्या का विवाह होगा। भूप्रदक्षिणा के स्थान पर द्विमुख गौ की प्रदिक्षणा कर गौतम ने धर्म सम्मत रूप में अहल्या से शादी कर ली। गो प्रदक्षिणा भूप्रदक्षिणा के समान ही है। मान्यता है कि गोप्रदक्षिणा करने से सुख प्रसव होगा।

18. गो-हत्या का प्रायश्चित्त नहीं

गणेशजी ने अपनी माता पार्वती को सौत की व्यथा से बचाने का प्रण किया था।इसी लिए शिवजी की जटाओं में बंन्धी गंगा को भूलोक भेजना चाहते हैं गजानन! भूलोक को स्वर्ग में परिवर्तित करने की शक्ति सिर्फ गौतम ऋषि को ही प्राप्त है। यह गणेश जी जानते हैं। पार्वती देवी की सहेली को माया गौ के रूप में परिवर्तित कर गौतम के खेतों में चरने भेजते हैं। उस समय कहते हैं कि अगर गौतम आकर क्रोध में दूषित करते हैं तो तुम्हें तुरंत मर जाना हैं। इस छल योजना के अनुसार पार्वती की सहेली गाय बनकर गौतम के खेत में चरती रहती है। गौतम देखकर सहज ही नाराज होते हैं। एक घास के तिनके से उसे भगाने का प्रयत्न करते हुए जोर से हाँकते हैं। बस गाय मर जाती है। गौतम को सब लोग

गोहत्यारा कहते हैं। तुरन्त गौतम गणनाथ गणेश के पास पहुँचकर गोहत्या पाप का निदान पूछते हैं। प्रायश्चित्त को सुझाने की माँग करते हैं। तब गणेश ने कहा कि शिवजी की जराओं में बन्दी गांगा को गाय पर प्रवाहित कराये तो अवश्य गोहत्या पाप का हरण होगा। गौतम ने शिवजी की तपस्या की। उन्हें रिझाकर उनके अनुग्रह से गांगा को भुवि पर लाने में सफल हुए। माया गाय पुनर्जीवित हुई। शिव की जटाओं से भुविपर आयी गंगा ही गौतमी नाम से प्रसिद्ध हुई।

कलियुग में गंगा नदी, गीता, कपिला गाय, पीपल का वृक्ष, साधुजनों की सेवा, एकादशी व्रत से बढ़कर पावन कोई नहीं है। यह स्कांद पुराण में स्पष्ट किया गया। गायों और ब्राह्मणों को झूठे हाथ से छुते हैं तो कहा जाता है कि यम भट उनके हाथ जलाते हैं ।सात जन्मों से पहले गाय के पानी पीने में रुकावट डालने के अपराध में एक व्यक्ति को सौ साल का नरकवास मिला है। ऐसे व्यक्ति को एक पुण्यात्मा के आगमन से विमुक्ति मिली है। यह गाथा विष्णु पुराण में है।

19. गो पद्मव्रत

एकादशियों में आषाढ शुद्ध एकादशी अत्यंत विशेषता का दिन है। इस एकादशी को ''प्रथम एकादशी'' और ''शयनैकादशी'' भी कहते हैं। उस दिन पर ही ''गो पद्मव्रत'' करना है। पुराणों में यह स्पष्ट रूप से कहा गया हैं। उस दिन पर गोशाला को शुध्दकर, गोमय से लीप कर, रंगोली से सजाना है। लक्ष्मी-नारायणों की श्रीगंध और पुष्पाक्षतों से पूजा कर प्रदिक्षणा-नमस्कार करने हैं। तत्पश्चात् हर पद्म के लिए एक के हिसाब से ब्राह्मणों को दक्षिणा-तांबूल देने हैं। गोमाता की पूजा से व्रत संपन्न होता है। इस का फल अद्‌भुत ....अद्‌भुत.....अद्‌भुत ही होगा।

20. नर की वेदना का निवारण

संक्रांति तीन दिनों का त्योंहार होता है। उस में प्रथम दिन पर ''भोगि त्योंहार'' मनाया जाता है। इस के संबन्ध में एक प्रतीति है कि यह त्योहार नर की वेदना के निवारण के लिए मनाया जाता है। यह सहज है कि कोई धन-धान्य और दौलत से मंडित है तो उस पर अनेकों की दृष्टि पडती है । इसे वक्र दृष्टि के रूप में मानना भी सर्व साधारण है। ऐसी वक्र दृष्टि के प्रभाव से अपने को बचाने के लिए ही गाय के गोबर से ''गोब्बेम्माओं'' (लक्ष्मी देवी के प्रतिरूपों के सम गोबर के गोलों को) बनाकर उन्हें फूलों से सजाते हैं। उनपर दृष्टि पडने से गृहस्थ पर कुदृष्टि दोष प्रसरित नहीं होगा - यह एक विश्वास हैं। ''गोब्बेमाओं'' के पीछे निहित भावना का अंतरार्थ भी यही है। इसके बाद उनसे उपलें बनाकर भोगि - ज्वालाएँ प्रज्ज्वलित करते हैं।

''भोगी उत्सव'' के दिन अष्टदल पद्माकृति में रंगोली लगाकर उस पर ''गोब्बेम्मा'' को सजाकर रखते हैं। अर्चित करते हैं। ''गोब्बेम्मा'' लक्ष्मी देवी का प्रतिरूप मानी जाती है। पौराणिक गाथा के अनुसार पहले राक्षसों की व्यथाओं को न सहनकर सकने के कारण देवता समूह ने कामधेनु का आश्रय लिया था। महाविष्णु की आज्ञा के लक्ष्मी देवी गोमय में (गोबर मे) छिप गयी। इसी लिए गोबर से लीपकर शुद्ध रखने वालों के आँगनों में लक्ष्मी देवी ''गोब्बेम्मा'' के रूप में विलसित होती है। इतना ही नही लक्ष्मी देवी ने वरदान दिया है कि ऐसे घरवालों को धन-धान्य समृध्दि मेरी ओर से होगी।

शरीर की गरमी को शमित करने मे दूध, दही और गोमूत्र उपयोगी हैं। गाय के गोबर से बने उपलों को जलायेंगे तो शुभ होगा। यह विश्वास

अत्यंत प्रबल है। दृष्टिदोष निवारण के साथ अपनी संतान की भलाई को दृष्टि में रखकर गोबर के उपलों की मालाएँ बच्चों के गलों में डालते हैं और बच्चों को उपलों की ज्वालाओं के पास वलयाकार में बिठाते हैं।

संक्रान्ति के त्योहार के दिन पर ''गंगिरेद्दु'' (एक सजाया बैल जो विन्यास भी जानता है) को घर घर घुमाकर उससे विन्यास कराते है। इस से सब लोगों में आनंद का विस्तार होता है। लोग भी उस बैल से विन्यास करानेवालों को पुरस्कृत करते हैं। यह एक लोक जीवन से संबधित विशेष है।

संक्रान्ति पर्व पर गाय के दूध से ''पोंगल'' बनाते हैं। उसे पशुशालोओं में नैवेद्य के रूप में भेजते हैं। खेतों में भी एक विशेष प्रकार का पका चावल छिडकते है। उसे ''पोलि'' कहते हैं। इससे दूध और फसलों की वृद्धि होती है। यह विश्वास प्रबल है।

21. विदेशियों के अभिप्राय

अमेरिका और जर्मनी के वैज्ञानिक भारतीय गो संतति के द्वारा मिलनेवाले लाभों की मुक्त कंठ से सराहना करते हैं। महाशिव, श्रीकृष्ण, दिलीप महाराज, वशिष्ठ, जमदग्नि आदि के चरित गो महिमा का गान करते हैं।

थायलैंड के 'सेंट्रल साकाया प्राविन्स' के पशुओं के मार्केट में सांप्रदायबध्द रूप से एक साँड और गाय का विवाह संपन्न करके उस जोडी को गाँवों में घुमाते हैं। उस विवाह शोभा को देखने लगभग 2000 लोग हाजिर होते हैं। गाय के मालिक और साँड के मालिक को लगभग

एक लाख रुपये तोफे के रूप में समर्पित करते हें। विश्वास है कि उसका संचरित पाँत वातावरण कालुष्य रहित होगा। इसके बारे में अमेरिका और जर्मनी देशों ने शोधें की हैं। उनका नतीजा सही निरला है। यावत् संसार को गोबर गैस की उत्पत्ति की दिशा में बढने की सलाह अमेरिका के अध्यक्ष बुश ने दी है। इससे गाय की महत्ता स्पष्ट होती है।

22. गोमाता के लिए मंदिर

श्री सद्गुरु समर्थ नारायण महाराज आश्रम सनातन धर्म का प्रचार सुदीर्घ काल से कर रहा है। उसकी शाखाएँ भारत व्याप्त हैं। वे भावि भारत नव र्निमाण के लिए और सन्मार्गीय जीवन के लिए ज्ञान केन्द्र हैं। हैदराबाद की शाखा ने तो ब्रिटिश और निजाम समय के रजाकारो आदि के अमानवीय घटनाओं का सामना किया है। अन्नदान सेवा आदि का निर्वहण किया है। सन्मर्गी जीवन और सात्विक पुरुषार्थो का उद्बोधन इनके सेवा केन्द्रों के माध्यम से संपन्न हुए हैं। यहाँ कामधेनु माता का मंदिर भी है। यह पुण्य स्थली शिवबाग्, जियागूडा, पुरानापुल, हैदराबाद में है।

23. गो धूलि का लग्न

दिन के अंत में पश्चिम दिशा में सूर्य बिम्ब का जब एक तिहाई अंश दिखाई देता है, 48 उसके निमेषों का समय जो रह जाता है वही गोधूलिका लग्न है। वह समय सब के लिए, सब कार्यों के लिए शुभ समय है। उसे शुभ मुहूर्त कहा गया है। उस मुहूर्त में अगर गोसेवा करें तो रजस्तमोगुणों का नाश होगा। सेवा करने वाला सत्वगुण संपन्न होगा।

24. बयोग्यास (बयो गैस)

गोबर और सेन्द्रिय व्यर्थ से गोबर गैस तैयार करते हैं। इसे चूने के पानी द्वारा भेजने से कार्बनडयाक्सैड उससे निकल जाता है और स्वच्छ मिथेन गैस उपलब्ध होती है। ये प्लांट हजार से एक लाख रुपये की कीमत पर मिल जाते हैं। कंप्रेसर के उपयोग से मिथेन गैस को सिलिंडर में भर सकते हैं। यह गैस वाहनों को चलाने के लिए भी उपयोग में आती है। गैस उत्पत्ति के बाद बचा पदार्थ (कूडा) खेतों की खाद के रूप में काम करता है।

हमारे देश में 6.27 लाख गाँव हैं। हर ग्राम में किसानों के पास प्रति परिवार 2 बैल और 4 गायें भी हो तो उनके द्वारा प्राप्त होनेवाले गोबर से सारे दोश के लिए पेट्रोल, डीजिल, यल.पी.जी., किरोसिन, यल.यन.जी. की आवश्यक्ताएँ हैं उन सबकी आपूर्ति हो सकती है। देश की आर्थिक व्यवस्था ठीक होगी।

गोबर के आधार से उत्पन्न बयोगैस बी.टी.यू. पर गरमी का अनुशीलन करें तो उसमें मिथेन, कार्बनडयाक्सैड, नैट्रेजन आदि होते हैं। यह निरूपित हो चुका है। बयोगैस की उज्ज्वल शक्ति अन्य गैसों की तुलना में कम है। इसी लिए आज आहार पथार्थों की तैयारी तथा इंजेक्षन के विनियोंग के लिए उपयोग में लायी जा रही है। अगर गुणवत्ता बढ़ाई जाती है तो इससे बिजली की तैयारी भी संभव है।

गोबर ग्यास की भट्टियाँ ईटोंसे निर्मित हो सकती है। बडी मिशनरी की आवश्यकता नहीं है। सामान्य मशीनों से काम चल सकता है । इनकी खरीदी के लिए बैंक ऋण मिलता है। बिना रवाना का खर्च, 'गोडाउनों'

का खर्च, बिछौलियों का हस्तक्षेप, करों की सख्ती आदि के बयोगैस कितना ही लाभप्रद है। सडे पदार्थो से पर्यावरण को हानि पहुँचाये बिना बयोगैस का परिवर्तन होता है। नित प्रति उपयोग की बयोगैस परिवर्तन की भारतीय संस्था ''बयोटेक'' (केरल) को ''ग्रीन आस्कार अवार्ड'' मिला है।

25. गोमती विद्या

''गोमती विद्या'' नामक विशेष मंत्र से युक्त गोस्तुति मिलती है। उसके पाठ से घरों में, गाँवों में, देशों में गोसंतति का विकास अवश्य होता है। मानव समूह का दुःख दूर होता है। इस विद्या को अनेक उपनिषदों और पुराणों में विशेष प्रधान्य है। गायो की उन्नति और वृध्दि के लिए सहायक विद्या ही 'गोमती विद्या' है। गोसंतान की वृध्दि से दूध, दही, मक्खन, घी आदि स्वच्छ और मूल्यवान वस्तुएँ प्राप्त होती हैं। मानव जीवन को सुख और शान्ति मिलते हैं। इस के पाठ से ऐहिक सुख और दिव्य ज्ञान प्राप्त होते हैं। गो लोक प्राप्ति सरल हो जाती है। विष्णु धर्मोत्तर पुराण की निम्न स्तुति को प्रतिपदार्थ सहित सीखें तो अच्छा फल मिलेगा --

गोमतीं कीर्तयिष्यामि सर्वपापप्रणाशिनीम् ।
तां तु मे वदतो विप्र शृणुष्व सुसमाहितः ।।
गावः सुरभयो नित्यं गावो गुग्गुलुगंधिकाः
गावः प्रतिष्ठा भूतानां गावः स्वस्त्ययनं परम् ।।
अन्नमेकपदं गावो देवानां हविरुत्तमम् ।
पावनं सर्वभूतानां रक्षंति च वहंति च ।।
हविषा मंत्रपूतेन तर्पयंत्यमरा दिवि ।

ऋषीणामग्निहोत्रेषु गावो होमे प्रयोजिताः ।।
सर्वेषामेव भूतानां गावः शरणमुत्तमम् ।
गावः स्वर्गस्य सोपानं गावो धन्यास्सनातनाः ।।
नमो गोभ्यः श्रीमतीभ्यः सौरभेयीभ्य एव च ।
नमो ब्रह्म सुताभ्यश्च पवित्राभ्यो नमो नमः ।।
ब्राह्मणाश्चैव गावश्च कुलमेकं द्विधा स्थितम् ।
एकत्र मंत्राधिष्टं हविरेकत्र संस्थितम् ।।
देवब्राह्मणगोसाधुसाध्वीभिः सततं जगत् ।
धार्यते वै सदा तस्मात् सर्वे पूज्यतमाः सदा ।।
यत्र तीर्थे सदा गावः पिबंति तृषिता जलम् ।
उत्तरंति पथा येन स्थिता तत्र सरस्वती ।।

विष्णुधर्मोत्तर पुराण, (द्वितीय,) में कहा गया है कि वरुण के पुत्र जलाधिपति हैं। वे पुष्कर द्वीप के अधिपति हैं। सर्व शास्त्र पंडित हैं। परशुराम की पार्थना से पुष्कर भगवान ने इस विद्या के संबन्ध में बताया था। इसे एकाग्र चित्त होकर सुनेंगे तो पापों का समूल नाश और प्रक्षालन होगा। गाय नित्य सुरभि रूपिणी है। पुण्य सुगंधों को व्याप्त करती है। गुग्गुल जैसी सुगंधों को प्रदान करती है। गाय से प्राणि कोटि का संबन्ध जुडा है। यह धर्म, अर्थ, काम और मोक्षदायिनी है। सर्वोत्कृष्ट आहार प्रदान करती है। उससे समस्त देवताओं की सेवा के लिए आवश्यक हविस्सु पुरोडाश तैयार कर सकते हैं। गायों के दर्शन और स्पर्श से सभी प्राणी पवित्र होती हैं। दूध, दही, घी आदि अमृत पदार्थ गाय से प्राप्त होते हैं। उसके बछडे शक्तिवान वृषभ बनकर मानव के कामों में सहायक बनते हैं। बोझ ढोने के लिए, खेत जोतने के लिए इनका उपयोग होता

है। पवित्र हविस् द्वारा वेद मंत्रों से देवताओं को भी पवित्र बनाती हैं गायें। ऋषियों के यज्ञ, अग्नि क्षेत्र आदि में हवन पदार्थ विनियोग इन्हीं की सहायता से संभव होता है। इसीलिए गायों को विशेष भक्ति से पालन करते हैं। संसार की सभी प्राणियों के लिए गोमाता ही सर्वोत्तम शरण्या है। गायें स्वर्ग के लिए सोपान हैं। मंगलप्रद पदार्थो, संपत्तियों के लिए मूलभूत हैं। लक्ष्मी देवी को ही अपने शरीर में स्थान देनेवाली गाय को नमस्कार! सुरभि कुल में साधु के रूप में जन्मी गाय को शतशत प्रणाम! ब्रह्मा की पुत्री गाय को सौ सौ नमन! वातावरण को पवित्र बनानेवाली गाय को नमस्कार!

गायें और ब्राह्मण एक ही कुल के प्राणी हैं। इन दोनों में परिशुध्द और प्रधान सत्वगुण है। ब्राह्मणों के पास वेदमंत्र हैं तो गायों में यज्ञ के लिए आवश्यक साधन हविस हैं। इन दोनों से ही यज्ञ सुसंपन्न होकर विष्णु आदि समस्त देवताओं और चराचर प्रकृति संप्रीति प्राप्त करते हैं। संसार देवता, ब्राह्मण, साधु, महात्मा समूह, पतिव्रताएँ आदि के पुण्यों पर ही स्थिर है। धार्मिकता से युक्त इन जीवियों के द्वारा ही समस्त विश्व चलता है। इसी लिए ये सब पूज्य हैं। गायें जहाँ अपनी प्यास बुझाती है वहाँ गंगा, यमुना, सरस्वती, सिन्धु आदि नदियाँ रहती हैं। गो धूलि में सर्व धर्म और सारी शक्तियाँ निवास करती हैं।

26. कुछ कानून

* Andhra Pradesh Prohibition of Cow Slaughter and Animal Preservation Act, 1977.
* Bihar Preservation Improvement of Animal Act, 1995.

* The Delhi Agricultural Cattle preservation Act, 1994.
* The Goa, Damman & Diu Prevention of Cow Slaughter Act, 1978 (13 of 1978)
* The Goa Animal Preservation Act, 1995.
* The Bombay Animal Preservation Act, 1954.
* The Punjab Prohibition of Cow Slaughter Act, 1955.
* The Karnataka Prevention of Cow Slaughter and Cattle Preservation Act, 1964.

27. गाय जानवार नहीं है

गाय हमारी संस्कृति के किरीट की उज्ज्वल मणि है।
गाय सभ्यता नामक दीवार को लगा चूना है।
गाय हमारे धर्म में निहित सूक्ष्म रहस्य है।
गाय हमारे अर्थ, मोक्ष कर्मों का मार्ग है।
गाय दुनिया का अखण्ड गौरव है।
गाय जन्म से लेकर मानव को मुक्ति तक पहुँचानेवाला नाव है।
गाय निर्मल आकाश का ध्रुव तारा है।
गाय रेगिस्तान के बीच ठंडी छाया है।
गाय ममता से युक्त मातृत्व है।

गाय खेती, तंदुरुस्ती, वाणिज्य आदि का आधार है।
गाय भक्ति, शक्ति, प्रार्थना, सेवा, समृध्दि का आलंबन है।
गाय अमृत रूपी सर पर लगाया चंदन है।

28. कौन किस प्रकार गो-सेवा करें?

1. क्या आप भारतीय हैं?
   तो जानिए - गाय हमारी माता है। गाय का दूध तंदुरुस्ती और सुख प्रदान करता है।
2. क्या आप किसान हैं?
   तो अवश्य सेन्द्रिय खादों का ही इस्तेमाल कीजिए।
3. क्या आप उद्योगपति हैं?
   हमारी आर्थिक व्यवस्था के आधार गाय बैलों की रक्षा के लिए आर्थिक सहायता कीजिए।
4. क्या आप नौकरी कर रहे हैं?
   अपने साथियों को गाय और बैलों की विशेषताएँ समझाइए।
5. क्या आप सोचने की शक्ति को बढाना चाहते है?
   अपनी बुध्दि को बढाने के लिए गाय का दूध पीजिए।
6. क्या आप गाय के प्रेमी हैं?
   गोवध को रोकने का प्रयत्न कीजिए। गाय और बैलों को बचाइए।
7. क्या आप पुलीस हैं?
   गाय और बैलों की हिंसा करनेवालों को पकडिए और उन्हें दण्ड दीजिए। कानून को बचाइए।

8. क्या आप न्यायवादी हैं?
पशुओं की चोरी करनेवालों के पक्ष में 'कोर्ट केस' मत लडिये। ऐसे दावों को फीज़ लिये बिना हाथ से लीजिए। कोर्ट में लडिए।

9. क्या आप जज हैं?
गाय और बैलों के संदर्भ में निंदितों की ओर से दया मत दिखाइए उन्हें दण्ड दीजिए।

10. क्या आप पशु व्यापारी हैं?
गायों को कसाइयों के हाथ मत बेचिए।

11. क्या आप लेखक है?
गायों और बैलों के आर्थिक, सांस्कृतिक तथा शास्त्रीय पक्षों पर अच्छा लिखिए। शास्त्रिय दृष्टि का प्रचार कीजिए।

12. क्या आप कसाई हैं?
गाय और बैलो पर अपने आयुध से प्रहार मत कीजिए - देश द्रोह मत कीजिए।

13. क्या आप पत्रकार हैं?
गायों और बैलों पर आलोचनात्मक लेख लिखकर उनका विरोध मत कीजिए।

14. क्या आप सहानुभूति रखनेवाले हैं?
आप अपनी सहानुभूति बाधितों तक पहुँचने के लिए गो सेवा कीजिए।

15. क्या आप विश्लेषक हैं?
जनता के मानसिक विकास के लिए उन्हें उत्तेजित कीजिए। स्वार्थ से पशुहत्या (गोवध) न करने का प्रयास कीजिए।

16. क्या आप स्वामी जी है।
आप के भाषणो में गायों के सद्‌गुणों पर और गोवंश की ख्याति पर अधिक बोलिए।

17. क्या आप गो पालक हैं?
गायों का प्रभाव जनता को बताइए।

18. क्या आप कवि हैं?

गो माता की पुकार में आपका कंठ मिलाइए।
घर घर में गाँव - गाँव में गोशाला।
गोमाता की रक्षा हो मानव की दीक्षा।
गोमाता की हिंसा से होगा भारत का भविष्य नाश।
आज की व्यथा होगी कल की शून्यता।
भारत की सुवर्णकांति पायेगी विश्रांति।''

यह सब प्रजा हित में कहा गया है।

29. पंचगव्य की विशेषताएँ

गाय के द्वारा 'पंचगव्य' प्राप्त होते हैं। वे हैं - दूध, दही, घी, गोमूत्र और गोमय।

'यत्त्वगस्थिगतं, पापं देहे तिष्ठति मामके।
प्राशनात् पंचगव्यस्य दहत्यग्निरिवेंधनम्।।'

चर्म से हड्डियों तक में व्याप्त हो सकनेवाले रोग जिस प्रकार अग्नि से ईंधन जल जाते हैं उसी प्रकार पंचगव्य से नाश होते हैं। रस, कटु, तिक्त, कषाय, मधुरता, लवण - ये पंच रस युक्त हैं।

गव्यं पवित्रं च रसायनं च पथ्यं च हृद्यं बलमूर्जितं स्यात् ।
आयुःप्रदं रक्तविकासहारि, त्रिदोषहृद्रोगविषापहं स्यात्।।

'पंचगव्य' विशिष्ट रसायन पदार्थ है। पथ्य मन को आनंद प्रदान करता है। यह बुध्दि, बल और आयु प्रदाता है। रक्त दोषों का परिहार कर कफ़, वात और पित्त से होनेवाले हृदय रोगों को दूर करता है।

गव्यं सुमधुरं किंचिद् दोषध्नं कृमिकुष्ठनुत् ।
कण्डूतिं शमयेत् वातं सम्यक् दोषापहं हि तत् ।।
(सुश्रुतसंहिता - 500 (B.C.) वर्ष पहले का आयुर्वेद ग्रंथ)

गोमूत्र तिक्त और कषाय (काढी) के समान तीक्ष्ण, उष्ण तथा मस्तिष्क को बल देनेवाला है। कफ और वात को दूर करता है। शूल, गुल्म, उदर और कुष्ठ रोगों को अंत करता है।

1. गायत्र्या गोमूत्रम् :

तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्।।

2. गन्धद्वारेति गोमयम् :

गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीगं् सर्वभूतानां तामिहोपाह्वये श्रियम्।।

3. आप्यायस्वेति क्षीरम् :

आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः।
सोमवृष्णियं भवावाजस्य संगथे।।

4. दधिक्रावण्णो इति दधि :

दधिक्रावण्णो अकारुषं। जिष्णोरश्वस्य
वाजिनः सुरभिनो मुखाकरत्। प्रणअयूगुंषितारिषत्।।

5. शुक्रमसीति घृतम् :

शुक्रमसि ज्योतिरसि तेजोऽसि देवो वः।
सवितो पुनात्वच्छिद्रेण पवित्रेण वसोस्सूर्यस्य रश्मिभिः।।

इन पांचों को ही हम ''पंचगव्य'' कहते हैं।

1. गाय से आनेवाले पदार्थ दूध, दही, घी आदि उष्णता (गरमी) से युक्त हैं फिर भी गाय का घी खाने से मेधा शक्ति भी बढ़ती है। यह शास्त्रों में कहा गया है।

''घृतेन वर्धते बुध्दिः''

2. गोमूत्र के प्राशन से रक्तचाप आदि रोगों से विमुक्ति मिलती है। इससे धारणा शक्ति भी बढ़ती है। इसीलिए वैदिक परक कार्यों में, वेद पाठशालाओं में, गोमूत्र को अधिक प्राधान्यता है।

हमारा शरीर पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश तत्त्वों से निर्मित है। ये पांचों तत्त्व 'पंचगव्य' में उपलब्ध हैं। पंजगव्य के पंचतत्त्व दिव्यौषध हैं। कब्ज से लेकर 'क्यान्सर' तक के रोगों का ये निवारण करते हैं।

''गोमूत्रे त्रिदिनं स्थापय, विषं तेन विशुध्यति।''

गाय के पेट में अगर विष पदार्थ प्रवेश करते हैं तो दूध में मिलने से दूर रखने की शक्ति गाय में निहित है। अन्य जंतुओं में ऐसा नहीं होता। इसलिए गो क्षीर, गोमूत्र, गोमय समस्त रोगों के नाशक हैं। इसी कारण उनको पंचगव्यों में स्थान है।

गाय का दूध

''प्रवरं जीवनीयानां क्षीरमुत्तमं रसायनम्''

- चरकशास्त्र

जीवन शक्ति संयुत भोज्य पदार्थों में गाय का दूध अत्यंत जीवनीय तत्त्व से युक्त है। गाय का दूध हृदय के रोगों को दूर रखता है। ज्ञान शक्ति, स्मृति शक्ति, बुध्दिबल और ओज को बढाने की क्षमता गाय के दूध में हैं। उसमें 'ओरोटिक' रसायन पदार्थ होने के कारण छोटे बच्चों को कामला रोग से बचाता है। लाक्टोकोकस्, बोसिन् और विटमिनों के अधिक होने के कारण 'अटामिक् रेडियेषन्' से रक्षा करने की सर्वाधिक शक्ति गाय के दूध में है। इस बात को एक रूसी शास्त्रज्ञ ने रेखांकित किया है। गाय की रीढ़ की हड्डी की ''सूर्यकेतु'' नाडी सुर्य के प्रकाश से चेतनता पाये कणों में एक पीले पदार्थ को छोडती है। उससे दूध में स्वर्ण तत्त्व उभरता है। स्वर्ण तत्त्व से युक्त गाय के दूध को विष को हरण करने की शक्ति है। माता के दूध के समान पच जाने की शक्ति गाय के दूध मे है।दूध संपूर्ण आहार है। शरीर में सरल रूप से सम जाता है। गाय के दूध से तंदुरुस्ती ही नहीं उत्साह भी मिलता है। बच्चों और बूढों के

लिए दूध श्रेष्ठ है। इस में चरबी का अंश बहुत कम रहता है। गाय के दूध में प्रोटीन, कार्बोहैड्रेट्स, खनिज पदार्थ, विटमिन, मेग्नीषियम्, क्लोरिन आदि तत्त्व हैं। ए,बी, सी,डी,ई विटमिन हैं। इसीलिए गाय का दूध हमें शक्ति प्रदान करता है। इसके दूध में ''Strontirin'' तत्त्व है। यह अणुविकीरण का निरोध कर सकता है। छोटे बच्चों की माताएँ, गर्भिणियाँ, बीमार लोग, शक्तिहीन सभी इसका सेवन कर सकते हैं। इसमे ''सेरिब्रोईड़'' तत्त्व हैं। इनके कारण मानसिक विकास होता है। गाय का दूध ठंडक पहुँचाता है। इससे पित्त विकार दूर होते हैं। अलसर, एसिडिटी, प्यास, आदि के लिए यह श्रेष्ठ है। जलोदर व्याधि ग्रस्त गाय का दूध लेते हैं तो रोग उपशमित होता है। गाय के दूध, घी, मलाई में पौष्टिक अंश अधिक हैं। इनसे संपूर्ण आरोग्य मिलता है। रोग निरोधक शक्ति मिलती है। गाय के दूध से बनी मिठाइयाँ धातुवर्ध्दक, वीर्यवर्द्धक और कान्तिवर्द्धक हैं। गाय के दूध में विटमिन ए - 100 बी से ए - 1900 कोवा में ए - 400 यूनिट हैं। गाय के दूध में 'एम.डी,जिजैज' प्रोटीन भी हैं। इनसे 'कॉन्सर' का निरोध होता है। गाय के दूध और घी से बनी गरम गरम हल्वा खाने से 'कॉन्सर' का प्रभाव घटता है। ग्रहण व्याधि-निवारण के लिए ग्यारह किशमिश दूध में डालकर भिगोकर कुछ समय के बाद खाना है और साथ साथ उस दूध को पीना है। इस में चीनी नहीं मिलानी चाहिए। इसतरह ग्यारह दिन लेंगे तो व्याधि का निवारण होगा। 5 किशमिश और 5 सूखे पके द्राक्षा फल गाय के दूध में डालकर रात और सुबह सुबह रोगी को दें तो उससे मलेरिया व्याधि कम होगी। अगर बीमारी और बढेगी तो 10 ग्रास सोंठ को चूर्ण भी मिलकर लेने से व्याधि दूर होगी।

गर्भिणी स्त्रियाँ अगर गाय का दूध पीकर गाय की सभक्ति पूजा करती हैं तो उनका गर्भपात दोष दूर होता है। तंदुरुस्त गुणवान और बुध्दिमान संतान की प्राप्ति होगी। सुख-प्रसव भी होगा। गाय के रंग के अनुसार उसके दूध में विशेष गुण रहते हैं। लाल रंग की गाय का दूध पित्त रोग का निवारण करता है। सफेद गाय का दूध कफ का नाश करता है। काली गाय का दूध वात के लिए शमनकारी है। छासठ पक्वान्न गाय के दूध से बनते हैं।

गाय का दूध समस्त देवताओं का प्रीतिपात्र है। पंचामृत के बिना देवतार्चन नहीं है।

गां जलं क्षीरं वा पिबंतीं न निवारयेत्।
दोहनार्थं वारणादन्यत्र निषेधः।
नापि परकीय क्षीरादि पिबंतीं तस्य ज्ञापयेत्।।

पानी पीनेवाली गाय को, दूध पीनेवाले बछडे को रोकना अच्छा नहीं माना जाता। दूसरों के बछडे दूध पी रहे हैं तो इसका समाचार उनके मालिकों को नहीं देना हैं।

जगत्प्रसूतिर्जगदेकपावनी
व्रजोपकंठं तनयैरुपेयुषी।
द्युतिं समग्रां समितिर्गवामसा -
वुपैति तं तैरिव संहिताहुतिः ।।

गायें समस्त जगत को पावन बनाती हैं। पापकर्मी कोई भी हो प्रायश्चित्त के लिए पंचगव्य स्वीकारता है। ऐसे व्यक्ति के समस्त पापों

का हरण करना गायों की जगत प्रसिध्द पावनता है। नूतन गृह प्रवेश के समय दूध को उफनाना एक पारंपरिक पवित्र संस्कार है। सूर्य देव को दूध का नैवेद्य प्रदान करना भी हमारी संस्कृति का अंश है।

हलका-पीला रंग (सुर्वण रंग) गाय के दूध मात्र में होता है। यह 'किरोटिन्' नामक पदार्थ से दूध को मिलता है। यह रसायन पदार्थ गालों, फेफडों और मूत्रावयव के हलके पर्तें को परिपुष्ट बनाता है। 'कान्सर' व्याधि के निवारण में सहायक होता है। इससे 'ए' विटमिन उत्पन्न होता है। इससे आँख की बीमारियाँ दूर होती हैं।

चने का आटा 10 ग्राम, गुग्गुल 10 ग्राम, एरंडी का तेल 10 ग्राम और ग्राम का नवनीत (ताजा मक्खन) मिलाकर उसके लेपन तैयार करके उपयोग करें तो हृदय (दिल) से संबन्धित शूल (दर्द) कम हो जाते हैं। यह मर्दन एक महीने तक करना फलप्रद होगा। साथ-साथ गाय का दूध, दही और घी का सेवन भी लाभकारी होगा।

जेर्सी गायें

जेर्सी गायें ''क्रास ब्रीड़'' हैं। ये भारत की जलवायु को सहन नहीं कर सकती है, खासकर गरमी को। उनको पालना व्यर्थ-प्रायासों का काम है। देशी गायों से दुगुना खाती है। जो रोग हमारे देश में नहीं हैं उन्हे प्रसरित कर नुकसान पहुँचाती हैं। जेर्सी गायों का दूध शुध्दता में कम मूल्य का है। देशी गाय के दूध के मूल्य इस में नहीं रहते। ये बैल कृषि कार्य के लिए उपयुक्त नहीं हैं। क्योंकि उनकी ककुद हल्की होती है। बछडे को संस्कृत में 'वत्स' कहते हैं 'वदति मातरं इति वत्सः'। बछडा आपनी माता को ''माँ'' कहकर पुकारता है। ''भक्त वत्सलः भगवान्''

''प्रजावत्सलः राजा''। वत्स का भाव ही वात्सल्य है। बच्चों को भी 'वत्स' कहकर पुकारते हैं।

हमारे देश में उत्पन्न होनेवाले दूध में गाय के दूध का हिस्सा 40% प्रतिशत मात्र है। दुनिया का यही 85% है। गाय के दूध की माँग दुनिया में अधिक है। इसलिए गायों का पोषण भी देश में बढ़ना है।

गाय और दही

गाय के दही और मट्ठा भूख बढाते हैं। जीर्णशक्ति को बढाते हैं। चाँदी के बर्तन में जमाया दही बहुत ही हितकारी है। गाय का दही बहुत ही हितकारी है। गाय का दही पंचामृत में जुडता है। यह देवताओं के लिए प्रीतिकर है। इस में चरबी का अंश बहुत कम रहता है। वास्तव में नहीं के बराबर होता है। गाय के मट्ठे में 'लाक्टिल' जीवाणु रहते हैं। ये शरीर में रोग निरोधक शक्ति बढाते हैं।

गाय के दूध का दही गुडुंबा, गांजा, हेराइन आदि मादक पदार्थों के दुष्प्रभाव को कम करता है। दिन में तीन बार मट्ठे का सेवन क्षय रोग निवारक भी बताया गया है। मलेरिया व्याधि के निवारण के लिए गाय के दूध को तोडकर उसमें चीनी डालकर लेना उचित माना गया है। उससे निवारण होगा। गाय के दूध में ''कोलेस्ट्राल' के न होने के कारण दिल को किसी प्रकार की हानि नहीं पहुँचती।

गाय का घी

इसे अमृत कहते हैं। यह बल, आयु, ओजस, तेजस प्रदान करता है। इस में प्राणवायु रहती है। यह शरीर को पोषक शक्ति देता है। यह

एक ओषधि है। गाय के घी से अच्छी नींद लगती हैं। अच्छी नींद रोग निरोधक है।

गाय के घी से होम करने से होम का धुआँ जितनी सीमा में फैलता है उतने क्षेत्र में क्रिमि-कीटकों का नाश होता है। कृत्रिम वर्ष के लिए आवश्यक ''प्रोपलीयन गैस'' गाय के घी के होम से निकलती है। चावलो को गाय के घी के साथ मिलाकर होम करने से ''इथेलिन् आक्सैड़'', ''प्रोवलिन आक्सैड़'' और ''फर्मा जोयासिन्'' वायुएँ निकलती हैं। ये जीवाणु रक्षण करती हैं।

धर्म का मूल गाय है। यज्ञ गाय के घी से ही संपन्न होते हैं। आज की हमारी समस्या पर्यावरण कालुष्य की समस्या है। यह यज्ञों द्वारा ही निवारित हो सकती है। यज्ञ स्थल को गोमूत्र और गोमय से शुध्द किया जाता है। एक तोले भर के घी से भी यज्ञ करें तो एक ''टन'' प्राणवायु मिलती है।

गोमय (गोबर):

भगवान की सृष्टि में किसी भी प्राणी के मूत्र और पुरीषों को इतना मूल्य नहीं है जितना की गोमूत्र और गोबर को है। इसी लिए गाय को जगदेकपावनी कहा गया है।

''गोमयेन सदा स्नायात् कर्षि चाप्युपविशेत्''

- (महाभारत, अनुशासनिक पर्व)

''गोष्टांगणगतिप्रियः''

(पुरुषोत्तम की सहस्रनामावली, 10 वाँ स्कंध)

श्री कृष्ण गोशाला में गोबर में खेलना पसंद करते हैं - यही उक्त श्लोक में कहा गया है।

गोमूत्रेण स्नापयित्वा, पुनर्गोरज सार्द्रकम्
रक्षां शकृत् कृत्वा, द्वादशांगेषु नामभिः ।।

श्रीकृष्ण ने पूतना से दूध पिया था। वास्तविकता जानने के बाद गोपिकाआँ ने श्रीकृष्ण को स्नान कराकर शरीर भर गोरोजन लगाया और शरीर भर गोबर भी लगाया। इससे यह स्पष्ट है कि गोबर अत्यंत माहात्म्य युक्त है।

''यन्मे रोगं शोकं च तन्मे दहतु गोमयम् ''

गोमय लेपकर स्नान करने से शरीर के रोग कम होते हैं। गोमय की महत्ता वर्णनातीत है। वह क्रिम नाशक, कांति प्रद, दर्गन्धनाशक, वीर्य वर्ध्दक और शुध्द करने वाला है। इसी लिए वह परम पवित्र है।

भोपाल की विषवायु एक घर में कुछ कर नहीं सकी। उस घर का कुछ भी नुकसान नहीं हुआ। कराण जानते हैं? उस घर में गोबर से यज्ञ किया गया था!

गाय का गोबर कालुष्य रहित खाद है। रसानिक खादों से अधिक यह क्रिमिनाशक है। गाय के गोबर में प्लेग, हैजा आदि रोगों की क्रिमियों को नाश करने की क्षमता है। इसे चेन्नै के एक वैद्य ने अपनी शोध के आधार पर स्पष्ट कहा है।

गोमय (गोबर) और गोमूत्र से (यन.पी.के) नत्रजनी, भास्वर और पोटाषियम् से युक्त खाद तैयार होती है। मानव समूह के लिए हानि न

पहुँचानेवाली सस्य रक्षण दवाओं को गोबर से तैयार कर सकते हैं। रसायनिक खादों के उपयोग से खेतों का ऊसर क्षेत्र बनने का डर रहता है।

गाय का गोबर कालुष्यनाशक है। क्रिमि नाशक है। यहाँ तक कि मच्छरों का भी नाश करता है। चर्म संबधी सभी रोगों को रोकता है। घाव भरता है। गाय के गोबर के बने उपलों को जलाने पर मेथ्लिन,लिलइल्, अमोनियम्, फार्मेलिन वायुएँ निकलती हैं। इसीलिए वातावरण कालुष्य नहीं रहता। गाय के घी को तीनों समयो में नाक में डाले तो नाक की बाधाएँ दूर होती हैं।

पर्यावरण की रक्षा के लिए वनों की वृध्दि और वन्य जंतुओं का संरक्षण हमारे देश के सामने प्रमुख अंश हैं। गाय और उसकी संतति भी वातावरण कालुष्य की रक्षा करती है। हरी घास, सुखी घास, पत्ते, बार्ली, गेहूँ, गन्ना, कृषि से संबधित कुछ व्यर्थ पदार्थ आदि खाकर हमारी रक्षा करती हैं। अन्यथा वे पदार्थ सडकर जलकर वातावरण कालुष्य को और बढाते हैं। गोबर कालुष्य रहित बयो फेर्ट्रिलैजर है। बैलों का गोबर भी गाय के गोबर सम मूल्यवान है। दोनों हमें अकाल से बचाते हैं। कालुष्य रहित बयोगैस देते हैं।

गोबर से रसोई-गैस, पेट्रोल, डीजिल, किरोसिन सम तेल तैयार कर सकते हैं। मान्यता है कि गाय के गोबर में लक्ष्मी वास करती है। इसीलिए उनको नमस्कार करना पवित्र कार्य है। इसके प्रभाव से धर्म चारों पैरों पर चलेगा। बुध्दिमान और लोक का मंगल चाहनेवाला व्यक्ति हमेशा

गायोंको नमस्कार करता है। श्रीसूक्त कहता है कि गाय के पृष्ठ भाग को नमस्कार करना श्रेयोदायक है।

गोबर और गोमूत्र से दैनंदिन आवश्यकताओं के लिए उपयोग में आनेवाली वस्तुओं को रूपायित किया जा सकता है। यह प्रयोग सिध्द है। फेस पाउडर, शांपू, दंतमंजन, सिर दर्द के लिए बामं, धूपबत्ती, धूप, केशतैल आदि को तैयार कर बेच रहे हैं।

कामधेनु तैल :

गोमूत्र, नमक, तेल, गोमय का रस, कर्पुर, अजवाइन का चूरा आदि को मिलाकर इसे तैयार करते हैं। शरीर के सभी भागों में अगर शूल हो तो इसे लगाकर फिर गरम पानी से सेंकें तो दर्द दूर हो जाता है।

गोपालनश्यम् (गोपाल नास)

गोवत्सम्, दूध, कालीमिर्च से तैयार की गयी नास नाक में डालकर फूँके तो मूर्छा रोग दूर होता है।

गोमय साबुन :

स्वदेशी गाय का गोबर, जामट्टी, कर्पूर, मुलतानी मिट्टी, गोमय रस मिलकार पके तेलों से तैयार की गयी साबुन बहुत उपयोगी है। इस के उपयोग से मुँह पर दाग गायब होते हैं और मुख शोभामय रहता है।

कामधेनु शांपू

गो मूत्र, कर्पूर, उपलों की रज, अजवाइन का चूरा मिलाकर शांपू तैयार करते हैं।

गोमय दंतमंजन

गाय का गोबर, उपलों से जलाया गया कोयला, सादा कर्पूर, अजवाइन मिलाकर गोमय दंत मंजन तैयार किया जाता है। इससे दांत अजवाइन सफेद रहते हैं और साथ-साथ गला ठीक रहता है।

गोमूत्र :

गोमूत्र में रसायनिक गुण हैं। शक्ति भी है। वे गुण शरीर के दुष्परिणामों को, कमियों को दूर करने की शक्ति से युक्त हैं। क्रिमिनाशक हैं। पवित्र भी मानते हैं।

''जाघर तुलसी अरु गाय। ताधर वैद्यक बहु न जाय ।।''
''कहा है जीवन्तु अवध्याः ता मे विषस्य दूषण्यः ।।''

गायों को नहीं मारना चाहिए। गायों को जीवित रहना है। जीवित रखना भी है। विष का निर्मूलन करने की प्रविधि सूत्रीकृत है। गोमूत्र एण्टीटाक्सिन, एण्टीसेप्टिक और एण्टीबयोटिक है। इसे जानकर उपयोग करना है। इसमें विटमिन-बी, कार्बालिक एसिड़ हैं। इसीलिए सैकड़ों बीमारियों की क्षमता इसमें है।

गोमूत्र और पुरीषादि से बाह्य शुध्दि और अंतश्शुध्दि होती है। इसी कारण से गो जगदेकपावनी है।

ऋषभांश्चापि जानामि राजन् पूजितलक्षणान् ।
एषां मूत्रमुपाघ्राणं अपि वंध्या प्रसूयते ।।

(महाभारत, विराटपर्व)

उत्तम लक्षणों से युक्त वृषभों (बैलों) के मूत्र को सूँघने मात्र से वंद्याएँ संतानवतियाँ होती हैं।

गोमूत्र में 24 रसायन पदार्थ और 16 खनिजो के अंशों के साथ आइरन्, काल्षियम्, फास्परस के गुण भी होने की बात स्पष्ट की गयी है। इसीलिए यह 108 रोगों के लिए परमौषध है।

गोमूत्र में बहनेवाले रसायन पदार्थ

1. नत्रजनि (नैट्रोजन), 2. गंधक (सल्फर), 3. अमोनियम् 4. अम्मोनियम् गैस 5. ताम्र (कापर) 6. लोहा (अइरन), 7. यूरिया, 8. यूरिक आसिड 9. फास्फेट, 10. सोडियम् 11. पोटाषियम् 12. मांगनीस 13. कार्बालिक एसिड 14. काल्सियम् 15. लवण (नमक) 16. विटमिन्स 17. अन्य खनिज 18. लाक्टोस 19. एंजैम्स 20. जल (पानी) 21. हिप्यूरिक एसिड़ 22. क्रियाटिनिन् 23. हार्मोन (आठ महीने की गर्भिणी गाय के मूत्र में) 24. स्वर्णक्षार (औरुण हीइड्राक्सैड़)।

गोमूत्र के उपयोग से दूर होनेवाले रोग

1. अजीर्ण 2. अतिसार 3. आम्ल पित्त 4. अपस्मार 5. आर्म 6. अनाहम् 7. आमवात 8. आम्लाशय व्रणम् 9. उदर रोग 10. लू का प्रहार 11. उफान 12. उदावर्तम् 13. पित्तवृध्दि 14. प्लीह वृद्धि 15. बध्द कोष्ठम् 16. अति मूत्र व्याधि 17. आल्कालिजम् 18. चेचक 19. मुख रोग 20. मूर्छा 21. मूत्रकृच्छ्रम् 22. मूत्र नाल में व्रण 23. मद वृध्दि 24.यकृत् वृध्दि 25. उन्माद 26. रक्त पित्त 27. रक्त विहार 28. उन्माद 29. उपदंश 30. उरतोयम् 31. उरस्तंबम् 32. कंठ रोग 33. कब्ज 34.

कुष्ठ 35. कामला 36. कान रोग 37. खाँसी 38. प्यास 39. वमन 40. विरेचन 41. बालारिष्ट 42. बुध्दि मांद्य 43. भस्मक 44. दंत रोग 45. दात् ।

आजकल गोमूत्र लीटर रु.120/- तथा गोबर किलो रु15/- के हिसाब से बिक रहे हैं। महाराष्ट्र के ''वेडप कासा'' नामक संस्था तीन गायों द्वारा रु 60,000/- मूल्य के सेन्द्रिय खाद उत्पन्न कर रही है। इतना ही नहीं रु 2.50/- लाख की धूप-बत्तियाँ तैयार कर संस्थाने तहलका मचा दिया है।

गोमूत्र के उपयोग से 20% उर्वरता भूमि में बढ़ती है। एक ग्राम गोमय में 300 करोड़ सूक्ष्म जीव रहते हैं। ये भूमि की उर्वरता बढ़ाते हैं।

''अग्रमग्रं चरन्तीनामोषधीनां वने वने'' अर्थात् तंदुरुस्त गाय का मूत्र औषध के रूप में काम करता है। एक रोग के लिए अनेक दवाओं का उपयोग अनावश्यक है। अनेक रोगों के लिए गो मूत्र सही औषध है।

गाय की विशिष्टता का बोध करनेवाली पुस्तकें :

1. "Cow is a wonderful" - अमेरिका की कृषि अनुसंधान परिशोधन शाला
2. गो संपदा ही ग्रामोदय - - श्री बवनलाल कोठारी, अध्यक्ष, अखिल भारत गोसंरक्षण समिति।
3. जय पंचगव्य - श्री हुकमचंद सावला, मंत्री, अखिल भारतीय गो संघटन।
4. गोमूत्रम् परमौषधम् - श्री बापूराव सरदेशाय

5. पंचगव्य चिकित्सा - हॉ.गौरीशंकर महेश्वरी

(सूचनाः पंचगव्य मानी स्वदेशी गाय का दूध, दही, घी, गोमूत्र और गोमय (गोबर)। जेर्सी गाय के नहीं।)

गाँवों में जब गो संतति घटती है तब गाँववासी गाँव छोडकर चले जाते हैं।

''एनिमल वेलफेर बोर्ड आफ इंडिया''
नं 7,2 क्रास स्ट्रीट
वीनस कोलोनी, आलवार पेट
चैनै - 18

''सेक्शन (section) 4 आफ प्रिवेंषन आफ क्रूयल्टी टू एनिमल एक्ट'' (section 4 of Prevention of Cruelty to Animal Act) पशुओं पर क्रूरता और हिन्सा को रोकने के लिए बनी है।

''आत्मवत्सर्वभूतानि यः पश्यति स पंडितः।''

जो सभी प्राणियों में आत्मभाव रखते हैं बे ही पंडित हैं।

'ते प्राप्नुवन्ति मामेव सर्वभूतहिते रताः।'

सकल प्राणियों के हित में संलग्न ही परब्रह्म को प्राप्त कर सकते हैं।

''वंदे धेनुमातरम्''

हमारे हिन्दू संप्रदायों, धर्मशास्त्रों, पुराणों, इतिहास ग्रंथों आदि में गाय का जो स्थान है वह और किसी में नहीं। माँ अपने बच्चे को कितनी जागरूकता से सम्भालकर रखती है, सुरक्षा पहूँचाती है उसी प्रकार की

सुरक्षा गाय से हमें मिलती है। इसी लिए गाय को गोमाता कहा गया है। हर प्राणी माता-पितरों की सेवा कर जिस प्रकार ऋण चकाती हैं उसी प्रकार समस्त मानव कोटि की इच्छाएँ पूर्ण कर आयु और आरोग्यों को प्रदान करनेवाली गो माता की रक्षा हमारा कर्तव्य है।

गाय भारतीय धार्मिक चिंतन में ही नहीं आर्थिक व्यवस्था के विकास में भी अपना योगदान दे रही है। गोमाता भारत भूमि पर संपत्ति के रूप में मान्य हैं। भारतीय कृषि व्यवस्था का भार अपने कंघों पर लेकर चलते हैं बैल, हमारा भाई हैं।

हमारी संस्कृति अन्य देशों की संस्कृति से भिन्न है। हमारी संस्कृति दैविक आध्यात्मिक है तो विदेशी संस्कृति वस्तुपरक और भौतिक है। ''गो ब्राह्मणेभ्यः शुभमस्तु नित्यं सर्वे जनास्सुखिनो भवन्तु''। यही भारतीय भावना है। सब का हित और शुभ हम चाहते हैं। इसी करण हम गाय की आराधना करते हैं। श्रीकृष्ण गायों के बीच रहना पसंद करते हैं और शिव का वाहन नंदी है। पशु संपत्ति हमारी मुख्य संपत्ति है। गाय और साँड उस संतति के आधार हैं।

30. पंचगव्यों से तैयार किये गये औषध : उनके गुण धर्म

1. गाय का दूध (गोक्षीर)

अन्य पशुओं के दूध से गाय का दूध अत्यंत श्रेष्ठ है। शरीर को पुष्टि देता है। बुध्दि, बल और अच्छा रंग मनुष्य को देता है। सभी धातुओं का पोषण करता है। शुक्र की वृध्दि करता है। स्तन्य वृध्दि करता है। शरीर की कोमलता और मृदुता बढाने में सहायक है। रक्त पित्त का

निवारण करता है। निम्न लिखित रोगों के शमन के लिए गाय का दूध सहयोगी है।

1. विविध प्रकार की मानसिक ऋग्मताएँ। (Various mental disorders, schichophrenia, insanity)
2. अपस्मार (Epilepsy)
3. विषाद (depression)
4. जीर्ण ज्वर (chronic fever)
5. वात रक्त (gout)
6. कब्ज (constipation)
7. अर्शस, मूलव्याधि (piles)
8. रक्त क्षीणता (anaemia)
9. संग्रहणी (sprue)
10. उदर रोग (Liver, Spleen, enlargement ascitics etc.)
11. उदावर्त (gases)
12. रक्त पित्त (नाक, मुँह, अधोमार्ग से रक्त स्राव)
13. स्त्री रोग (abortion, uterine disorders)
14. अस्थि भग्नता (Bone fractures)
15. क्षय (tuberculosis)

माता के दूध को छोडकर सभी जानवरों के दूध को उबालकर पीना चाहिए। बच्चे, बूढे और रोग ग्रस्तों को, कृशितों को गाय का दूध श्रेष्ठ होता है।

पेटा और कुछ अन्य वस्तुओं से गाय के दूध को मिलाकर एक पध्दति से तयार किया गया औषध ही 'कूष्मांडलेह्य' है।

निम्न लिखित व्याधियों के लिए इसका उपयोग करना है -

1. आम्ल पित्त (खट्टे डकार, छाती में जलन - hyper acidity)
2. दाह (burning sensation)
3. भ्रम (चक्कर) (giddiness)
4. शोष (शुष्कित हो जाना)
5. धातु क्षय (रस रक्तादि धातुओं का क्षीण होना)
6. पीलिया/कामला (Jaundice)
7. परिणाम शूल (gastric ulcer)
8. पांडु रोग/ पांडुता (रक्त क्षीणता -anaemia)
9. जीर्ण ज्वर (chronic fever)
10. अन्य व्याधियों के द्वारा उत्पन्न दुर्बलता
11. शरीर की पुष्टि में कमी।
12. तृष्णा (प्यास)

(सुबह 10 ग्राम और शाम को 10 ग्राम लेना है।)

अनुपानः गाय के दूध के साथ

लेने का समयः सुबह और शाम को खाने के बाद अथवा वैद्य की सलाह के अनुसार।

निषेधः भूख ठीक नहीं लगती है तो इस दवा को (इस औषध को) नहीं लेना है। ठीक तरह से आहार नहीं ले रहे हैं तो भी इसे लेना मना है।

गो क्षीर से घरेलू वैद्य

1. शरीर की दुर्बलता : गाय का दूध लेने से शरीर की दुर्बलता शमित होती है। सुबह और शाम को 100 मि.ली. दूध को चीनी मिलाकर लेना है।

2. शरीर में गरमी : गाय का दूध और उसके सम पानी मिलाकर लेने से शरीर का दाह शमित होगा।

3. अतिसार (विरेचन) : गरम गाय के दूध में नीम्बू का रस मिलाकर लेना चाहिए। एक चौथे कप दूध में एक चमच नीम्बू का रस मिलाकर तुरंत लेना चाहिए।

4. जुकाम और खाँसी : एक कप गरम दूध में चम्मच हल्दी डालकर उबालना है। इसके बाद उसमें एक चमच गुड मिलाकर गरम-गरम पीना चाहिए।

5. गाय के कच्चे दूध से शरीर मर्दन कर लेंगे तो चर्म (चमडी) कान्तिवान रहेगा।

6. गर्भिणी स्त्रियाँ सुबह और शाम में 9 वें महीने तक गाय का दूध लेती है तो उसकी प्रसव वेदना कम होगी। साथ साथ बच्चा भी अरोग्यवान और बल युक्त होता है।

7. गाय का दूध शुक्रवर्धक कहा गाया है। हसेशा गाय का दूध लेना शरीर को बल देता है। शुक्र धातु में शुक्रकण अगर कम हो तो गाय का दूध लेना उचित है।

2. गोदधि (दही)

व्याधि निवारणः दही जठराग्नि (भूख) बढाता है। यह अभिष्यंदि है। मलमूत्र प्रवर्तक है। खाने की ओर प्रवृत्त करता है।

निम्नलिखित रोगों में गाय का दही लेना ठीक होता है :

1. अरुचि (खाने का स्वाद न मिलना)
2. प्रतिश्यायम् पीनसम् (allergic rhinitis)
3. शीत ज्वर
4. विष ज्वर (malaria)
5. अर्शस (piles)
6. रक्त विकार (blood disorders/bleeding disorders)
7. पांडुता (anemia)
8. पित्त विकार
9. बलहीनता (weakness)
10. निद्रानाश (Insomnia)

सुचना : 1. गाय के दही को बिना चीनी या नमक के लेना नहीं चाहिए 2. रात को दही नहीं लेना है। 3. घंटे की अवधि (समय) में जमी दही मधुर होकर ज्यादा आरोग्यप्रद होता है।

गाय के दही को लेने से दूर होनेवाली व्याधियाँ :

1. मेदोवृध्दि (शरीर में मेदस का बढ़ना - excessive fat obesity)
2. आमवात (rhuematism)
3. कुष्ठ (चर्म व्याधियाँ - skin diseases)
4. रक्तपित्त (Haemorrhagic disorders)
5. पित्तज बीमारियाँ

गाय का तक्र (मट्ठा)

तैयार करना :

1. एक लीटर ताजा जमा दही को लेना है। पहले उसे मथनी से मथना है। उसमें चार गुना पानी मिलना है। फिर मक्खन के निकलने तक मथना है। ऊपरी तह पर जब मक्खन उभरने लगता है तब उसमें कुछ गरम पानी डालना है। फिर मथना है। ऊपरी तह पर जब मक्खन उभरता है तब मट्ठा और मक्खन अलग अलग दिखाई देते हैं। तब मक्खन को अलग निकालना है। अब जो मट्ठा बचा है वही स्वच्छ गाय का मट्ठा है। यह बहुत ही हितकारी होता है।

सेवन करने की पध्दति

100 -250 मि.ली. मट्ठा लेकर उसमें उचित मात्रा का सैंधव नमक, जीरा चूर्ण, सौंठ का चूर्ण मिलाकर लेना है।

गाय का मट्ठा त्रिदोषशमक है। यह अत्यंत रुचिकर और भूख जगानेवाला है। उदर रोगों की शमन-प्रक्रिया में सहायक है।

निम्न लिखित व्याधियों में गाय का मट्ठा लेना अधिक उपयोगी है।

1. अतिसार
2. आमातिसार (आम्ल से जुडे विरेचन)
3. पांडुता (रक्त क्षीणता (aneamia)
4. पीलिया / कामला (Jaundice)
5. प्रमेह अथवा मधुमेह (Diabetes Mellitus)
6. संग्रहणी (Sprue)
7. विष ज्वर (Malaria)
8. मेदो वृध्दि (Obesity)
9. गर विष (कृत्रिम विष)
10. उदर रोग (यकृत्, प्लीह आदि;अरुचि, वमन, उदर में वायु भरना, मुँह में पानी उमडना आदि)
11. अर्शस (Piles)

आयुर्वेद में मट्ठे को अमृत सम माना गया है। शीतकाल में इस का उपयोग श्रेष्ठतर है। मट्ठा बनाने के लिए ताजा दही का उपयोग करना है।

भोजन के बाद एक ग्लास मट्ठा सैंधव लवण और जीरे के चूर्ण के साथ लेना अच्छा है। इससे जीर्ण क्रिया अच्छी होती है और संबन्धित रोग दूर होते हैं।

निषेध-क्षतः गर्मियों में दौर्बल्य, मूर्छा, भ्रम (सिर फिरना), रक्त स्राव (ब्लीडिंग डिज़ार्डर) के संदर्भों में औषध सेवन अच्छा नहीं होता है।

गाय का दही या मेट्ठे के सेवन से गृह-वैद्य :

1. **मुख दूषिका (पिंपुल्स) :** गाय का दही चार चम्मच और टंकण चूर्ण - (बोरिक पाउडर 500 मि.ग्रा.) दोनों को मिलाकर मुखदूषिकाओं पर लगायें तो शिघ्र ही उनका नाश होता है।

2. **जीर्ण प्रतिश्यायम् (दीर्घकाल का जुकाम) :** एक कप (100 ग्रा.) दही में 4 कालीमिर्च का चूर्ण मिलाकर हर रोज लेना है। इस प्रकार एक महीने पर्यन्त लेगें तो तीव्र जुकाम का निवारण होता है।

3. गर्भिणी स्त्रियाँ चाँदी के पात्र में जमाया दही हर दिन लेंगी तो उससे सुखप्रसव होता है। गर्भस्राव और अकाल प्रसव का निवारण होगा।

4. केवल दही को सिर के बाल में लगायें तो केशों में बढनेवाले और पनपनेवाले सभी प्रकार के जीव मर जाते हैं।

5. रोज भोजन के तुरंत बाद एक गिलास गाय का मट्ठा जीरे के चूर्ण और नमक मिलाकर लेंगें तो जीर्णकोश तंदुरुस्त रहता है। जीर्णकोश संबन्धी रोग नहीं होंगे।

6. अर्शस से पीडित लोगों को हर दिन मट्ठा लेना श्रेयस्कर होगा।

7. उदर रोगों में गाय का मट्ठा लेना अमृत सम हैं।

ग्रीष्म और वर्षा ऋतुओं में जब वात का प्रकोप होता है तब सैंधव लवण मिलाकर मट्ठा पीना चाहिए। शरत् और हेमंत ऋ तुओं में पित्त प्रकोप पर चीनी मिलाकर मट्ठा पीना चाहिए। वसंत ऋतु में कफ का प्रकोप हो सकता है। तब सोंठ, पिप्पल, काली मिर्च और यवक्षार

मिलाकर (चूर्ण के रुप में) - एक चम्मच चूर्ण एक गिलास मट्ठे में मिलाकर लेना चाहिए।

3. गोघृत (गाय का घी)

1. आमवात के अलावा बाकी सभी व्याधियों में गाय के घी से मर्दन अत्यंत उपयोगकारी होता है।

2. गाय के घी को नास बनाकर लेने से सिर से संबन्धित अनेक रोगों का निवारण होता है। इतना ही नहीं इंद्रिय शक्ति की वृध्दि भी होती है।

3. गाय के घी को पिघलाकर 2-4 बूँद नाक मे डालने पर खालित्य (बालों का गिरना), पालित्य (बाल सफेद होना) और शिरशूल (सरदर्द) का निवारण होता है। इस प्रक्रिया को 45 दिन पर्यन्त जारी रखना श्रेयस्कार है।

4. एलर्जी सहित प्रतिश्याय (जुकाम) : एलेर्जिक रैनैटिस के समय गाय के घी का सेवन अत्यंत लाभप्रद है। एक टी - स्फून घी गरम पानी में डालकर प्रति दिन दो बार लेना चाहिए।

5. अनेक नेत्र रोगों में गाय का दूध सत्फल देता है। नास के रूप में नाक और आँखों में डालने से आँखों की जलन कम होती है और नेत्र शुध्दि भी हो जाती है।

6. बलहीनता के कारण शरीर में शूल और शरीर का भारी लगना, पेशियों में बाधा, शरीर का क्रिया- शून्यत्व (बैठना, उठना, चलना आदि में कष्ट) आदि से गाय के घी से लाभ मिलता हैं। शस्त्र-चिकित्सा के बाद

की शक्ति हीनता में भी गाय के घी से अभ्यंगन स्नान बलवर्धक होता है।

7. हर दिन एक चम्मच गाय का घी लेना स्मरण शक्ति और धारणा शक्ति के लिए उपयोगी है। अच्छी नींद भी आयेगी।

8. अनेक प्रकार के फोडे और जलने से बने घाव आदि के लिए गाय के घी से लेपन शीघ्र शमन के लिए सहकारी हैं। इससे जलन भी दूर होगी।

9. हृदय संबन्धी रोगो (दिल संबधी) के लिए अन्य घी से भारतीय गो संतति का घी ही श्रेयस्कर है। स्वदेशी गाय का घी लेना कोलेस्ट्राल कम करता है।

10. जीर्णज्वर की स्थिति मे 2 चम्मच गाय का घी (10 मि.ली.) और एक कप गाय का दूध मिलाकर दो बार लेना लाभप्रद है।

11. भोजन के समय से पहले एक चम्मच गाय का दूध सैंधव लवण और नीम्बू रस के साथ लेने से भूख बढेगी और जीर्ण क्रिया सुलझेगी।

4. गोमूत्र (गाय का मूत्र)

व्याधि निवारण गुणः

आयुर्वेद में अष्ट मूत्रों का उल्लेख है : वे हैं गाय, भैंस, बकरी, भेड, ऊँठ, हाथी, घोडा और गधा।

इन सभी में गो मूत्र अत्यंत श्रेष्ट है। गो मूत्र जठराग्नि को बढाता है। पाचन क्रिया को (खाने को पचाना) बढावा मिलता है। यह चर्म रोग निवारक भी है।

निम्न लिखित व्याधियों में गोमूत्र का उपयोग बहुत हितकर होता है।

1. मूत्र-पिंडों की व्याधियाँ (renal failure etc)
2. कुष्ठ (leprosy)
3. श्वित्र (leucoderma)
4. खाँसी (cough)
5. विविध चर्म व्याधियाँ (skin diseases eczema etc)
6. अर्शस (piles)
7. पांडुता (रक्त क्षीणता - anemia)
8. कामला / पीलिया
9. मुख रोग
10. उदर रोग
11. खास, खाँसी
12. कर्णशूल
13. मूत्रवह संस्थान से सबन्धित व्याधियों के लिए गो मूत्र प्रयोग अधिक लाभकारी है।

मात्रा - 10 मि. ली.
सहपान - - सम भाग का उष्णोदक (गरम पानी)
वैद्य की सलाह के अनुसार लेना है।

(सूचनाः गो मूत्र का संचयन जिस दिन उपयोग करना है उसी दिन करना है। सेवन के लिए उसे उपयुक्त बनाना है। इस के लिए चार परत के साफ कपडे से छानना चाहिए।)

गो-मूत्र से तैयार होनेवाली दवाएँ :

कामधेनु गोमूत्र आर्क (यु.यस.पेटेण्ट संख्या 6410059 (दिनांक) (25.06.2002)

'कामधेनु गोमूत्र आर्क' निम्न लिखित व्याधियों के लिए उपयोग में है :

1. मूत्रकृच्छ्र (मूत्र विसर्जन से कष्ट अथवा मूत्र का साधारण रूप में विसर्जन न होना, रुक रुक कर विसर्जित होना।)
2. अश्मरी (मूत्राश्मरी - मानी मूत्रवह स्थान में पत्थर होना और पित्ताश्मरी - यानी पित्ताशय (gall bladder) में पत्थर होना)
3. मेदो रोग (obesity - स्थूलकाय))
4. वृक्क रोग (मूत्रपिडों से संबधित रोग)
5. चर्म व्याधियोँ (skin diseases)
6. पांडुता (रक्त क्षीणता)
7. जीर्ण कोश रोग (अग्नि मांद्य, अजीर्ण आदि)

मात्रा - 5 से 10 मि.ली. अर्क और 5 से 10 मि.ली. जल या 1 से 10 मि ली शहद मिलाकर लेना है।

अनुपान - स्वच्छ पानी या गरम पानी।
वैद्य की सलाह के अनुसार ।

गो मूत्र से गृह वैद्य :

1. अर्शस (piles) : गोमूत्र को गरम करके अर्शस के अंकुरों पर सेंकने की गरसी के गोमूत्र में अर्शसों के रहने की स्थति में बैठना है। अथवा गोमूत्र के दबाना है।

2. स्थौल्य (obesity)

3. कोलेस्ट्रालः गोमूत्र को स्वच्छ करके नित प्रति नियमानुसार लेने से कोलेस्ट्राल कम होता है। हृदय रोगों के लिए यह हितकारी है।

4. उदर क्रिमियों (Intestinal worms) के लिए 10-20 मि.ली. ''डीकेमानी' (नाडी हींग) चूर्ण से सेवन करना चाहिए।

5. केवल गोमूत्र सेवन से कब्ज रोग दूर होता है।

6. विविध चर्मरोगों के लिए गोमूत्र मर्दन लाभकारी और उपशमन कारक है।

7. विचर्चिका, पामा, कुष्ठ आदि चर्म रोगों में भी गोमूत्र का उपयोग लाभकारी होता है।

8. 20. मि.ली. गोमूत्र और यवक्षार (4 ग्राम) मिलाकर तीन महीनों पर्यंत लेते हैं तो चिरकाल की जलोदर व्याधि ठीक होगी।

9. गोमूत्र को नास के रूप में उपयोग करने से अथवा 2 - 4 बँदें नाक में डालने से अथवा गोमूत्र को शुद्ध करके दो बार पान करने से जुकाम दूर होता है।

10. चोट लगने से अगर पाँव सूज जाय तो उस सूजन पर गोमूत्र को गरम कर कपडे को उसमें तर कर सेंकने से सूजन कम होगी।

11. दान्तों को गोमूत्र से प्रक्षालित करना अच्छा है।

12. ताजा गोमूत्र को 20 मि.ली के हिसाब से हर दिन 21 दिन तक लेगें तो कामला व्याधि का निवारण होगा।

गाय के मूत्र के रसायनिक तत्त्व-उनके औषधीय अद्‌भुत आरोग्य गुण :

1. नत्रजनि (नैट्राजन) - यह रक्त विषों को दूर करता है। मूत्र विसर्जन क्रिया को। साफ-साफ संपन्न होने देता है।

2. सल्फर - आँतडियों को शक्ति और रक्त शोधक के रूप में काम करता है।

3. अमोनिया - यह शरीर धातुओं में रक्त प्रसरण को स्थिर रखता है।

4. अमोनिया गैस - फेफड़ों के मलिन पदार्थों को दूर करता है।

5. कापर - यह शरीर में बढ़नेवाले अधिक 'कोलेस्ट्राल' को दुर करता है।

6. यूरिया - मूत्र में बढनेवाली कीटाणुओं का नाश करता है।

7. ऐरन - लाल कणों की वृद्धि करता है।

8. यूरिक एसिड़ - हृदय का शोधन कर मूत्र के द्वारा विषों के विसर्जन में सहायक होता है और सूजनो को कम करता है।

9. फास्फेट - मूत्र वाहिनी में पत्थरों को पिघलाता है।

10. सोडियम् - रक्त का शोधन कर आम्लतत्त्व को दूर करता है।

11. पोटाषियम् - हानिकारक सूक्ष्म जीवों का नाश कर 'ग्यांगरीन' से रोकता है।

12. मांगनीज़ - हानिकारक सूक्ष्म जीवों का नाश कर 'ग्यांगरीन' से रोकता है।

13. कार्बोलिक एसिड़ - देह के लिए हानिकारक क्रिमियों का नाश करता है और बाह्य क्रिमियों को प्रवेश से रोकता है।

14. काल्षियम् - हड्डियों को दृढ़ बनाता हुआ रक्त शुध्दि करता है।

15. विटमिन ए,बी,सी,डी. - शरीर को हमेशा उल्लास देता है। मानसिक आन्दोलन को कम करता है। प्यास कम करता है। हड्डियाँ पोषित होती है। शरीर को शक्ति और बल प्रदान करता है।

16. अन्य मिनरल्स - रोग निरोधक शक्ति बढाते हैं।

17. एंजैम्स - जीर्ण क्रिया को ठीक रख कर रोग निवारक शक्ति को बढ़ाते है।

18. क्रियेटिनैस - यह क्रिमि संहारक है।

19. हार्मोन्स - आठ महीने के गर्भ की गाय के मूत्र में हार्मोन अधिक रहते हैं। इसका सेवन शरीर के लिए अत्यंत प्रयोजन कारी है।

20. स्वर्णक्षार - यह क्रिमि कीटक नाशक है। साथ साथ शरीर में शक्ति पहुँचाता है।

गोमूत्र द्वारा निवारित रोग :

1. भूख की संदी
2. अजीर्ण
3. विरेचन
4. हेर्निया
5. खट्टे डकार
6. एपेंडिसैटिस
7. विनाल ग्रंथियों के रोग
8. फिट्स (मूर्छा)
9. सिर में चक्कर
10. भूख का मिटना
11. व्रण
12. मूलशंका

13. प्रोस्टेट ग्रंथि के रोग
14. पत्थर
15. हड्डियों का टूटना
16. मद्यपान संबधी रोग
17. उबार (छाले)
18. मूँह की बीमारियाँ
19. अपस्मार
20. मूत्र से जलन
21. मूत्र नाल में फोडे
22. स्थूल काय
23. राक्त चाप
24. रक्त स्राव
25. रक्त दोष
26. बुध्दि मांद्यत
27. कब्ज
28. जोडों में वात
29. आंतडियों में घाव
30. पेट में विकार
31. लू का प्रहार
32. फोडे
33. विरेचन
34. रक्त हीनता
35. खरोंचना
36. पित्त - प्रकोप
37. प्लीह वृध्दि
38. अकसर मूत्र विसर्जन
39. भगेन्द्रिय
40. दांत की बीमारियाँ
41. लिंग दोष
42. निद्रा हीनता
43. नाक की बीमारियाँ
44. आँख की बीमारियाँ
45. सफेद बाल
46. जुकाम
47. कै (उल्टी)
48. वात रोग
49. सुख व्याधि
50. कंठमाला
51. कान की व्याधियाँ
52. पीलियाँ
53. खाँसी
54. पेट में दर्द
55. हृदय रोग
56. विरेचन करवाना
57. शिशु व्याधियाँ
58. टैफाइड़

59. गनेरिया
60. नसों की शक्तिहीनता
61. स्त्रियों की व्याधियाँ
62. अनेक फोडे
63. विषदोष
64. कोलरा
65. ज्वर
66. मूत्र नाल व्याधियाँ
67. अतिसार
68. प्यास
69. चर्म व्याधियाँ
70. घाँव
71. सर दर्द
72. सूजन
73. पील पाँव
74. दमा
75. स्तन्य व्याधियाँ
76. हिचकियाँ

5. गोबर (गोमय)

रोग निवारक गुण :

निम्न लिखित रोगों के लिए गोमय सेवन हितकारी है।

1. श्वास (asthma)
2. खाँसी (cough)
3. हिचकियाँ (hiccup)
4. नेत्र रोग (eye diseases)
5. वात रोग
6. मुख रोग

मात्रा - अनुपान : 4 - 6 ग्राम कम गरमी के पानी में गोमय या गोमूत्र मिलाकर उपयोग करना है। यह अनेक चर्म व्याधियों का निवारक है।

गोमय (गोबर) से गृह चिकित्सा

वैज्ञानिक पध्दतियों द्वारा तैयार की गयी दवाओं के साथ गोमय से गृह चिकित्साएँ भी अनेक प्रकार की हैं।

1. वातावरण की शुध्दि और धूप लगाने (जलाकर) के लिए गोबर का उपयोग होता है। आनादि काल से गोबर से घर पोते जाते हैं। गोमय सूर्य किरणों को ग्रहण करता है। इस से घर और घर के परिसर लीपने-पोतने से शुध्द रहता है। सूर्य रश्मि की तीव्रता से भी हमें रक्षा मिलती है।

2. नासागत रक्त पित्त (epistaxis - एपिस्टाक्सिस) को गोमय के सूँघने से उपशमन मिलता है।

3. श्वास व्याधि में गोमय स्वरस को नाक में दो बूँदें डालने से उपशमन मिलता है।

4. गोमय में विटमिन बी - 12 अधिक रहता है। इसलिए शरीर में बी-१२ के कम होने पर गोमय स्वरस सेवन से तुरंत फल प्राप्त होता है।

5. अनेक दंत रोगों से गोमय भस्म मुक्त करता है। सामान्य तौर पर गोमय भस्म (राख) से दंत-धावन अत्यंत प्रयोजनकारी है।

6. गोमय सहज प्राकृतिक पदार्थ है। आसानी से मिलता है। यह क्रिमिनिवारक है।

7. विरेचन से संबधित विविध रोगों में गोमय स्वरस सेवन अत्यंत उपयोगी है।

31. गो उत्पत्तियाँः आयुर्वेद और आर्थिक प्राधन्यताएँः

गाय की विशिष्टता :

समस्त प्राणियों में भारतीय गो संतति सर्वोत्कृष्ट मानी जाती है। आधुनिक विज्ञान शास्त्र स्पष्ट करता है कि हर पशु के मांस में कुछ हद तक पाषाण (आर्सेनिक) रहता है। गाय के मांस में भी ही यह रहता है। लेकिन गाय के दूध में वह किसी भी मात्रा में नहीं रहता। इसी कारण गाय का दूध सर्वोत्कृष्ट आहार है। इसी लिए गाय के वैशिष्ट्य में किसी प्रकार का संदेह नहीं रह जाता। गाय का दूध पीले रंग में और भैंस का दूध सफेद रहते हैं। इसी लिए गाय के दूध को सोना और भैंस के दूध को चाँदी कहते हैं। गाय का दूध उसके ककुद के द्वारा स्रवित होता है। ककुद में स्वर्ण-नाडी है। स्वभाव सिध्द रूप में गाय के दूध मे सुवर्ण का तत्त्व समया रहता है। यह मानव की अत्यंत भलाई करता है। पशओं का अच्छा बुरा होना उसके दूध के परीक्षण से ही पहचाना जा समता है।

पशुओं का भला-बुला उनकी संतानों में दिखाई देनेवाले भेद भी निर्धारित करते हैं। गाय का बछडा तीन दिन में ही कूदता फिरता है। भैंस का बछडा तीस दिन तक सुस्त पडा रहता है। गाय के दूध से स्फूर्ति मिलती है। भैंस के दूध से अलसता। 500 पशुओं के बीच गाय के बछडे को छोड दिया जाय तो भी वह अपनी माँ के पास आसानी से पहुँच जाता है। भैंस का बछडा 10-15 भैसों के बीच में भी अपनी माँ को पहचान नहीं सकता। गाय का दूध शक्ति और तेज देता है। इसका साक्षी उपर्युक्त उदाहरण ही है। गायों और गाय के बछडों को अगर एक नाम देकर उसी नाम से पुकारते हैं तो वे पुकारनेवाले के पास आ जाती हैं। भैंसो में यह ज्ञान शून्य है। गायें जहाँ कहीं भी छोड दें फिर भी अपने

स्वस्थल पर पहुँच जाती हैं। भैंसो में अपना स्थान, समय, अपनी भीड को समझने की क्षमता नहीं है।

गाय का दूध :

भारतीय गाय तीव्र धूप को सहन कर सकती है। इसी लिए गाय का दूध रोग रहित है। आरोग्यप्रद और पौष्टिक है। संकर जाति की विदेशी गायों और भैंसो में धूप को सहने की शक्ति नहीं है। जेर्सी गाय में तो यह शक्ति है ही नहीं। गाय का दूध दिल की बीमारियों के लिए श्रेष्ठ है। भैंस के दूध में रहनेवाला चरबी बढाने वाला पदार्थ शरीर के नसों में पहुँचकर क्रमशः हृदय रोग का कारक बनता है। गाय के दूध में व्याप्त हल्दी रंग का पदार्थ आँखों में ज्योति जगाता है। अगर आँख का कांटा आदि बीमारियाँ हो तो दूध में भिगोयी सफेद पट्टी को आँखों पर रखने से ठीक होती हैं। विकसित देशों में भी गायों का पोषण अधिक होता है। भैंसों का नहीं। उन दोशों में भैसें पशु प्रदर्शन शालाओं में ही दिखाई देती हैं। चरक संहिता के अनुसार जीवन शक्ति प्रदान करनेवाले पदार्थों में गाय का दूध श्रेष्ठतम है। धन्वंतरी निघंटु के अनुसार गाय के दूध में रसायन, पथ्य, बलवर्ध्दक और हृदय को हित प्रदान करनेवाले तत्त्व हैं। मेदस को संवृध्द करने और आयु को बढाने में दूध महत्वपूर्ण है। वात-पित्त-कफ को दूर करनेवाली शक्ति दूध में है। सफेद गाय का दूध वात को, काली (कपिला) गाय का दूध पित्त को और लाल गाय का दूध कफ को हरता है। कपिला गाय इस दृष्टि से अत्यंत उपयोगी है। वैसे गाय का दूध सर्वरोग निवारिणी ही नहीं, बल्कि बढ़ापे को दूर रखता है। नोपड कामा जी ने 80 वर्ष की उम्र में भी चश्मों का उपयोग नहीं किया। कारण एक ही है। वे बचपन से भारतीय गाय के दूध का सेवन करते रहे हैं।

डॉ.एन.एन. गोड़बोले के अनुसार गाय के दूध में पौष्टिक पदार्थ हैं - 87.3% पानी, 4 करबोहैड्रेट्स, 4 प्रोटीन, 4% चरबी, 0.7% खनिज पदार्थ रहते हैं। इसी लिए दूध नन्हें बच्चों को, बच्चों की माँताओं को, बडे-बूढ़ों को संपूर्ण आहार है। गाय के दूध में ए,बी,सी,डी,ई विटमिन सम रूप से रहते हैं। इस कारण ही शरीर को शान्ति प्रदान करता है। गाय का दूध सुलभ रीति से पचता है। उसमें निहित शीतल तत्त्व के कारण पित्त-वाकारों का निवारण करता है। गाय के दूध से बनी कोवा में विटमिन-ए 400% ऐ.यु. (अंताराष्ट्रीय यूनिट) रहता है। भैंस के दूध में यह नहीं रहता। दूध पेडा आदि गाय के दूध से ही बनते हैं। रूस के शास्त्रज्ञों के अनुसार अणु विकिरण का सामने करने की शक्ति गाय के दूध में है। जलोदर रोग से पीडित व्यक्ति को पानी नहीं पीना चाहिए। केवल गाय का दूध लेना अच्छा है। परिशुध्द गोमूत्र सेवन से रोग शमित होता है। गाय के दूध का पीला रंग का होना विष निवारक बनाता है। यह गुण केवल माँ के दूध में ही होता है। इसीलिए गाय माता है और माता के समान है।

गाय के दूध के औषधीय गुण

1. लगभग 400 ग्राम गाय का दूध लीजिए। उसे गरम करते हुए एक ऊँगली प्रमाण के अर्क कांड से धोलिए। तब दूध फट जाता है। फटने पर पानी और दूध का पदार्थ अलग - अलग दिखाई देते हैं। पानी पूरी तरह से भाप हो जाय तब बचे को, जो कोवा जैसा लगता है, लेकर उसमे थोडी चीनी मिलाइए। जब ठंडा हो जाता है तब उसे मलेरिया से पीडित को ज्वर का प्रकोप कुछ कम होने पर दें तो मलेरिया रोग कम होता है।

2. गाय के दूध से शरीर में चरबी नहीं बढ़ती है। हृदय संबन्धी रोगों के पीडितों के लिए इसलिए गाय का दूध श्रेयस्कर है। कार्नेल विश्वविद्यालय के प्रोफेसर शेनाल्ड गोरैरी के अनुसार गाय के दूध के प्रोटीनों द्वारा मानव शरीर में 'कान्सर' को रोका जा सकता है।

3. गाय के दूध में उसी गाय के घी को मिलाकर पीने से और गाय के दूध से बनी हलुआ खाने से कान्सर को उपशमन मिलता है और दूर भी हो सकता है।

4. तीव्रतर अजीर्ण रोग (संग्रहणी) हो तो 21 किशमिश दूध में डालकर जब अच्छी तरह दूध उसमें मिलता तब उन्हें खाने से व्याधि का निवारण होता है। गाय मे दूध में शहद मिलाकर लेने से यह व्यधि क्रमशः कम होगी।

5. किशमिश और सूखे द्राक्षा फल पांच-पांच गाय के दूध में भिगो कर खाने से और उस दूध को पीने से मलेरिया रोग कम होता है। अगर मलेरिया दीर्घ समय तक रहता है तो उक्त अनुपान के साथ 10 ग्राम सोंठ का चूर्ण भी मिला कर लें अच्छा होगा।

6. गर्भिणी महिला के गर्भ का अगर सही विकास नहीं हो रहा हो तो उससे गाय को गुड और रोटी खिलवाकर हर दिन गाय की प्रदक्षिणा करवाने से सुख प्रसव साध्य होगा। गाय की भक्ति-श्रध्दाओं से प्रदक्षिणा करना अच्छा फल देता है। उसके साथ साथ गाय के दूध में रुई के पौधे की जड़ को डालकर अच्छी तरह उबालकर उसे पीने से महिला की गर्भ स्थिति ठीक रहेगी। शक्तिशाली और सेधावी लोग संतान के लिए महिलाओं से गायों को रोज गुड और रोटी दिलवाते है। सुबह और शाम

दोनों समय गाय को इस प्रकार आहार देना नियम पूर्वक संपन्न करें तो संतान प्राप्ति होगी और सुख प्रसव भी।

गाय का घी और मक्खन

भैंस का घी जीर्णकारी नहीं है। उसका दूध उबालने पर उसमें रहनेवाले विटमिन लुप्त होते हैं। गाय का घी अच्छी तरह पच जाता है। इस के विटमिन गरम करने पर लुप्त नहीं होते। ये अधिक शक्ति भी देते हैं।

1. नई दिल्ली के अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान के डॉक्टरों के अनुसार गाय के घी में ही हृदय रोगी की भलाई करनेवाले गुण हैं। भाव-प्रकाश निघण्टु के अनुसार घी आँखों के लिए हितकारी है। जठराग्नि की वृध्दि करता है। वात-पित्त-कफों का नाशक है। यह बलवर्ध्दक, अयुर्वृध्दिकर है। यह एक शुध्द रसायन है। सुगन्ध युक्त होता है। मधुर, शीतल, सुंदर तथा अन्य घृतों से उत्तम है।

2. इसी प्रकार गाय का नवनीत भी मानव का भला करनेवाला है। यह बलवर्ध्दक, अग्निप्रदीपक तथा शरीर की छाया बढानेवाला है। वात-पित्त विकारों का शमन करता है। क्षय, मूलशंका, पक्षवात, खाँसी आदि रोगों का निवारण करता है। इनके लिए यह दिव्य औषध है। बच्चों और बूढों के लिए भी उपयोगी। किसी प्रकार से हानिकारक नहीं है। मक्खन अमृत ही है।

गाय के घी को जलाने पर निकलनेवाली चार प्रकार की वायुएँ

1. 'एसिटिलीन' एक वायु है। यह अशुध्द वायु को शुध्द कर पर्यावरण के कालुष्य को दूर करती है। गाय के घी से आहुतियों के साथ

संपन्न होनेवाले यज्ञ - यागादियों से परिसरों का वायुमंडल स्वच्छ होता है। साथ साथ वर्षागम के लिए सहायकारी भी होता है। इस वायु से 'ओजोन' के पर्तों में पडे छेद भी कुछ हद तक पूरे ढक जाते हैं।

2) रूस के वैज्ञानिकों की खोजों के अनुसार गाय के घी से आहुतियाँ देने से निर्गत होनेवाले धुएँ से, वह धुआँ जिनती दूर तक फैलती है उसनी दूर तक की, क्रिमियाँ और कीटक तथा बाक्टीरिया नाश होता है।

3) गाय के घी को चावल से मिलाकर जलायें तो उससे निकलनेवाली ''इथिलीन अक्सैड़'' वायु जीवाणु निरोधक है। इस वायु का 'आपरेषन' (शल्यचिकित्सा) के कमरों में उपयोग लाभकारक है। इतना ही नहीं प्राण रक्षक औषधों की तैयारी में भी इसका उपयोग होता है।

4) गाय के दूध के हवन से ''प्रोपलीन अक्सैड'' वायु भी निकलती है। यह कृत्रिम वर्षा कारक है।

5) गाय के घी के हवन से ''कार्बन्डयाक्सैड़'' के प्रभावों (दुर्घटनाओं के कारण) से सुरक्षा प्राप्ति भी होती है। त्रिदोषों से विमुक्ति के लिए अर्थात् वात, पित्त और कफ को अपनी सीमा में संतुलित रखने के लिए भी उपयोगी है।

6) गाय के धी को सुबह, मध्याह्न और शाम को बिस्तर पर जाने से पहले तीन बार नाक में (दो - तीन बिन्दु) डालें तो उक्त तीनों दोष पास नहीं आते। पूर्ण आरोग्य मिलता है।

गाय का दही-मट्ठा

1. भाव प्रकाश निघंण्टु के अनुसार गाय के दूध को जमाने पर विशेष प्रकार के मधुर स्वाद युक्त दही तैयार होता है। यह मधुर, उष्ण शक्ति उत्पादक, दिल के लिए (हृदय) उपयोगकारक होता है। यह पुष्टि कारक तथा वात हारक है। पेट के सभी अंगों को और भागों को यह लाभ पहूँचाता है। यह सर्वोत्तम है।

2. वही निघण्टु और बताती है कि मट्ठा पीनेवाला व्यक्ति कभी रोगग्रस्त नहीं होता। मट्ठा लेने के बाद शमित रोग पुनः उभरता नहीं। मट्ठा देवताओं और मानवों दोनों का अमृत है।

''तक्रं शक्रस्य दुर्लभम्''

तात्पर्य है कि देवताओं के राजा इन्द्र को भी मट्ठा प्रिय है। यह पाँच प्रकार का होता है।

अ) दही में बिना पानी मिलाये मलाई सहित मथने पर मिलनेवाला - ''घोलम्''।

आ) दही से मलाई को निकाल कर बिना पानी के मथने से प्राप्त - ''मथितम्''।

इ) एक चौथाई पानी मिलाकर मथने से मिला - तक्र या मट्ठा।

ई) आधा दही और आधा पानी डालकर मथने से मिलनेवाला - ''उदश्वित''।

उ) दही मंथन के बाद मक्खान निकालकर ज्यादा पानी डालकर बनाया अंश - 'छछिका' या 'चाछ'।

लाभ

1. गाय के दूध से तैयार किया गया मट्ठा पौष्टिक पानीय है। यह सब के लिए लाभकारक है। गाँवों में प्राचीन काल से मट्ठा जन-जन के उपयोग में है। गाय के दूध से बना मट्ठा ही उपयोगी है। इसके 'लाक्टिक' पदार्थ जीवाणुओं का संहारक और रोग निरोधक शक्ति से युक्त है। यह आरोग्य कर और दीर्घायु प्रदायक है।

2. मट्ठेमें शक्कर डालकर पियें तो वह जीर्ण क्रिया में सहायक होता है। नियमित रूप से लेंगे तो आँखों की दृष्टि, दान्तों की पटुता बढ़ती हैं। कामला रोग, भूख न लगना, उल्टी, वात, अर्शस, रक्तचाप, संग्रहणी, अतिसार, वायु, प्रमेह, रक्त संचार, सफेद छाले, उदर की व्यथा, तिल्ली, प्लीह, मुटापा, मूत्ररोग, प्यास, अरुचि आदि रोगों का निवारक है।

3. ज्यादा गर्मी (अधिक उष्णता), शरीर की निर्बलताएँ दूर करने और मुख पर कान्ति लाने के लिए गाय का ताजा मट्ठा लाभकारी है। मट्ठे में कपडे को तर कर शरीर पर हलके ढ़ंग से (मृदु रूप में) पोंचे तो प्रयोजनकारी सिद्ध होगा। सरदर्द दूर करने के लिए जायफल का चूर्ण थोडा सा डालकर एक गिलास मट्ठा लेना फायदेमंद होगा।

4. मूलव्याधि के लिए आधा चम्मच त्रिफला अथवा आँवला चूर्ण और थोडी मात्रा में छोटे पिप्पल का चूर्ण मट्ठे के साथ मिलाकर लेंगें तो उत्तम फल मिलेगा। विरेचनों के लिए बेर के पेड के पत्तों का चूर्ण दूध में मिलाकर लेना फायदेमंद है। रक्त विरेचनों के लिए आधा स्पून (चम्मच) आम की गुठली का चूर्ण मट्ठे के साथ मिलाकर लेना लाभकारी है।

5. पेट में अधिक दर्द हो तो मेंत के साथ मट्ठे को लेना उत्तम है। विरेचन हो तो शहद के साथ तथा संग्रहणी में सोंठ के चूर्ण के साथ ताजा मट्ठे को लेना चाहिए। उपयुक्त बार लेना भी लाभकारक है।

6. दमा से पीडित को काली मिर्च, जीरा और नमक मिलाया मट्ठा अच्छा काम करता है।

7. भूख बढाने के लिए सोंठ, माजूफल (करक्याय), काला जीरा और बिल्व फल चूर्ण मट्ठे के साथ मिलाकर लेने से लाभ मिलेगा।

8. कफ और खाँसी के लिए अजवाइन और काली नमक या अदरक का रस मिलाकर मट्ठे को थोडा गरम करके लेना लाभकारी है।

9. मट्ठे को बनाकर एक रात भर रखकर सुबह उससे केश (बालों) घोयें तो बाल के लिए और मस्तिष्क के लिए टानिक के समान काम करता है।

10. प्रति दिन (हर रोज) तीन बार मट्ठा पीने से शरीर मोटा नहीं होगा और मोटा बनना भी रुक जायेगा। मादक पदार्थों के प्रभाव को रोकने के लिए मट्ठे का लेना अत्यंत उपयोगी है।

11. गाय के दूध से बना मट्ठा ही श्रेष्ठ और श्रेयस्कर है। शीतकाल (ठंडे मौसम) में तो यह अमृत तुल्य है। भूख न लगना, वात रोग, अरुचि, रक्तनालों में अवरोध आदि केलिए मट्ठा बहुत ही लाभकारी है।

12. मट्ठा विष दोषों, उल्टियाँ, मुँह में पानी उभरना, मलेरिया, रक्त क्षीणता, चरबी का बढ़ना, मूत्र - बाधा, भगंदर (सौनस एण्ड फिस्टुला इन् यानो), प्लीह, प्रमेह, गुल्म, पेट का शूल, सूजन, प्यास और क्रिमिनिवारण में सहायक है।

13. मट्ठे में शीतलता प्रदान करने और जीर्ण होने के गुण हैं। पित्त - वात - कफ - प्यास बुझाने की क्षमता है।

मट्ठे केलिए मिट्टी का शीशे का, पत्थर का या पिंगाणी (क्ले clay) पात्र का उपयोग किया जा सकता है। मट्ठा लेने से अगर किसी भी हालत में विरेचन ज्यादा हों, सर में चक्कर आये तो लेना बन्द कर देना है। बुखार (ज्वर), उष्णता, दुर्बलता या क्षय रोग होने से चिकित्सक से पूछकर ही मट्ठा लेना है। मट्ठे के साथ घी लोना ठीक नहीं है।

मिठाइयाँ

भारत में गाय के घी से बनी मिठाइयाँ विविध प्रकार की मिलती हैं। गाय के दूध के कोवे से बनी मिठाइयों हर प्रांत में प्राप्त होती हैं। दूध को फटाने से बननेवाले छने से भी मिठाइयाँ तैयार करते हैं।

दही से श्रीखंड आदि मिठाइयाँ बनती हैं। मिठाइयों की तैयारी में भारत सम कोई और देश संसार भर में नहीं हैं। ये भारत की विविधता के सूचक हैं।

पंजाब में हुए एक अनुसंधान से स्पष्ट हुआ है कि धान की उत्पत्ति से दूध की उत्पत्ति में ही किसान को अधिक फायदा है। 1989 में डायरी से किसान को रु.4548/- की आमदनी हुई है। भैंसों की जाति के पशुओं को पालने के स्थान पर गाय की जातियों को पालना ही लाभदायक है। भैंसों से रु.100/- के खर्च पर रु.14/- का फायदा होता है तो गायों की डायरी से रु.17/- का फायदा मिलता है। (यह 1989 की बात है)। श्वेत क्रांति केलिए गायों की संतति को पालना और बढाना ही एकमात्र रास्ता है। आर्थिक दृष्टि से भी यह समुचित ही सिद्ध होगा।

1991 में उस समय के केन्द्र आहार मंत्री श्री बलराम झक्कर के अनुसार देश में 64,300 सरकारी दूध - केन्द्र थे और उनके द्वारा 79 लाख किसान परिवारों को लाभ मिला था। अगर इसे 8 गुना करने पर (यह असंभव भी नहीं) देश के सारे किसान परिवार लाभान्वित होंगे। आज देश में 44% दूध की उत्पत्ति गायों द्वारा ही हो रही है। गो जातियों और उनकी स्थिति - गतियों को और अधिक सहारा देकर बढाने पर भारत को विश्व में सब से बडा दूध - उत्पत्तिवाले देश के रूप में विकसित कर सकते हैं। आज अमेरिका प्रथम स्थान पर है।

2003 तक देश में 18.52 करोड गायें बची थीं। 1992 - 2003 के बीच गायों की संख्या में 2 करोड की कमी हो गयी। शास्त्रज्ञों के अनुसार हर व्यक्ति को हर दिन औसतन 13 आउन्स दूध मिलना चाहिए। लेकिन आज केवल एक आउन्स मिल रहा है। अमेरिका, डेन्मार्क, स्विट्जरलैंड आदि देशों में हर व्यक्ति औसतन 50 आउन्स दूध पाता है। इससे स्पष्ट है कि हमारे देश को किस गति से उन्नति पानी (करनी) है।

32. गोबर-गोमूत्र और अर्थशास्त्र

जन्म लेते ही गाय की बछडी दूध नहीं देती, न ही गाय का बछडा हल जोतता है। लेकिन सिर्फ तीन साल में बछडी गाय बनकर गर्भवती होती है और इतने ही समय में बछडा बैल होकर हल जोतता है। भार वहन करता है। इसी प्रकार कुछ समय के बाद गायें गर्भधारण नहीं करतीं और वैसे ही बैल बहुत समय तक काम नहीं करते। परन्तु बचपन से लेकर मरने तक सभी गोबर देते हैं। गोमूत्र देते हैं। पिछले पृष्ठों में इनके उपयोग की बात की जा चुकी है। अपने जीवन पर्यन्त गो जाति

मानव के उपयोग के लिए गोबर तो देती ही रहती है। असलियत में ये ही कृषि के लिए प्राणप्रद हैं।

प्राचीन काल से भारत में कृषि ही प्रधान पेशा है। इसी लिए भारत कृषि प्रधान देश है। आनेवाले युगों में भी स्थिति में कोई आमूलचूल पनिवर्तन आनेवाला नहीं है। इस में कोई संदेह नहीं। भारत की भूमि की उत्पादकता केवल हवा - पानी पर ही नहीं बल्कि गोमय - गोमूत्र पर भी अधिक आधारित है। हजारों वर्षों से इन के आधार पर प्राप्त होनेवाली खाद द्वारा भूमि की उर्वरता और उत्पादकता बढ़ रही है। आज की रसायनिक खादों के उपयोग से पहले हमारी फसलों में उन्हें हानि पहूँचानेवाली क्रिमि - कीटकादि नही थीं। इन की बढ़ती रसायनिक खादों के कारण ही है। इनसे फसलों को बचाने के लिए और नये रसायनों का प्रयोग करते जा रहे हैं। करोडों रुपयों का खर्च होता जा रहा है। एक और बात भी इस में छिपी है। बहुत सी विदेशी द्रव्य - निधि भी हमारी इस ओर खर्च होती जा रही है। यद्यपि आजतक हमारे देश में ही बहुतों की उत्पत्ति हो रही है फिर भी दोनों मार्गों पर हमारा पैसा खर्च हो रहा है। किसानों को रियायतें देनी पड रही हैं। क्या यह इस देश का दुर्भाग्य नहीं है।

आधुनिक सोच और विधानों के प्रकार अगर कृषि के क्षेत्र में दिखाई देनेवाले सब संसाधन - नये बीज, रसायनिक खादें, क्रिमि-कीटकनाशनी दवाएँ, ट्राक्टर आदि - हैं। इन्हीं को प्रगति के मुख्य कारण बताते हैं।

ट्राक्टरों की बात बैलों के संदर्भ में करेंगें। आज हमारे बीजों में प्रति-रोधात्मक शक्ति कम है। इसी कारण वे अधिक उपयोगी नहीं है। यह

बात तो स्पष्ट है। रसायनिक खादों के कारण आज होनेवाली हानि को विदेशी और स्वदेशी सभी शास्त्रज्ञ स्वीकार कर रहे हैं। ये खादें धीरे - धीरे भूमि को बंजर बना देती हैं - ऊसर क्षेत्र बनाती हैं। इस पर भी अधिक फसल के लिए हर वर्ष रसायनिक खादों का उपयोग और ज्यादा करना है। इस खाद के 30% गुण ही फलसों के लिए लाभ दायक हैं। बानी 70% भूमि की परतों में ठहर कर उसे ऊसर क्षेत्र बानती हैं। इन से प्राप्त होनेवाली फसलें भी अच्छी नहीं होती हैं। पोषक तत्वों से युक्त नहीं हैं। इतना ही ही नहीं भूमि में निहित अच्छी और सहायक क्रिमि कीटकों को भी नाश करती हैं। फलतः फसल को और हानि होती है।

शास्त्रज्ञों का कहना है कि आज की स्थिति में चाहे जितनी ही मात्रा में रसायनिक खादों का उपयोग क्यों न करें, उससे कोई लाभ होनेवाला नहीं है।

पश्चमी देशों के अनुसंधानों से स्पष्ट सिद्ध है कि रसायनिक खादों के उपयोग से अमेरिका और यूरोप देशों में भी भूमि बंजर हो रही है। इसकी मात्रा भी हजारों एकड़ की है। परिणामतः विषयुक्त कीटकादि की वृद्धि हो रही है। गोबर और गो मूत्र से बनी सेन्द्रिय खादों से उत्पन्न की गयी रुई और चाय - पत्ते को अधिक (दुगुना - तिगुना) पैसा देकर पाश्चात्य खरीद रहे हैं। इस सत्य को हमें देखना है।

दूध न देनेवाली गाय क्या निरुपयोगी है?

भारतीय जातियों की गायों का दूध, दही, घी, गोमय और गोमूत्र श्रेष्ठतम हैं। इन पांचों को ही 'पंचगव्य' कहते हैं। पंचगव्यों की प्रामुख्यता भारत में युगयुगों से है। भारत में हर धार्मिक विधि में पंचगव्य का

उपयोग होता है। बंजर भूमि को कृषि के लिए अनुकूल बनाने की प्रक्रिया में गोमय (गोबर) का महत्वपूर्ण स्थान है। घास भी न उगनेवाली सफेद बंजर भूमि में गोबर को पानी में मिलाकर छिडने से वह उपयोगी बनती है। इस में फसलें हो सकती हैं। आवश्यकता के अनुसार गोबर गैस यंत्रों का उपयोग भी कर सकते हैं। गोबर गैस को खाना पकाने के लिए और बिजली की उत्पत्ति के लिए उपयोग में ला सकते हैं।

दिल्ली प्रान्त में गो सदनों की स्थापना हुई है। इन से अधिक लाभ मिल रहे हैं। वहाँ के गोसदनों में छोटे कंकडों को गोमूत्र में रखकर किये गये प्रयोगों के कारण अनेक सत्य उद्घोषित हुए हैं। गोबर से सर्वश्रेष्ठ शक्ति युक्त सेन्द्रिय खाद तैयार होती है। गोबर से गैस निकलने के बाद बचे से बननेवाली खादों में अनेक गुण रहते हैं।

महाराष्ट्र के पुसद गाँव के स्वर्गीय श्रीनारायण देवघर पांडरी पाण्डे, अन्यनाम नापेड काका के नाम पर प्रसिद्ध 'नापेड पद्धति' से एक किलो गोबर से 20 - 30 किलो सेन्द्रिय खाद तैयार होती है। हवा को प्रसरित होने देने की पद्धति में टैंक का निर्माण हो और छली हुई मिट्टी, हरे पत्ते आदि, तरकारियों के छिल्के, गोबर आदि एक क्रम पद्धति में भरकर सेन्द्रिय खाद तैयार की जा सकती है। ऐसी खाद को व्यापारी एक किलो एक रुपये के हिसाब से भी खरीदें और डेड रुपये किलो भी बेचें तो भी गाय के एक किलो गोबर से 30 से 40 रुपयें कमा सकते हैं। ऐसी स्थिति में गोसंतति आर्थिक विकासकारी नहीं हैं - यह कैसे मान्य है? बूढ़ी और पंगु जानवर भी हमें पैसे दिलानेवाले ही हैं। उनके घास आदि के खर्चे से अधिक उसके लाभ हैं।

अमेरिका के कालिफोर्निया प्रान्त के एक उत्साही अमेरिकन ने एक प्रयोग किया है। उसने पंगु (अंगलोप युक्त) पशुओं का पोषण किया। इन की संख्या 80 - 90 हजार की थी। उनके द्वारा उन्हें हर दिन 800 - 900 टन गोबर और सैकडों बैटल गोमूत्र मिलता है। उससे बिजली के उत्पादन के लिए जनेरेटर स्थापित कर लगभग 15 मेगावाट बिजली की उत्पत्ति कर सके हैं। है। यह 20 हजार परिवारों की आवश्यकताओं की पूर्ति कर रहा है। इतना ही नहीं हर दिन 180 टन गोबर और गोबर की राख प्राप्त होती है। इसका निर्माण खर्च 4 करोड 50 लाख डालर है। उन्हें प्रति वर्ष 20 लाख डालर निर्वहण खर्चा हो रहा है। परन्तु इस प्रोजेक्ट से उन्हें एक करोड 8 लाख डालर की आमदनी हो रही है। इस पर इस के स्थान पर होनेवाला डीजिल और पेट्रोल खर्च बच रहा है।

गोमूत्र के आधार पर क्रिमि संहारक दवाओं की तैयारी भी हो रही है। गोमूत्र के साथ नीम, अर्क, तुलसी, बिल्व, कानुग (एक और पेड विशेष) आदि के पत्ते 15 दिन पानी में भिगोकर रखें और बाद में एक तांबे के पात्र में उबालें तो एक विशेष प्रकार की कीटकनाशिनी दवा तैयार होती है। वह जब उबल कर आधा रह जाता है तब उसे शीशों में भर कर रखना है। एक लीटर द्रव में 100 लीटर पानी मिलाकर फसलों पर छिडकने से क्रिमि - कीटकों का नाश होता है। इस रूप में भी करोडों रुपयों की बचत होगी। गोमूत्र में 10 गुना पानी डालकर पौधों और वृक्षों पर छिडकने से भी कीटकों का नाश होता है।

गायों के वास स्थल से उनके मूत्र से सनी मिट्टी को खेत में डालने पर भी वह खाद के रूप में काम करती है। गोमूत्र सिक्त लाल मिट्टी से घर के दीवारों को पोतने से मच्छर, चिपकली आदि घर में नहीं रहेंगे।

गोमूत्र और गोबर से लीपे - पोते घरों में अणुविकिरणों का प्रभाव नहीं रहता। भोपाल विषवायु घटना के संदर्भ में यह निरूपित हुआ है। रूसी शास्त्रज्ञ श्री शिरोविच् की खोज में गाय का दूध, गोबर और मूत्रों में रोडियो - धार्मिक अणु - विकिरणों से मुक्त कराने की क्षमता निरूपित हुई है।

ताजा गोबर में 5% पानी मिलाकर गोल बनाइए और उसमें एक लीटर गोमूत्र मिलाइए। हर दिन इसे घोलते - हिलाते रहें। 10 दिन बाद इसे पौधों की खाद के रूप में उपयोग किया जा सकता है। इससे फसल को रोग से मुक्त भी किया जा सकता है। इससे फसल को बीमारियाँ भी नहीं लगती हैं। दुगुनी फलस हासिल होती है। एक लीटर के मट्ठे को एक हफ्ते तक रखकर सडने देना है। फिर उसमें 500 लीटर पानी मिलकार (1000 लीटर तक भी मिला सकते हैं) उस द्रव को फसलों के खेतों में छिडकें तो उस भूमि की उत्पादकता बढेगी। एसे खेत में क्रिमि नाशक दवाओं को डालने की जरूरत नहीं होगी। अन्य देशी विदेशी रसायनो को भी डालने की आवश्यकता नहीं है। यह मिश्रण आधी एकड जमीन के लिए का काफी है।

भारत की गो-संतति प्रमुख रूप से यांत्रिक पशुवधशालाओं के कारण घटती ही जा रही है। जो बची है उस से भी लाभ उठाया जा सकता है। गोबर से गैस की उत्पत्ति के साथ साथ बचे कूडे से 88 लाख नैट्रोजन, 88 लाख 20 हजार टन फास्फरस तथा 40 हजार टन पोटाशियम् प्राप्त कर सकते हैं। इस का मूल्य ही 83 हजार करोड से ऊपर होगा। इस से प्राप्त ग्यास का उपयोग पकाने के लिए, यंत्रों को चलाने के लिए और बिजली के उत्पादन के लिए कर सकते हैं। कर्णावती

(अहम्मदाबाद) के समीप 'ईडर' की गोशाला में गैस द्वारा किर्लोस्कर इंजन की सहायता से बिजली उत्पन्न की जा रही है। इस प्रकार के प्लांटों के निर्माण से भारत की बिजली की आवश्यकता की पूर्ति भी हो सकती है।

'एनिमल वेलफेअर बोर्ड आफ इंडिया' के अनुसार एक बूढ़ी गाय के गोबर से एक वर्ष में 4500 लीटर बयोगैस, 80 टन सेन्द्रिय खाद तथा 200 लीटर कीटकनाशिनी दवाएँ उत्पन्न हो सकती हैं। उसका मूल्य वर्ष 1989 में रु.17,885/- था तो 1998 में रु.20,000/- हो गया। इस से स्पष्ट है कि गोबर और गोमूत्र की उत्पत्तियों का मूल्य हजारों करोड का है। इस प्रकार की उत्पत्तियों की क्षमता हमारे पास है। भूमि की उर्वर शक्ति, पानी को अपने में रखने की शक्ति और उत्पादक शक्ति इस से साध्य हैं। यह प्रक्रिया उत्तम भी है।

'नेशनल कौन्सिल आफ अग्रिकल्चरल रिसर्च' तथा 'नेशनल कौन्सिल आफ अप्लैड् एकानमिक रिसर्च', नई दित्री के अध्ययनों के अनुसार उपलों को जलाने से ही 6 करोड 8 लाक टन लकडी का इंधन बचता है। इतनी लकडी 15 वर्ष आयु के 14 करोड पेडों से मिलती है। इतनी बचाव केवल उपलों के उपयोग से है।

आश्चर्य! कल्पना से परे की आमदनी! फिर भी गो संतति अगर बूढ़ी हो जाय तो उपयोग की नहीं है - यह कुछ लोगों की सोच है। आज हम यह भी माने कि 1951 वर्ष में रहनेवाली गो-संतति संख्या में अब उतनी नहीं हैं फिर भी आमदनी लोखों करोडों रुपयों की निकलती है। इस में कोई संदेह की बात नहीं है।

गोसंसति मरने के बाद भी अत्यंत उपयोग की है। उसकी खाल से चप्पल और कृषि के अन्य उपकरण बनते हैं। गाय की सींग में गोबर भरकर जमीन में गाढ़कर रखने से वह बाद में अच्छी खाद बनेगा। गो के शरीर को जमीन में गाढ़ने पर अच्छा खाद बन जाता है। वह अनेक प्रकार से उत्पादक शक्ति को बढानेवाली है। इससे स्पष्ट है कि गाय जिंदा हो या मरा हो अत्यंत उपयोगी है। उसे जबरदस्त मारने की जरूरत नहीं है।

कर्णावती, अहम्मदाबाद - गुजरात - के समीप के 'ईडर गोसदन' में भारतीय किसान संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ कुबर जी भाई जाधव के निरीक्षण में चलनेवाले अनुसंधान से प्राप्त एक प्रतिवेदन में निम्न बातें हैं।

एक गाय औसतन 10 किलो गोबर देती है। 'नाडेप पद्धति' में एक किलो से 20 - 30 किलो खाद तैयार हो सकती है। एक गाय से वर्ष में लग भग 80 टन सेन्द्रिय खाद तैयार होगी। वनों और वृक्षों की रक्षा के उद्देश्य से तो इसमें आधे का उपयोग ही होगा। आज देश में गो संतति की संख्या 19 करोड़ है। उपलों को जलाने के बाद भी बचनेवाले गोबर से 760 करोड टन सेन्द्रय खाद तैयार हो सकती है। इस का कुल मूल्य रु. 7,60,000/- करोड है।

भारत में कृषि योग्य भूमि 19 करोड हेक्टार है। इसे मानकर भी चलें तो एक हेक्टार के लिए 10 टन सेन्द्रिय खाद के हिसाब से हमें 190 करोड टन खाद चाहिए। तब भी 570 करोड टन खाद बचेगी। बाहरी देशों से रसायनिक खादों की निर्यात की आवश्यकता नहीं होगी। हमारे देश में रसायनिक खादों की उत्पत्ति की जरूरत भी नहीं होगी। कृषि क्षेत्रों

में कीडों और क्रिमि - कीटकादि का प्रकोप भी घट जायेगा। भूमि की उत्पादक शक्ति में किसी प्रकार की कमी नहीं होगी। कृषि उत्पत्तियों में किसी प्रकार का विषैलापन नहीं होगा। देश की प्रजा को तंदुरुस्ती मिलेगी। एक गाय के 80 टन सेन्द्रिय खाद मिलेगी, सोचिए!

33. गोमय, गोमूत्र और मट्ठे से औषधियाँ तथा विनियोग पदार्थों की तैयारी

दूध,दही, मक्खन, घी, मट्ठा - से तरह तरह की मिठाइयाँ, गोमय और गोमूत्र से अनेक प्रकार की सेन्द्रिय खादें, क्रिम - कीटक नाशनी दवाएँ, कृषि प्रधान भारत में लोगों को जानकारी देने मात्र से और उपयोगों के बार में जानने मात्र से काम नहीं चलता। उपयुक्त रूप में उपयोग भी करना है। मानव शरीर के लिए गोमूत्र एक दिव्य औषध है। इसी दृष्टि से गोमय का भी अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। क्योंकि वह सर्वरोग निवारिणी है। इसीलिए ''गावः सर्व फलप्रदाः'' कहा गया है। यानी समस्त सुखों को देनेवाली गाय है। गाय को 'चलती फिरती आस्पताल' कहा गया है। 'घर घर में गाय - गाँव गाँव में गोशाला - यही हमारी वैद्यशाला' का नारा हमारा लक्ष्य होना चाहिए। हमारी आकांक्षा होनी चाहिए। इस लक्ष्य तक पहूँचना है तो भारत सर्वांगीण उन्नति में एक मील के पत्थर को पार किया हुआ स्वीकारना है।

आयुवेद के अनुसार प्रकृति विरुद्ध आचरण के कारण से अप्राकृतिक और असहज आहार तथा विहारों से शरीर में रोग प्रवेश करते हैं। शरीर के त्रिदोषों को (वात, पित्त और कफ) अपने संतुलन में रखना चाहिए, अन्यथा रोगों का प्रवेश होगा। इस के लिए गोमूत्र उपयोगी है। यह

त्रिदोषों का निवारण करता है। लेकिन कुछ हद तक पित्त के प्रकोप के लिए स्थान है। इस लिए काली गाय (श्यामा या कपिला) का दूध पित्त हारक है। इस कारण कपिला गाय का दूध सर्व श्रेष्ठ माना जाता है। गायों की समस्त जातियों में भारतीय गो जातियाँ ही सर्वोत्तम मानी गयी हैं। इस पर तीसरे अध्याय में चर्चा की गयी है। सर्व रोगों का कारण मंदाग्नि (भूख न लगना) है - ''सर्वे रोगाः हि मंदाग्नौ''। गोमूत्र इस अग्नि को बुझाता है। विष का हरण करता है। गोमूत्र एक रसायन है। कुछ जीवन तत्त्व मूत्र के द्वारा बाहर निकलते हैं। गोमूत्र इन तत्त्वों को (एंजैम्स) फिर पूरा करता है। गोमूत्र में गंगा रहती है। यह जितना पुराना होता है उतनी ही शक्ति इस में बढ़ती है। कभी यह सडता नहीं। गोमूत्र में तांबा और स्वर्णक्षार रहता है। ये मनुष्य के लिए अत्यंत हितकारी हैं।

मानसिक रोगों का मुख्य कारण नैराश्य है। 'वैरस' विषाणु समूह को ही 'कान्सर' कहा जाता है। रक्त विषाणु ही 'ब्लड़ कान्सर' के रूप में माने गये हैं। यह प्रधानतः मानसिक नैराश्य का परिणाम ही है। गोमूत्र (शुध्दीकरण के बाद) सेवन से यह नैराश्य और विषाणु 'वैरस' हट जाता है। इसीलिए गोमूत्र 'कान्सर' के लिए दवा है। आयुर्वेद में विषपूरित पौधे और जडें आदि हैं। उनका शुद्धीकरण गोमूत्र से ही संभव है। माना गया है कि गोमूत्र से सब रोगों का निवारण संभव है।

गोमूत्र में अनेक रसायनिक तत्त्व हैं। नैट्रोजन, सल्फर, अमोनिया, तांबा, लोहा, यूरिक यासिड़, फास्फेट, सोडियम्, पोटाशियम्, मांगनीज, कार्बालिक यासिड़, काल्षियम्, साल्ट, विटमिन ए, बी, सी, डी, ई, एंजैम्स आदि हैं। ये रक्त को शुद्ध करते हैं तथा हड्डियों को सख्त बनाने

में, विष को हरने में, क्रिमियों को नाश करने में बहुत ही दोहदकारी हैं। ये आरोग्यप्रद, जीवन शक्ति को बढानेबाले तथा रोग निरोधक भी हैं। इसीलिए कहा गया है कि जिस घर में तुलसी और गोमाता रहती हैं उस घर पर किसी वैद्य के आने की जरूरत नहीं है।'' -

''जा घर तुलसी अरु गाय - ता घर वैद्य कबहु न जाय''

गोमूत्र से सैकडों रोगों की चिकित्सा की जा सकती है। वैद्यों का कहना है कि पेट से आरंभ होनेवाले 108 रोगों के लिए चिकित्सा 'गोमूत्र घननटी' 'गोमूत्रासव' और 'गोमूत्र अर्क' से संभव है। कब्ज में और विरेचनों में 'घनपटी' की 2 गोलियाँ पानी के साथ लेनी है। 2 या तीन बार गोलियाँ लेना अच्छा फल देता है। 2 गोलियों के स्थान पर 20 मि.ली. गोमूत्र लिया जा सकता है। गोमूत्रासव भी 20 मि.ली. या गोमूत्र अर्क 10 मि.ली. भी सम प्रभावशाली हैं। मधुमेह (डयाबिटीज़), रक्त शर्करा, शरीर में सूजन आदि में गोमूत्रासव लेना नहीं चाहिए।

गोतीर्थ में लवंग, जायफल, जापत्री को मिलाकर अर्क निकाला जाता है। उससे बचनेवाले क्षार से 'गोमूत्र घनपटी' 'गोमूत्रवटी' तैयार होते हैं। उन्हें पिघलने से रोकने के लिए उपलों की राख में अथवा तुलसी चूर्ण में मिलाकर सुखाना है। छोटे बच्चें के लिए 'बाल पालरस' और स्त्रियों के लिए 'नारी संजीवनी' गोमूत्र से तैयार की जाती हैं। पेट के विविध रोगों के लिए 'गोमूत्र हरडेचूर्ण' बहुत उपयोगकारी है। बच्चों की पेट में सूक्ष्म जीवियों को मारने केलिए 'गोतक्रासव' प्रसिद्ध है। स्वादिष्ट होने के कारण बच्चे आनंद से पीते है। नव युवकों में दिखाई देनेवाला स्वप्न दोष, शीघ्रस्खलन, धातुनाश, बलहीनता, आलसीपन, सिर दर्द,

स्मरण शक्ति आदि के लिए 'प्रमेहादि' औषध है। बहुत लाभकारी है। गोमय (गोबर), गोमूत्र, गोदुग्ध (गाय का दूध), गोदधि (गाय का दही), गोधृत (गाय का घी) से तैयार किया जानेवाला है 'पंचगव्य घृतम्'।

'पंचगव्यम्' थकान, बुद्धिमान्द्य, उन्माद, मूल व्याधि आदि रोगों के लिए उपयोगी है। दान्तों को गरम पानी या पदार्थ छुए तो शूल होता है। इसी तरह क्रिमिदंत, मसूडों में सूजन, स्वर भेद, मुँह फूलना, मुँह में बदबू, गले के हिचकिच, 'पयोरिया' आदि रोगों के लिए 'गोमय दंत मंजन्' बहुत लाभकारी है। गोमूत्र से तैयार किया गया 'कामधेनु शांपू' केश के लिए लाभ पहुँचाती है। इस के उपयोग से केश मुलायम होते हैं। फसलों को लगनेवाली क्रिमि - कीटकादियों के नाश के लिए 'गोमूत्र झल्ली नाशक स्प्रे' उपयोगी है।

गोमय से भी अनेक दवाएँ तैयार होती हैं। गोबर के रस में तिल का तेल मिलाकर तैयार किये जानेवाले तेल से आँखों को लाभ मिलता है। यह तेल पढ़ने - लिखनेवालों को भी लाभ देता है। गोमय रस और गोमूत्र से ''कामधेनु तैलम्'' तैयार होता है। यह शरीर मालिश के लिए, शरीर को सेंकने केलिए उपयोगी है। गोमय की पट्टी चर्म पर निकलनेवाले खरोच, घाव, खुजली, चकत्ता, चोटें, छाले, त्वचारोग, आदि केलिए उपयोगी है। छोटे बछडों के गोबर से ''गोपाल नास'' तैयार होता है। थकान, मस्तिष्क में क्रिमियाँ, 'हिस्टीरिया', मूर्छा, सिरदर्द, नाक की व्याधियाँ आदि इस नास से शमित होती हैं। ''गोमय साबुन'' खुजली केलिए, कीटकों के नाश के लिए तथा दुर्गन्ध निवारण के लिए अच्छा काम करता है। ''गोमय अंग राग'' भी साबुन के समान काम करता है। सिर में जुओं को सिर पर रूरती (डान्ड्रफ) आदि का भी यह नाश करता

है। पर्यावरण शुद्धि और कालुष्य निवारण केलिए विश्वदेव धूपबत्ती, गोदेव धूप अत्यंत हितकारी हैं। खुजली के निवारण के लिए भी गोमय से साबून तैयार होता है।

उदाहरण के तौर पर ऊपर कुछ का ही उल्लेख है। केवल एक 'घनमाटी' ही 108 रोगों में प्रयोगित होती है। तंदुरुस्त देशी गाय के मूत्र को ही औषधों में उपयोग करना है। बाजार में घूमनेवाली, पालि थीन बैग खानेवाली, कूडा खानेवाली गायों का मूत्र हानिहाकारक है। बाहर जगलों में, मैदानों में और गोचर भूमियों में चरनेवाली गायों का मूत्र शुद्ध होता है। गोमूत्र को सफेद 8 पर्तों के कपडे में छानकर ही उपयोग में लेना है। खाली पेट से ही गोमूत्र सेवन करना है। गोमूत्र सेवन के एक घंटे के बाद ही आहार आदि लेना है। स्त्रियों को बहिष्ठ होने के समय में गोमूत्र बहुत अच्छा है।

युवक 150 से 250 मि.ली. तक गोमूत्र ले सकते हैं। सीधे जो गोमूत्र सेवन नहीं करना चाहते हैं। वे 'घनवटी' था 'हरडे चूर्ण' अथवा 'गोमूत्र अर्क' ले सकते हैं।

हर पेट के रोग के लिए गोमूत्र सेवन अच्छा है। चरक के अनुसार गोमूत्र में लोहे का रज भिगोकर फिर छानकर दूध के साथ लेंगे तो पांडु रोग का निवारण होगा। कान के रोगों को दूर करने के लिए गोमूत्र को गरम कर शुद्ध करने के बाद कुछ बूँदें (3-4) डालना ठीक है। खुजली, खरोंच आदि चर्म रोगों के लिए गोमूत्र से मालिश करने के बाद नहाना लाभ कारक है। ''लिवर स्प्लीन'' व्याधियों में ईंट के टुकडे को गरम कर गोमूत्र में डुबोकर जब तक गरम रहता है तब तक सूजनों पर सेंकने से बहुत फायदा होगा। पीलपाँव (पैलेरिया) रोगी खाली पेट से सुबह गोमूत्र

(शोधित) का सेवन करेंगे तो लाभान्वित होंगे। सिर पर गोमूत्र का अच्छी तरह मर्दन कर सूखने के बाद धोयें तो केश मृदु और सुंदर बनेंगे। बच्चे थक कर सूख गये हों तो सुबह - शाम गोमूत्र में थोडा केसर मिलाकर एक महीने पर्यन्त पिलायेंगे तो स्वस्थ होगे। क्षय रोगी अगर गोशाला में वास करता है तो उसके लिए बहुत प्रयोजनकारी होगा। उसकी खाट को बार बार गोमूत्र से साफ करना भी प्रयोजनकारी है।

नागपूर में तैयार होनेवाली 14 दवाओं के लिए महाराष्ट्र सरकार ने अनेक परीक्षाओं के बाद उत्पत्ति परक 'लाइसेन्स' दी है। इसी प्रकार अकोला, कलकत्ता और जयपूर की कुछ दवाइयों के लिए भी मंजूरी मिली है। इनकी श्रेष्ठता के निरूपण में 'ध्रुवपत्र' दिये गये हैं।

'कान्सर' जैसे भयंकर रोगों एवं रक्तचाप के रोगों के लिए गोमूत्र सेवन से लाभ मिलेगा। इन दवाओं को ''पेटेन्सी'' भी पिली है। पंचगव्य चिकित्सा विधान में दवाओं की प्रामाणिकता को IICT, NBRI, CSIR, IIT, NEERI, NBAGR जैसी अनुसंधान संस्थाओं ने स्वीकारा है। पानीपत्, नारायण गढ़, अंबला, हरियाणा, कासरगोड़ आदि जगहों में कान्सर की चिकित्सा हो रही है। सफेद छींटों के रोग (श्वेतफुल्ली) को दूर करने के लिए सेवन और लेपन की औषधियाँ गोमूत्र से तैयार होती हैं।

पशु चिकित्सा

मानवों के लिए ही नहीं पशु रोगों के लिए भी गोमूत्र से बनी औषधियों का उपयोग होता है। उदाहरण के लिए 'माता' (Render Pest) Haemorhagic Septicamian rathraxm Black Quarter, Foot and mouth diseases, mastictics, thymiopaniytte, impaction of Ruman,

Ephermeral Fever, Dysentry, Idigestion आदि रोगों में 250 मि.ली. गोमूत्र में 50 ग्राम गुड़ मिलाकर सुबह, शाम पिलाना है। इस के साथ साथ गोमूत्र और गोमय को जलाकर राख को ऊपर छिडकने से, घाँव हों तो उनको धोने के बाद राख को छिडकने से फायदा होगा। 25 मि.ली. गोमूत्र को वैसे ही या गुड मिलाकर पिलाने से भी लाभ मिलेगा। रोगग्रस्त पशुओं को अलग और दूर रखना है। पशुओं के लगभग सभी रोगों के लिए गोमूत्र पिलाना और गोमूत्र से धोना लाभकारी ही होगा। यह दिन में दो - तीन बार कर सकते हैं।

मुंबई के डॉ. गौरी शंकर महेश्वरी ने दिल के दौरे से पीडितों की चिकित्सा गो चिकित्सा (Cow therapy) द्वारा की है। 'आपरेषन' के बिना ही अनेकों रोगियों को स्वस्थ बनाया है। देशी गायों के दूध से निष्पन्न मक्खन से घी तैयार करके प्रयोग कर देखिए। कपिला गाय (काले रंग की गाय) के दूध का मक्खन अत्यंत श्रेष्ठ है। घी सीधे ज्वाला पर नहीं, गरम पानी या धूप में पिघला कर दो बूँदें रोगी की नाक में डालना उपयोगप्रद है। यह भी रोगी को लेटाकर डालना चाहिए। थोडा घी नाभि पर भी डालकर ऊँगली से मर्दन हलके ढंग से करना है। अपने घर में गाय को पालना इस के लिए उचित है। अन्यथा पास की गोशाला में इसका इंतजाम कर लेना है। राक्तचाप (Blood Pressure) के लिए गाय की पीठ और गले पर हर दिन 15-20 मिनट हाथ से सहलाना चाहिए। इससे रक्तचाप कम होगा। मुख या सर पर कोई कठिनाई हो यशु की पूँछ को सिर पर और मुँह पर फिरायें तो बाधा दूर होगी। सुपारी भर की मात्रा में गोबर के साथ 100 ग्राम गोमूत्र को मिलाकर उसे साफ कपडे में छानकर सुबह और शाम को लेना 'कान्सर' रोगियों के लिए उपशमन कारक है। यह कुछ खाने से पहले ही करना है।

वास्तव में गोमूत्र और गोमय की उपयोगिताओं और प्रमुखताओं पर अनेक किताबें लिखी जा सकती हैं।

34. गो आधारित दवाएँ

गाय का दूध, दही, घी, मूत्र और गोबर सम रूप में मिलाने से पंचगव्य बनता है। इसका सेवन अनेक रोगों के लिए हितकारी है। प्रधानतः निम्नलिखत रोगों के लिए यह दिव्य औषध है -

1. अपस्मार (Epilepsy)
2. शोधा (Swelling)
3. कामला (Jaundice)
4. खाँसी (Cough)

इंडियन इन्स्टिट्यूट आफ केमिकल टेक्नालेजी, हैदराबाद की संस्था में और गोविज्ञान अनुसंधान केन्द्र, देवलापार, नागपूर संस्था में तैयार की गयी औषधियों का रसायनिक विश्लेषण किया गया है। उस शोध से प्राप्त गुण - धर्म इस प्रकार हैं -

1. अष्टमंगल घृतम् : पित्त, कफ और वात हर है। मधुर, आम्ल, तिक्त, कटु, कषाय, ग्रहणीहर, जीवनीयम्, बृंहणम्, रसायन, आमहरम्, प्रमेयहरम्, लेखनम् और मेद्यम् है।

2. कामधेनु दंत रक्षक चूर्ण (दंत मंजन) : पित्त, कफ और वात हर, आम्ल, तिक्त, कटु, कषाय, प्रमेहहर, लेखनीय, संधानीय, रसायन, क्रिमिहर, यकृत् रक्षक है।

3. कामधेनु हरडे चूर्ण : पित्त, वात और कफहर, मधुर, आम्ल, लवण, तिक्त, कटु, ग्रहणीहर, रसायन, जीवनीय, दीपनम्, लेखनीय, यकृत् रक्षक, शूलहर और क्रिमिहर है।

4. कामधेनु गोचात्र अर्क : त्रिदोषहर, प्रमेटहर, क्रिमिहर, शूल हर और रसायन है।

5. कामधेनु अर्क : मेदोहर अर्क, त्रिदोषहर, शूलहर, रसायन, यकृत् रक्षक और प्रमेह हर है।

6. कामधेनु घनवटी : पित्त - वातहर, रसायनम्, स्तंभनम्, रक्त शुद्धिकर, क्रिमिहर, यकृत्रक्षक और शूलहर है।

7. कूष्माण्डाव लेह्य : पित्त, वात, और कफहर प्रमेहहर, शूलहर, मेद्य, यकृत् रक्षक और क्रिमिहर है।

8. पंचगव्य घृतम् : त्रिदोषहर, क्रिमिहर, वृष्य, ग्रहनीहर, लेखनम्, रसायनम्, मेद्यम् और शूलहरम् है।

9. कामधेनु केश निखार : पित्तहर, कफ - वातहर, लेखनम्, शूलहर, यकृत्रक्षक, रक्तशुद्धिकर, शीतवीर्य और स्तंभनकारी है।

10. कामधेनु श्वित्रनाशकवटी : पित्त, कफ, वातहर, प्लीहघ्न, दीपनम्, लेखनम्, रोपणम्, रसायनम्, जीवनीयम्, क्रिमिहर तथा शुद्धिकर है।

11. कामधेनु श्वित्रनाशक लेप : पित्त, कफ, वातहर, प्लीहघ्न, दीपनम्, लेखनम्, रोपणम्, रसायनम्, जीवनीयम्, क्रिमिहर तथा शोधक है।

12. जात्यादि घृतम् : कफ, वात, पित्तहर, क्रिमिहर, शूलहर, मदोहर, लेखनम्, दीपनम्, यकृत रक्षक, कसावट को कम कानेवाला, रक्त शोधक, रोपणम् और प्रमेहहर है।

13. अर्मोहर मर्हम् : पित्त - कफ, वातहर, संधानीयम्, शूलहरम्, रोपणम्, रसायनम् और जीवनीय है।

14. गोमयादि तैलम् : नासिका और कान से संबन्धित व्याधियों के लिए गुणकारी, कफ - पित्त-वातहर, भेदनम्, लेखनम्, रसायनम् और शूलहरम् है।

15. गोमूत्र आसव : त्रिदोषहर, प्रधानतः पित्तहर, शूलहर, संधानकरम् और पृष्य है।

16. विभीतकावलेह्य : त्रिदोषहर, प्रधानतः पित्तहर, शूलहर, संधानकरम्, पृष्यम् और प्रमेहहरम् है।

17. मेदोहर अर्क : त्रिदोष हर, ज्यादा उपयोग करने पर वात वृद्धिकर, लेखनीयम्, संधानकरम्, आम हरम्, शूलहरम्, कामलाहर, और पांडुहर।

18. हिंग्वादि घृत : कफ - वात - पित्तहर, लेखनम्, रसायनम्, बृंहणम्, जीवहरम्, अमहरम्, शूलहरम्, पृष्यम्, श्वेतप्रदरघ्नम् और कृमिहरम् है।

19. कामधेनु साबुन : कफ - पित्त - वातहर, शोधनम्, रसायनम्, मोदोहरम्, भेदनम्, क्रिमिहरम् और आमहरम् है।

20. कामधेनु नलुगुपिंडि (नहाने के लिए बनाये जानेवाला एक प्रकार का चूर्ण) : अधिक उपयोग से पित्त - वात - वृद्धिकर, कफ - पित्त - वातहर, कफ शोधनम्, रसायनम् और क्रिमिहर है।

35. बीमारियों के निवारण में गोमूत्र का विनियोग : एक वैद्य का प्रतिवेदन

(डॉ. अशोक कुमार, प्रिन्सिपल इन्वेस्टिगेटर, कन्सेल्टेण्ट, लेक्चरर आचार्य तुलसी रीजिनल् कान्सर ट्रीटमेण्ट एण्ड रिसर्च इन्स्टिट्यूट, यस.पी. मेडिकल कालेज एण्ड हास्पिटल, बिकनीर, राजस्थान)

मानव संबन्धित व्याधियों की चिकित्सा दवाएँ और शस्त्र चिकित्सा द्वारा संपन्न होती है। शस्त्र - चिकित्सा तो यांत्रिक और भौतिक पद्धतियों में होती है। दवाएँ अल्लोपति, आयुर्वेद, होमियोपति और यूनानी पद्धतियों की चलती हैं। अल्लोपति में रसायनिक पदार्थों का शुद्ध रूप में उपयोग होता है। मानव शरीर में करोडों सूक्ष्म कण काम करते हैं। इन में किसी प्रकार का भी असंतुलन बीमारी का कारण बनता है। रसायनिक असंतुलन को ठीक करते हैं। लेकिन इनकी प्रवृत्ति के कारण शरीर के अन्य भागों पर प्रभाव पडता है। विकार उत्पन्न होता है। इन दवाओं के कारण दुष्प्रभाव (Side effects) संभवित होते हैं।

अनेक अल्लोपतिक दवाओं में प्रकृति सिद्ध पदार्थों का ग्रहण और उपयोग होता है। लेकिन उनके ग्रहण के बाद उन्हें कृत्रिम बनाते हैं। प्रकृति से सहज रूप में मिलनेवाली मूलिकाओं से मिलकर रहने के कारण उन रसायनों का प्रभाव नहीं होता। पर अलग करने से प्रभाव कारक होते हैं। इन में से कुछ में शरीर व्यवस्था को निरुत्साहित करने के गुण हैं। कुछ तो उत्प्रेरक गुण युक्त हैं। कुछ अन्यों में तटस्थीकरण का गुण निहित रहता है। कुछ शरीर पर किसी प्रकार का प्रभाव छोडे बिना काम करते हैं। इस प्रकार रसायनिक दवाएँ अनेकों रीतियों में काम

करती हैं। इन से शरीर पर दुष्प्रभाव डालनेवाली दवाओं वी संख्या अधिक हो सकती है। व्याधियों के आध्यात्मिक तथा भावात्मक गुणों पर इन रसायनों का कोई प्रभाव नहीं रहता। रोगी की चिकत्सा में इन पर भी ध्यान देना आवश्यक होता है।

गोमूत्र (भारतीय - संतति का) पुरातन काल से औषध के रूप में व्यवहार में है। इसे अमृत भी कहा गया है (ऋग्वेद 10-15)। सुश्रुत संहिता में इसके औषधीय गुणों का वर्णन है (सुश्रुत संहिता - 45/221)। चरक संहिता (श्लोक 100) में व्याधियों की चिकित्सा में गोमूत्र के गुणों का उल्लेख है। इसे घावों को ठीक करनेवाले विशिष्ट गुण से युक्त बताया गया है। ''शालिग्राम निघण्टु'' में मूत्रपिंडों पर, हृदय रुग्मताओं पर, आंडतियों की व्याधियों पर, कामला (Jaundice) पर, रक्त हीनता के लिए और चर्म व्याधियों के लिए विशिष्ट दवा के रूप में स्थान मिला है। क्रिमिनाशक औषधों (antibiotics) में, वीलीन ग्रंथियों से संबन्धित रोगों केलिए चिकित्सा में गोमूत्र अमूल्य है। इन सब का विवरण आयुर्वेद ग्रंथों में हैं।

रसायनिक विश्लेषण द्वारा विविध अंशों का निरूपण भी किया गया है। यह केवल भारतीय गोसंतति के द्वारा प्राप्त गोमूत्र में ही है। इसके प्रधान अंश यूरिया, यूरिक यासिड, क्रियेटिनैन, फिनाल और उसकी उत्पत्तियाँ, मांसिल पदार्थ, आरोमाटिक अमैनो आसिड, विटमिन, यांटी - आक्सिटेण्ट्स, एंजैम्स (LDH, AIL, एसिड फास्पेट, अमैलेज, यूरियेज आदि), धातु और सूक्ष्म मूलक - कात्पियम्, फास्पोरस, सुवर्ण, हार्मोन और उनकी उत्पत्तियाँ - ये सब जीवन रसायन क्रिया में काम करते हैं।

उपर्युक्त सभी रसायन तत्त्वों का व्याधियों के निर्मूलन में और चिकित्सा में अनेक प्रकार से योगदान है। गोमूत्र को सहज प्राकृतिक रूप में उपयोग करने पर इनका प्रभाव स्पष्ट दिखाई पडा है। गोमूत्र के रसायनिक प्रभाव के कारण, उसके उपयोग का प्राचीन इतिहास से पता चलता है कि यह ''अर्क'' के लिए एंटीबयोटिक के रूप में, जीव विकास कारक के रूप में, क्रिमिनाशक रूप में 'कान्सर' के लिए, पोषक तत्त्वों के गुणों के लिए, डी.यन.ए. के रक्षक रूप में गोमूत्र विशेष महत्व रखता है।

मुख्य पदार्थ (साधन वस्तु)-पद्धति

एक तंदुरुस्त गाय को लेते हैं। उसके रक्त, मूत्र, गोबर आदि की पेथोलोजिकल परीक्षाओं के आधार पर बिना किसी प्रकार की व्याधियों की है या नहीं निर्धारित करते हैं। व्याधिग्रस्त गाय को अनुसंधानिक परीक्षाओं के लिए स्वीकार नहीं करते। लोह रहित पात्र में गोमूत्र का संचय करते हैं। 8 पर्त्तों के शुभ्र कपडे में उसे छानते हैं। फिर प्रयोगशाला में भेजते हैं। गोमूत्र - सेवन से पहले और बाद में कम से कम आधे घण्टे की अवधि तक किसी प्रकार का आहार नहीं लेना चाहिए। पहले हफते में 50 मि.ली. सुबह और शाम में, फिर दूसरे हफते में 100 मि.ली. उसी प्रकार लेना है। इस प्रकार नियमित रूप से बहुत दिन पर्यन्त लेना है। आरंभ में उल्टी या डकार हो सकते हैं। इसे सहन करना है। एक हफ्ते में अरुचि कम होगी। बहुत सीमा तक अरुचि मानसिक और स्वाद के कारण हो सकती है। सही विवरण और प्रोत्साहन से रोगी में इसकी आदत पड जाती है।

सामान्य रोगों के लिए तभी के तभी संचित गोमूत्र सेवन के फल

1. दीर्घकाल से मूत्रपिंडों का काम न करना

27 रोगियों पर शोध चला है। इन में से 15 रोग - निरोधक शक्तिहीन थे 12 मधुमेह व्याधि ग्रस्त थे। ये सब हफते में तीन बार डयालिसिस पर थे। उनके रक्त में यूरिया (Blood Urea) 150 - 170 मि.ग्राम. और Creatinine (क्रियेटिनैन) 0.5 - 14.5 मि.ग्रा. थे डायालिसिस के पूर्व। तीन महीने के गोमूत्र सेवन के बाद उनको हफते में दो बार का डयालिसिस काफ़ी हो गया। 10 महीने के बाद हफते में एक बार काफ़ी हो गया। उनका 'ब्लड यूरिया' 70 - 90 मि.ग्रा., Serm Creatinine (सेर्म क्रियेरिनैन) 4.9 मि.ग्रा. पर आ गया।

9 मैक्रो - ग्लाब्युलिन संबन्धी रोगियों में (7 डयाबेटिक और 2 जो डयाबेटिक नहीं) 5 महीने के गोमूत्र सेवन से उनके मूत्र में मैक्रो ग्लाब्युलिन गायब हो गया। 7 के मूत्रपिंड नाल में पत्थर एक सें.मी. से कम परिमाण में थे। 1 से 2 महीने की अविधि के गोमूत्र सेवन से वे पत्थर छोट छोटे टुकडे होकर मूत्र के द्वारा बाहर हो गये।

2. मधुमेह (डयाबेटिक)

कुल रोगियों की संख्या 32 थी। इन में 13 इन्सुलिन पर थे। 19 गोलियाँ ले रहे थे। 4 महीने की गोमूत्र चिकित्सा के बाद वे सहज जीवन शैली में आहार लेने लगे। उनके द्वारा ली जानेवाली इन्सुलिन और दवा की गोलियों की मात्रा 50% घट गयी। और चार महीनों के बाद इसकी मात्रा और आधी हो गयी। मानी 75% घर गयी।

इन्सुलिन और गोली सेवन से 20 - 25 वर्षों से डयाबेटिक व्याधि - ग्रस्त 45 रोगियों में 21 को डयाबरिकस के बुरे लक्षण नहीं आये। (उदाहरण के लिए डयाबेटिक न्यूरोपति, रेटिनोपति, न्यूरोपति)। मयोकार्डियल इन्पारक्षन (Myocordial Infarction - हृदय की पेशियों को रक्त न मिलना) भी नहीं हुआ। बाकी 24 रोगियों में दो को नेफ्रोपति, तीन को रेटीना (आँख के पिछले भाग में) परिवर्तन, पाँच में पेशियों की दुर्बलता दिखाई पडे। दो में अल्पमात्रा में मयोकार्डिनल् इन्पारक्षन दिखाई दिया। यह ध्यान देने की बात है कि यह सब उनके द्वारा यांटीबयोटिक दवाओं को क्रम रूप से लेने और उनका ''ब्लैड षुगर लेवल्'' ठीक होने पर भी घटित हुआ है। इस प्रकार के दुष्परिणाम सामान्य रूप से मधुमेह रोगियों में दिखाई ही देते हैं। गोमूत्र सेवन ने इन सब को दूर किया।

3. हृदय रोगी

हृद् रोगियों के दिलों के वाम भाग में 85 - 95% केरोनरी धमनी में रुकावट के कारण हम से मिले। उन सब ने करोनरी बैपास सर्जरी से संबन्धित सलाह ली भी, परन्तु सर्जरी नहीं करायी। उनको गोमूत्र चिकित्सा दी गयी। 9 - 10 महीनों के बाद उनकी आंजियोग्राफ 75% से 85% तक पहुँची। मानी 5% से 15% रुकावट दूर हो गयी। इससे उनका दिल कुछ ठीक काम करने लगा और रक्त प्रसरण में कुछ प्रगति हुई।

हमारे पास आये 16 रोगी ''हैपर कोलेस्टरोलिमिया'' (Hyper Cholesterolemia) 300 मि.ग्रा. से ज्याद होने के कारण बाधित थे। उनको गोमूत्र चिकित्सा दी गयी। सब 225 मि.ग्रा. से कम की सीमा में पहुँच गये। ''ऐसेन्सियल हैपर टेन्सन'' से पीडित 24 रोगी थे (160 - 180

mm Hg सिस्टोलिक और 90 - 100 mm Hg डयास्टोलिक)। 4 - 5 महीने की गोमूत्र चिकित्सा के बाद 130 - 140 mm Hg सिस्टोलिक और 80 - 84 mm Hg डयास्टोलिक तक पहुँच गये। गोमूत्र सेवन के आधे घण्टे में ही 'सिस्टोलिक प्रेषर' का कम होना हमने देखा है।

4. कान्सर

स्टेज 4 के कान्सर से पीडित 77 रोगियों का एक ग्रूप था। ये सब रेडियोथेरपी, कीमोथेरपी के लिए तैयार नहीं थे। इनको गोमूत्र चिकित्सा दी गयी। अंगो और उम्र के Tumor grade के विकार के अनुसार रेडियो थेरपी किमोथेरपी जिन्होंने ली हैं उनसे गोमूत्र चिकित्सा लेनेवालों की जीवन परिधि 6 - 12 महीनों तक बढी है। उनको सहकार - परिचर्याएँ आवश्यक हुई हैं। आध्यात्मिक आनंद से उन्होंने प्रशान्त जीवन व्यतीत किया है।

स्टेज 2 और 3 के 221 रोगी थे। इन्होंने कीमोथेरपी (D_{12} D_{21} Protocol 3, 4 Cycle) के लिए मान लिया। उनको गोमूत्र चिकित्सा लेने की भी सलाह दी गयी। उन्होंने इसे स्वीकार किया। इन पर 'किमो थेरपी' के दुष्प्रभावों - ल्येकोपीनिया, त्रांबोसैटोपीनिया और एनीमिया - को देखा गया। ग्रेड I और ग्रेड II में स्थिर था। कंट्रोल ग्रूप III और ग्रूप IV ग्रेड के रहे। अर्थात गोमूत्र 'सैटोटाक्सिक' दवाओं के विष के प्रभाव को कम करने में सहायक रहा है।

160 रोगी रेडियो थेरपी लेनेवाले थे। उन्होंने गोमूत्र सेवन को स्वीकारा। रेडियेषन द्वारा होनेवाले दुष्प्रभावों के चर्मविकारों - प्रधानतः Mucositis, Cystilis, Proctitis - को प्रमुख रूप से ग्रेड II और ग्रेड III को

देखा गया। इसी कंट्रोल ग्रूप में वे ग्रेड III और ग्रेड IV थे। धीरे धीरे होनेवाले रेडियेषन का प्रभाव स्टडी ग्रूप में Xerostomia अन्न वाहिका में रुकावट डालनेवाले के रूप में था।

5. चर्म रोग

'सोरियासिन्' से पीडितों में 11 लोगों को गोमूत्र 6 - 7 महीने तक दिया गया। वे पूर्ण रूप से चुस्त हुआ। शरीर पर सफेद चिह्न पडनेवाली व्याधि (श्वेत पुल्ली) के 8 रोगियों को 4 महीने की गोमूत्र चिकित्सा दी गयी। वे भी पूर्ण रूप से स्वस्थ हो गये। पाँच Allergic skin disorder के रोगियों को 3 - 4 महीने की चिकित्सा से लाभ मिला है।

6. अन्य

दो हैपटैटिस B Positive रोगियों को एक वर्ष के गोमूत्र सेवन से अवलक्षणों की कम होने के साथ साथ Hbs की वृद्धि भी हुई है। 4 HIV +ve (AIDS) रोगियों में अवलक्षणों के कम होने के साथ साथ ''वैरस काउण्ट'' भी कम हो गयी है। CD-4 काउण्ट बडे हैं। 7 ''रिमाटिक आर्थरैटिस'' रोगियों को जो स्टीराइड चिकित्सा, सैटोटाक्किक Methotrexate चिकित्सा पर थे, उनको भी तीन महीने की गोमूत्र सेवन चिकित्सा दी गयी। उनके द्वारा ली जानेवाली दवाओं की मात्रा 50% घटायी गयी। 6 महीने के बाद Steroid को भी रोका गया। शूल कम हो गया। Rh Factor और Titer भी कम हो गया।

समापन

आयुर्वेद से संबन्धित चरक, सुश्रुत संहिताओं में और अनेक प्राचीन वाङ्मयों में वर्णित गोमूत्र चिकित्सा व्याधियों के निवारण के लिए

उपयुक्त है। गोमूत्र चिकित्सा कम खर्चे से ही होती है। गाँव गाँव में गोमूत्र आसानी से मिलता है। चिकित्सा की सुविधा भी आसान है। इसीलिए गाय को एक संचार औषधालय ही कहना उचित होगा।

आवश्यकता के अनुसार अल्लोपति की चिकित्सा ली जा सकती है। गोमूत्र व्याधियों के निवारण में और चिकित्सा विधान में एक प्रकार से समग्रता है। यह समग्र एवं संपूर्ण चिकित्सा विधान है। जीव कण पर Molecular and Microscopic प्रभावों पर और अनुसंधान की आवश्यकता है और क्लिनिकल अध्ययन होने हैं। तंदुरुस्ती केलिए गोमूत्र के उपयोगों पर अध्ययन को Randamized, Plaecho Control, Multi Centric, Blind Studies की दिशाओं में ले जाना आवश्यक है।

36. गोमाता कह रही हैं।

''हाँ, यह सच ही है। मैं किसी प्रकार का भेदभाव रखे बिना सभी मानवों को बुद्धि और बल, आयु और आरोग्य, ऐश्वर्य, सुख - समृद्धियाँ, यश और कीर्ति प्रदान करती हूँ। इस अवगाहन से अनुभूति प्राप्त करनेवाले सभी मुझे ''माँ'' कह कर पुकारते हैं। मैं भी उन्हें अपनी संतान के समान भावित करती हूँ। प्रेम करती हूँ। माँ की सेवा करना, रक्षा करना और उसके आँसू पोंछना क्या बच्चों का कर्तव्य नहीं? मैं तो बच्चों के लिए अपना जीवन दान कर रही हूँ। आनादि काल से मैं विश्व कल्याण के लिए समर्पिता होकर अपना कर्तव्य पालन कर रही हूँ।''

इस कारण से ही आप सब मुझे ''विश्व जननी'' कह कर संबोधित करते हैं। धर्मयुग और विज्ञान युग - - कोई भी युग हो मैं अपना कर्तव्य अनवरत निभा रही हूँ।

मेरे बच्चे चाहे मुझसे प्रेम करें या बाधा दें मैं तो उन्हें अनवरत चाहती हूँ। उनके द्वारा दिखावे का प्रेम क्यों न हो फिर भी मैं अपने बच्चों से प्रेम करती ही रहती हूँ। दूध, दही, घी के रूप में उन्हें अमृत देती ही रहती हूँ। इन के सेवन से मेरे बच्चे सर्व गुण संपन्न होते हैं। मेरा मूत्र और गोबर भी मनुष्यों के लिए लाभ पहूँचाते हैं। जाति को दवाएँ और भूदेवी को खाद देती हूँ। खाद की उर्वर शक्ति से सस्य लक्ष्मी की सहायता होती है। कीटक नियंत्रण भी होता है। आप के उदर पोषणार्थ आप के कृषि कार्य में मेरे बच्चे बैल आप लोगों को सहायता देते है। मेरी सांसों - उच्छ्वास-निश्श्वासों से आप के पर्यावरण को परिशुद्ध करती हूँ। मेरे चरण स्पर्श से घूलिकण भी पवित्र होते हैं। शान्ति संपन्न होती हैं। मेरी उत्पत्तियों से रूपायित होनेवाला 'पंचगव्य' एक अद्भुत वरदान है। सर्व शक्तिवान रसायन पदार्थ है। आप की प्राण शक्ति का कवच है।

हे मेरी संतान! मुझे और मेरे उपयोग को सही ढंग से समझनेवाले ही मेरी सेवा में लगते हैं। निमग्न होते हैं। ऐसे ही सौभाग्यशाली अमृत तुल्य आनंद का अनुभव करते हैं। ऐसे सभी केलिए मैं हमेशा कामधेनु हूँ। प्रिय गो माता हूँ।

हाँ - ऐसे लोग आप भी क्यों न हो सकते!?''

:जय गोमाता-जय भारत माता:

परिशिष्ट

भारत की प्रसिद्ध प्रयोगशालाओं में ''गोविज्ञान अनुसंधान केन्द्र'' का महत्वपूर्ण स्थान है। केन्द्र सरकार के सहयोग और संपर्क में संपन्न होनेवाले शोध - कार्यों का विस्तृत विवरण यहाँ प्रस्तुत है -

1. **National Environmental and Engineering Research Institute, Nagpur :** Effect of Kamdhenu Ark as antioxidant on chromosomal aberration. Basic analysis of Gomutra tracing of inorganic elements.
2. **Central Institute of Medicinal and Aromatic plants, Lucknow:** Study on Kamdhenu Ark for anti cancer property. Fortification of wormy compost and cow urine.
3. **National Botanical Research Institute, Lucknow :** Study on Kamdhenu Pest Repellent, Amrut Pani and Sahiwal Cow Milk.
4. **Indian Institute of Chemical Technology, Hyderabad :** Interpretation of Chromatographic fingerprints of Panchagavya medicines. Standardisation of drugs, Shelf life keeping qualities.
5. **Indian Agricultural Research Institute, New Delhi :** Study of Kemdhenu Pest repellent under integrated pest management system.
6. **National Bureau of Soil Survey, Nagpur :** Soil testing and soil transformation of Deolapar soil.

7. **Central Institute of Cotton Research, Nagpur – Coimbatore:** Effect of Kamdhenu pest repellent on different cotton varieties and growing of organic cotton.
8. **National Research Centre for Citrus, Nagpur :** Effect of Kamdhenu pest repellent on oranges, lemons, and sweet lemons.
9. **Mahatma Gandhi Institute of Rural Industrialisation, Sewagram, Wardha :** Wormy compost and standardization of gomutra.
10. **Visveshvarayya National Institute of Technology, Nagpur :** Gobar gas generator.
11. **Indian Veterinary Research Institute, Izatnagar :** Comparative study of Immunomodulation by gomutra and gomutra ark in different breeds of cows and buffaloes.
12. **Banaras Hindu University, Varanasi :** The biological standardization of dhoop.
13. **Mahatma Gandhi Institute of Medical Sciences, Sewagram, Wardha :** Study of effect of Kamdhenu panchagavya ghrit in epilepsy in rats.
14. **Indian Institute of Applied Dermatology, Kasargod, Kerala:** Effect of Shvitranasak Vati and Shvitranasak Lep on vitiligo and other skin diseases.

15. **C.V.Raman Institute of Chemical Technology, Nagpur :** Mosquito coil based on cow urine. Briquettes based on biomass.
16. **UP Pandit Dindayal Upadhyaya Pashu Chikitsa Vigyan Viswa Vidyalaya Evam Go Anusandhan Samsthan, Mathura :** Study of effect of cow urine distillate on health of rats.
17. **Government Ayurvedic College, Bellary :** Clinical trails by ark, gomutra, harde chuma.
18. **Gauhati Ayurveda College, Gauhati :** Study on gomutra ark.
19. **Assam Agricultural University, Jorhat, Assam :** Study of gomutra based pest repellent, keet niyantraks.
20. **National Diary Research Institute, Bangalore :** Molecular genetic characterization of indigenous breeds of Southern India.
21. **Indian Institute of Technology, New Delhi :** Standardisation of five panchagavya medicines.
22. **T.B. Hospital, Nagpur :** Effect of Kamdhenu panchagavya on multi drug resistant T.B. Cases.
23. **T.B. Hospital, Nagpur :** Effect of Kamdhenu panchagavya on multi drug resistant T.B. Cases.
24. **Shree Ayurveda Mahavidyalay, Nagpur :** Standardisation of gomutra.

25. **Chemistry Department, Amaravati University :** Anti microbial activity of cow urine.
26. **Mehta Science College, Nagpur and Super Speciality Hospital, Nagpur :** Consolidated study on gomutra and Kamdhenu ark with respect to published and ongoing research work.
27. **Hedgewar Hospital, Aurangabad :** Effect of Kamdhenu harde churna and Kamdhenu jatyadi ghrita on parkartika.
28. **Swami Vivekananda Hospital and Health Care Centre, Raichur :** Clinical trials on kamdhenu panchagavya medicines.
29. **Dr. Vinay Gowardhan M.S. :** Effect of jatyadi ghrit on wound healing
30. **Government Dental College and Hospital, Nagpur :** Standardisation of Kamdhenu Dant Rakshak.
31. **G.B. Pant University :** Molecular studies on apoptosis in Avion lymphocytes induced by pesticides. Assessing the effect of cow urine as a possible feed additive on production performance and immunity in white leghorn layers. Structural dynamics of apoptosis in avion lymphocytes.